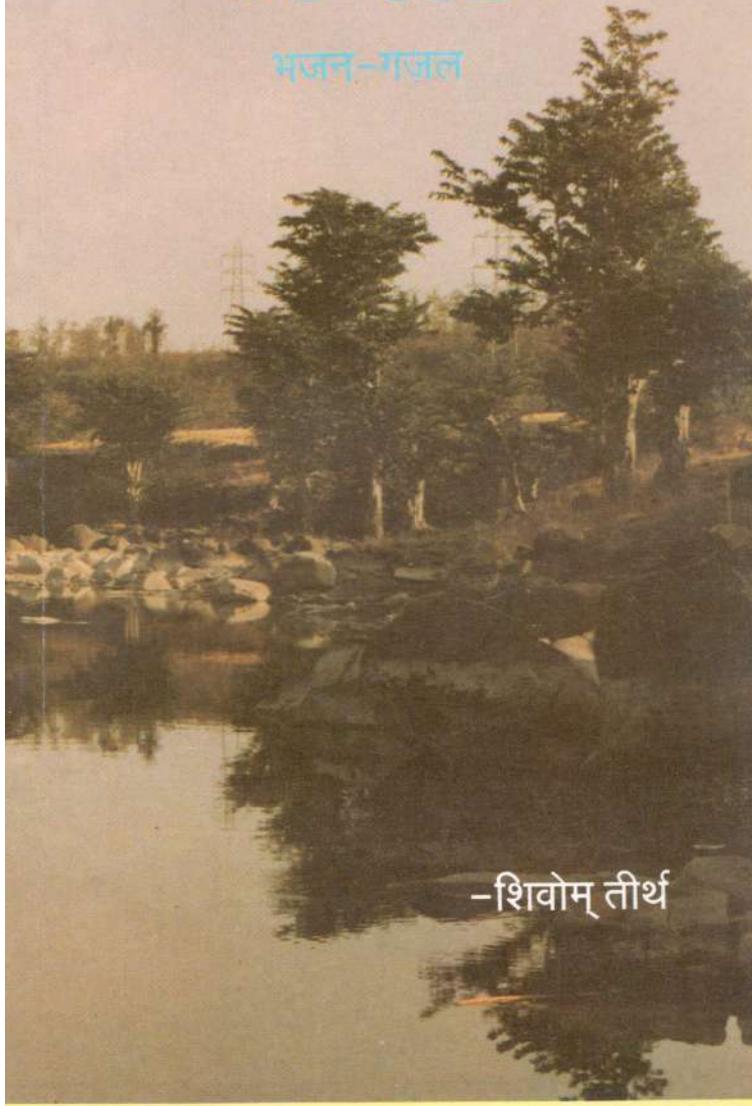


प्रवाह

भजन-गीत



-शिवोम् तीर्थ

प्रवाह

भजन – ग़ाज़ल

स्वामी शिवोम् तीर्थ

प्रकाशक

श्री नारायण कुटी संन्यास आश्रम

देवास (म.प्र.)

पुस्तक निम्न स्थानों से प्राप्त की जा सकती है

• श्री नारायण कुटी सन्यास आश्रम देवास (म. प्र.)

• योगश्रीपीठ आश्रम

शिवानंदनगर, मुनि की रेती, कृष्णकेश (उ. प्र.)

• देवात्म शक्ति सोसायटी

७४, नवाली गाँव, पोस्ट दहिसर (व्हाया - मुंबा) मुंब्रा पनवेल मार्ग,

जि. ठाणे (महाराष्ट्र)

• स्वामी शिवोम् तीर्थ आश्रम

मुकर्जी नगर, रायसेन (म. प्र.)

• स्वामी शिवोम् तीर्थ कुण्डलिनी योग सेन्टर

दुर्गा मंदिर, जिलाधीश परिसर

छिंदवाडा (म. प्र.)

• स्वामी विष्णुतीर्थ साधना सेवा सेन्टर

ओल्ड पलासिया, जोबट कोठी, इन्दौर

SWAMI SHIVOMTIRTH ASHARAM

1238 RT. 97

SPARROW BUSH N.Y 12780, U.S.A

• सर्वाधिकार सुरक्षित 1997

प्रथम संस्करण : 2100 प्रतियाँ

• मूल्य 20

• मुद्रक :

शुभम् ग्राफिक्स, इन्दौर

भूमिका

आध्यात्मिक काव्य एवं भक्तिमय संगीत का कार्य, जहां एक ओर चित्त में प्रसुप्त, प्रेम तथा ज्ञान को जाग्रत कर उन्हें और अधिक उदार बनाना है, वहाँ दूसरी ओर मन में भक्ति, वैराग्य, ज्ञान तथा पश्चाताप की नई भावनाओं को आरोपित करना है। कुछ इसी प्रकार के भावों से प्रभावित हो कर ही, यह पद अन्तर में प्रस्फुटित हुए वास्तव में तो भावुक हृदय की बाह्य - अभिव्यक्ति ही, पाठकों गायकों तथा भक्तों के हृदय को छू पाती है। जितना भाव अधिक अन्तर्मन से उदय होगा, उतना ही अधिक श्रोता के अन्तर में गहरा उत्तर जाएगा।

यहां हृदय के भाव हैं, जीवन की कड़वाहटें हैं, बीते समय के पश्चाताप हैं, मन के रोने हैं, विरह की आहें हैं, आनन्द के प्रेमाश्रु हैं, माया की खिलवाड़ें तथा प्रभु की कृपाएं हैं। यह सब इतना सहजभाव से प्रकट हुआ है कि कभी-कभी शंका होने लगती है कि यह सब मेरे द्वारा ही व्यक्त हुआ है। यह संग्रह गायकों, श्रोताओं तथा पाठकों के लिए कल्याणकारी हो, ऐसी प्रभु से प्रार्थना है।

-शिवोम् तीर्थ

विषय सूची

उद्घोथन

क्र	रचना	पृष्ठ क्र
1.	साधन ! सब योगों का राजा	१
2.	जग में भीड़ भरी है भारी	१
3.	काबू है वाणी पर नाहीं	२
4.	मेरा मन विमान की भाँति	२
5.	प्रियतम द्वारे तुमरे आई	३
6.	साधक भला अकेला जग में	३
7.	भूल गया परमेश्वर को जब	४
8.	मारग कौन सा पी घर जाए	४
9.	क्या कहूँ इस जगत को	५
10.	नील गगन में पंछी उड़ता	५
11.	गीत न गाओ, राग न गाओ	६
12.	मनवा मोह ग्रसित क्यों होया	६
13.	मन की कली तो न खिली	७
14.	अब तो मैं घबरा गया	७
15.	बाप कहां से आया तेरा	८
16.	पंछी माया देश में	८
17.	राम प्रभु मन हुआ प्रकाशित	९
18.	नंगा जग में आए प्राणी	९
19.	कृपा दृष्टि बिन होत नहीं जिनके लिए	१०
20.	जिनके लिए फिरा मैं खपता	१०
21.	यह भी कोई बात है	११
22.	मानुष जनम लिया जब तूने	११
23.	भव सागर में पड़ा है मनवा	१२
24.	घूमत फिरत जगत में हारी	१२
25.	निरुत्साही थका सा	१३
26.	तन काला और मन है – काला	१३
27.	सोचने का बैठने का	१४

क्र	रचना	पृष्ठ क्र
28	धीर धरे क्यों न मन माही	१४
29	भाई मेरे, क्यों उलझा जग	१५
30	मझधार में नैया मोरी है	१५
31	काम नहीं कद्द आवे तेरे	१६
32	तज आभमान करे जो सेवा	१६
33	तू अन्त समय पछताएगा	१७
34	प्रभु चरण हृदय में धारो	१७
35	मनवा क्यों शरमाए रह्या	१८
36	हरि सुमिरन होवे मन माही	१८
37	यह शरीर है घर बालू का	१९
38	मनवा राम सिमर पछताएगा	१९
39	अच्छा करो, किया कि बुरा	२०
40	साधु की निन्दा जो किजे	२०
41	कर्म अधर्म किए तू जितने	२१
42	खोजता ही रहा मैं तुम्हें	२१
43	घर में तेरे धन गड़ा है	२२
44	वक्त का है क्या भरोसा	२२
45	घट में भरा समुन्दर व्यापे	२३
46	राम ही देखे, राम ही बोले	२३
47	मैला नाला मिले गंग में	२४
48	पढ़िए लिखिए नाम कमाइए	२४
49	मन मैला मैं कैसे आऊं	२५
50	सुत जननी का ध्यान धरे	२५
51	सजनी प्रेम बुलावा आया	२६
52	गाफला सोए त क्यों	२६
53	सांभ संभाल मैं कर न पायी	२७
54	सूर्य उदय हो उच्च गगन में	२८
55	बहती नदिया जात निरन्तर	२८
56	कंकर पत्थर जोड़ जोड़ कर	२९
57	प्रेम का मारग कठिन है	२९
58	जग की भूल भूलैया भटका	३०
59	जग को कहत रहा तू मेरा	३०

क्र	रचना	पृष्ठ क्र
60	देहाभ्यास शिथिल न जब तब	३१
61	मनवा केशव केशव बोल	३१
62	साधु होना कठिन है भाई	३२
63	एक एक कर चले मुसाफिर	३२
64	देखत हूं मैं जग को रोवत	३३
65	राम भजन में मन न लागे	३३

गुरुदेव

66	गुरुजी ! तुम किरपा बहु कीनी	३४
67	गुरु ने हरि-धन दियो अपार	३४
68	हुआ शिवोम् जगत से न्यारा	३५
69	जाग उठो तुम, जाग उठो अब	३५
70	गुरुदेव मैं तेरा हूँ	३६
71	वह ही पक्षी रूप धरे है	३६
72	सद्गुरु किरपा मैं बलिहारी	३७
73	मेरा गुरु गुणों की खान	३७
74	सद्गुरुदेव कृपा की मो पर	३८
75	गुरु बिन कौन उतारे पार	३८
76	सद्गुरु देत मिटाय पाप	३९
77	आज शिवोम् भया आनन्दा	३९
78	हे मेरे गुरुदेव करुणा कर के	४०
79	संत का सारा जग परिवारा	४०
80	मेरा भाग जागा	४१
81	धन्य धन्य गुरुदेव हमारे	४१
82	परम पियारा सद्गुरुदेवा	४२
83	गुरु ! कृपा फिर डरना क्या रे	४२
84	कहां खोजूँ मैं राम को जाए	४३
85	गुरु- वाणी भव बंधन काटे	४३
86	गुरु मोहे घर में दर्शन दीनो	४४
87	गुरुवर यह ही विनती तुमसे	४४
88	हे मेरे गुरुदेव	४५

क्र	रचना	पृष्ठ क्र
89	बना हृदय है कैसा दर्पण	४५
90	गुरु वचन मन सहज समावे	४६
91	गुरु तृष्णा अगन बुझाई	४६
92	हे दाता है मेरे प्रभु जी	४७
93	मात-पिता तुम ही स्वामी हो	४७
94	सजना साहिव सतिगुरु पाए	४८
95	सतिगुरु आत्म सुख का दाता	४८
96	गुरु का ज्ञान गुरु आराधे	४९
97	सर्व सुखों का सदुगुरुदाता	४९
98	माया मोह रहा था भटकत	५०
99	जब मिला गुरुदेव से	५०

विरह

100	तड़पू रोऊ शोक मनाऊं	५१
101	मैं बिछुड़ गई, मैं बिछुड़ गई	५१
102	प्रियतम मुझे लगाओ अंग	५२
103	प्रभु मोहे प्रियतम रूप दिखाओ	५२
104	तन में, मन में अगन लगी है	५३
105	मैं बुलाती रह गयी	५३
106	मैं बैठी हूँ सेज बिछाए	५४
107	अंग अंग है तड़पत मोरा	५४
108	राम गए जब वन के माही	५५
109	मैं मनाए जा रही हूँ	५५
110	प्रियतम की राह निहारूं	५६
111	मन में जो आशा करी	५६
112	अवध में तड़पत भरत रहा	५७
113	राम बिन दुखिया हर कोई	५७
114	प्रभु जी ! जियड़ा कैसे लागे	५८
115	शाम बिन गोकुल भया	५८
116	पिया गए परदेश	५९
117	काय करूं ? प्रियतम नहीं	५९

क्र	रचना	पृष्ठ क्र
118	अवध में कब आएंगे राम	६०
119	किस भूल पर हो रुठे	६०

विनय

120	प्रभु जी आए संवारो काज	६१
121	पार करावन हार हमारा	६१
122	प्रभु जी मैं तो हार गयो	६२
123	मन में भक्ति प्रेम हृदय में	६२
124	माधव आया तेरी शरणी	६३
125	भूलनहार प्रभु जी मैं हूँ	६३
126	प्रभु जी, क्यों न करत	६४
127	हे प्रभु! अर्ज सुनो हमरी	६४
128	तुम छोड़ के, मुहं को मोड़ गए	६५
129	मन विकार है जावत नाहीं	६५
130	आया शरण हूँ तेरी	६६
131	जागो प्रियतम जागो सजना	६६
132	भजन न जानूँ, पूजा नाहीं	६७
133	मैं चल आई तेरे द्वार	६७
134	माधव केशव कृष्ण कन्हाई	६८
135	अब तो तेरे हवाले	६८
136	मैं आय पड़ी मन्धार	६९
137	आओ बनाओ दुनिया	६९
138	मैं हूँ गिरती जा रही	७०
139	गहरे तम में डूब रही	७०
140	सब जग छोड़ शरण तेरी	७१
141	अवगुण हूँ भरपूर प्रभुजी	७१
142	हे शंकर त्रिपुरारी	७२
143	डूबत मैं मन्धार रही हूँ	७२
144	प्रभु तुम्हें कैसे समझाऊँ	७३
145	सूना अंगना, पड़ा सिंहासन	७३
146	तेरे बिन मैं तड़प रही	७४

क्र	रचना	पृष्ठ क्र
147	हरियाली हर ओर है छाई	७५
148	गर्भ बंधन से छुड़ाया	७५
149	हे विट्ठल हूँ शरण तिहारी	७६
150	मन तन तेरा ही गोपाल	७६
151	मुझ मे नहीं बड़ाई कोई	७७
152	खटका रही किवाड़ तेरा मैं	७७
153	मोहे लागी विरहा प्रीत	७८

वंदना

154	शब्द ब्रह्म भी तू ही प्रभुजी	७९
155	प्रभु मोरे तुम अनन्त गम्भीर	७९

ग़ज़ल

156	हो गई मेरी तसल्ली हो गई	८०
157	महफिलों से लज्जतों से	८०
158	तलब न जिस दिल में हो	८१
159	रहत जगत में बजत सदा ही	८१
160	जग से हूँ घबरा गया	८२
161	जग से ऊबा जग वालों से	८२
162	है दुनियां की जानिब	८३
163	सुहाना है मौसम	८४
164	आए फर्ज तू बनाए बहाने	८५
165	भटकता भटकता तू आया	८५
166	अब तमन्ना है यही	८६
167	दर को छोड़ कहां मैं जाऊं	८६
168	फूल में तुम मुस्कुराते	८७
169	ज़िंदगी तेरे लिए हो	८८
170	तेरी याद प्रीतम बनी ही रहे	८८
171	जग तमाशा देखता	८९
172	हे प्रभु याद में दिल मेरा	८९

क्र	रचना	पृष्ठ क्र
173	आरजू कोई न मन में	९०
174	जब नज़ारा हो गया	९०
175	तेरे कूचे में भटका मैं	९१
176	इक निराशा के सिवा	९१

पश्चाताप

177	मैं चला था खोजने को	९२
178	हम आ गए जगत में	९२
179	आशा करत जगत से	९३
180	जब से छोड़ा घर है अपना	९३
181	एक दिवस भी विरथा जाता	९४
182	देखकर मन को दुखी है	९४
183	काया काहे रोए रही	९५
184	देखते ही देखते साथी	९५
185	अब रहा घबराय हूँ	९६
186	जब निरन्तर वह रहा नदिया	९६
187	जीवन निकला आहे भरते	९७
188	अब तो मेला हो गया	९७

विविध

189	प्रियतम अलख लखूँ मैं	९८
190	प्रभु ही सब कुछ करने हारा	९८
191	आदि अन्त ना पाया	९९
192	पगले समझ लेय मन	९९
193	चलो सखी जमुना	१००
194	प्रियतम मेरा प्रेम स्वरूपा	१००
195	जगत बनाया प्रभु ने सारा	१०१
196	आज देयो बधाई	१०१
197	चंचलता में दुख घनेरा	१०२

क्र	रचना	पृष्ठ क्र
198	मनवा ! चलते चलते	१०२
199	प्रभु मोहे मन अटकाए	१०३
200	मनवा छोड़ दे अपनी चाल	१०३
201	चंचल दृष्टि, चंचल वृत्ति	१०४
202	जब जीव जाता है यहां से	१०४
203	यह मैदान फैला, जहां तक	१०५
204	पहाड़ों की रंगत निराली	१०५
205	प्रभु देखत जगत तमाशा	१०६
206	जब तक जिये सदा सुख	१०६
207	सूरज उगता धूप निकलती	१०७
208	सब जग सोय रह्या माया में	१०७

कीर्तन

209	सद्गुरु देवा राम हरे	१०८
210	नाम जपो रे नाम जपो रे	१०८
211	श्री कृष्ण गोविन्द हरे	१०९
212	हम आए तेरे द्वारे	१०९
213	तेरे मिलन की आशा लेकर	११०
214	मन का मन्दिर रौशन	११०
215	हे गोविन्द हे गोपाल।	१११
216	आओ दुखिया की टेर सुनो	१११
217	राम सिमर ले राम सिमर	११२
218	भज ले भज ले सीता रामा	११२

(१)
उद्गोदन - राग जोगिया ताल-धुमाली

साधन ! सब योगों का राजा ।

अति पवित्र है उत्तम सबसे, बिना किए है काजा ॥

साधन नहीं है मौखिक केवल, अनुभव होवत अंतर ।

करती शक्ति, साधक देखे, ता ही यह महाराजा ॥

धर्म स्वाभाविक पुरुष के होते, साधक प्राप्त निरन्तर

क्षीण करे सब कर्मों को यह, अंतर माहीं समाजा ॥

सरल न इससे कोई साधन, न कुछ करना धरना ।

गुरु शक्ति है करती साधन, साधक फक्त तमाशा ॥

आग जरे न खर्च न होवे, न कोई चोर उठावे ।

सदा निरन्तर बढ़ता रहता, यम का त्रास न फांसा ॥

तीर्थ शिवोम् मिले यह साधन, गुरु कृपा जो करते ।

साधक जो आनन्द मनावे, ना पूजन नहीं बाजा ॥

(२)

उद्गोदन - राग - चारकेशी ताल-धुमाली

जग में भीड़ भरी है भारी, पर मैं रहा अकेला ।

अपना कोई नहीं है दीखत, भीड़ में फिरत अकेला ॥

मानव से मानव टकराए, शोर मचा है भारी ।

न कोई को कोई सुनता, ऐसा लगा है मेला ॥

खींच रहे सब इक दूजे को, पटखी देत, न चूके ।

मैं देखत हूं सभी तमाशा, खड़ा हूं एक अकेला ॥

जाऊं किधर किसे जा पूछूँ, न कोई सुनने हारा ।

जग तो आपाधापी लागा, मचा है ठेलम ठेला ॥

अपना आप सम्भाले मानव, उसको उचित यही है।

करनी का यह खेल है सारा, पड़ा जो बीच झमेला ॥

निकल भाग शिवओम् यहां से, सब स्वारथ में लागे ।

तू क्यों चिंता करे किसी की, आया जीव अकेला ॥

(३)

उद्गोथन - राग- पीलू ताल-केहरवा

काबू है वाणी पर नाहिं, बोले चला ही जाता है ।

क्या कहना, कब कहना किसको, यह भी समझ न पाता है ॥

अवसर क्या है, कौन है बैठा, यह भी सोचे, न देखे ।

उसको तो कहना है कुछ भी, कहता चला ही जाता है ॥

चुप रहना तो वश में नाहिं, अंदर लक्ष्य करे नाही ।

बाहर को जब मनवा होवे, अंदर न कर पाता है ॥

वाणी वश यह जीव बना है, जीव के वश वाणी नाहिं ।

यह ही है दुर्बलता मन की, मन पीछे हो जाता ॥

वाणी को जो वश में राखे, सब इन्द्रिन काबू होवे ।

नहीं तो जीव बेचारा हरदम, वाणी दुख ही पाता है ॥

तीर्थ शिवोम् समझ मन मूरख, शत्रु मित्र तू अपना है ।

संयम होवे मित्र तू अपना नाही दुख ही पाता है ॥

(४)

उद्गोथन - राग - कलावती ताल -केहरवा

मेरा मन विमान की भाँति, चंचल गगन आकाशों में ।

सुन्दर स्वप्र सुहाने देखे, गहरे मन आकाशों में ॥

उतरन नीचे नाहिं चाहे, मस्त उसी हालत में है ।

खींचता रहता पिसता रहता, विषयों के आकाशों में ॥

भटके फिरता लोक कल्पना, जगत बनाए अपना है ।

दुखी बहुत ही आप भी होता, करता मुझे आकाशों में ॥

कैसे मैं समझाऊँ मनवा, इधर-उधर तू क्यों भटके ।

थिर हो बैठ रहे अंतर में, कुछ है नहीं आकाशों में ॥

अंतर सुख आनन्द भरा है, बाहर भटकन दुखदाई ।

अंतर आतम राम विराजे, दुख ही दुख आकाशों में ॥

तीर्थ शिवोम् समझ मन मूरख, समय गंवावे क्यों अपना ।

जीवन तेरा बीता जाए, विरथा गमन आकाशों में ॥

(५)

समझावन - यग भैरवी ताल -केहरवा

साधक भला अकेला जग में, दो विवाद उठ जाता ।

तीजे से तो गाँव बसत है, नित झगड़ा गहराता ॥

साधक एक, समाधि आधी, रमे निरन्तर मन में ।

लेना देना नहीं किसी से, अपने में रह जाता ॥

कठिन अकेला रहना जग में, मनवा भागे बाहर ।

जो मन अन्तर्मुखता पाए, तभी अकेला रहता ॥

प्रभु अकेले बैठ बनाई, दृश्यमान यह सृष्टि ।

जीव अकेला होवे तो ही, लीन इसे कर पाता ॥

प्रभु अकेला कर दो मोहे, तड़पे हिरदय मोरा ।

रहूँ अकेला जग से न्यारा, तो साधन कर पाता ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभु हे मेरे, तुम भी एक बने हो ।

एक रहूँ तो एक ही देखूँ, एक में सभी समाता ॥

(६)

समझावन - यग भैरवी ताल-केहरवा

भूल गया परमेश्वर को जब, सुख तू कैसे पायेगा ।

लोभ मोह तृष्णा में लगकर जीवन नरक बनाएगा ॥

आया था तू राम भजन को, लागा जग विषयन माहिं ।

विषयन तो हैं अति ही चंचल, पाप ही पाप कमाएगा ॥

धावे भ्रमित हुआ तू फिरता, पल भर का विश्राम नहीं ।

माया काया भ्रम में उलझा, जीवन दुखी बनाएगा ॥

जनम अमोलक पाया तूने, आदर कुछ भी न कीना ।

अवसर-साधन खोय रहा तू, फिर पीछे पछताएगा ॥

राम भजन कर, राम सिमर ले, ये ही काम है करने का ।

राम भजन मन निर्मल होवे, जीवन का फल पाएगा ॥

तीर्थ शिवोम् समझ मन मूरख, तेरे हित की बात कहूँ ।

मानव देह न बारम्बारा, फिर कब अवसर आएगा ॥

(७)

उद्दोधन - शग - मिथ काफी ताल - दादरा

मारग कौन सा पी घर जाए ।

हूंडत फिरती, खोजत फिरती खबर नहीं हो पाए ॥

किसको पूछूँ जाए कर मैं, कौन उपाय करूँ मैं ।

जिस पाया वह बोलत नाहीं, भेद गुप्त रह जाए ॥

सखी सहेली वह सौभागिन, पिया सेज जिन पाई ।

मैं पापिन रह गई वैरागिन, मनवा चैन न पाए ॥

खड़ी रही मैं बीच दोराहे, हूंडत प्रीतम पिआरा ।

न पी मिला, संदेश नाहीं, जीय मोरा अकुलाए ॥

तीर्थ शिवोम् अभागिन ऐसी पी विन सेज है सूनी ।

कैसे क्योंकर मिलसी प्रीतम, हिरदय घटि घटि जाए ॥

(८)

उद्दोधन - शग-नन्द ताल-केहरवा

प्रियतम द्वारे तुमरे आई ।

जग से हुई निराश अति ही, दुखिया हो कर आई ॥

हिरदय प्रेम तनिक है नाहीं, अन्तर जगत समाया ।

पर इसने है बहुत नचाया, मूरख बनकर आई ॥

पापिन कुटिल कुनीच कुनारी पड़ी जगत के माहीं ।

झूटन चाहूं, झूट न पाती, हो निराश मैं आई ॥

हूं मैं दासी जनम जनम की, तुमको भूले बैठी ।

अब तो दर्शन दीजो प्रियतम, मन की विपदा जाई ॥

जगत बुलाए, मुझे सताए, खूब ही नाच नचाए ।

नाचत नाचत हूं थक हारी, पांव फिसलता जाई ॥

तीर्थ शिवोम् हे मेरे प्रियतम, अपने पास बुलालो ।

सेज पिया का सुख मैं भोगूं, जग से हूं घबराई ॥

(९)

उद्घोधन - राग - तिलक कामोद ताता - रूपक

क्या कहूँ इस जगत को, जो समझ न पाया मुझे ।

बेहद दुखाया दिल मेरा, और है किया रुसवा मुझे ॥

हूँ सोचता गलती कहां, किसका बुरा मैने किया ।

फिर भी ताने, गलतियां हैं, जगत दिखलाता मुझे ॥

शायद यह गलती मेरी, कि कोई गलती है नहीं ।

जैसा मन वैसा दिखे है, यह सिखाया जग मुझे ॥

शिवोम् चल तू अपने घर, यह जगत तो परदेस है ।

न चला मैं साथ इसके, बस सताया है मुझे ॥

जगत के कल्याण का, सुनता रहा शोशा भी मै ।

इसमें भी धोका ही निकला, है बताया जग मुझे ॥

अब तो कुछ कहने या करने का भी मन होता नहीं ।

क्या करू और क्या कहूँ मैं, है रुलाया जग मुझे ॥

है खड़ा शिवोम् अब तो, इक खुले मैदान में ।

आस न कोई जगत से, जग है भरमाया मुझे ॥

(१०)

आनन्द - राग - किरणी तात-केषवा

नील गगन में पंछी उड़ता, मुक्त विहार करे वह ।

डोलत फिरता कल कल करता, न डर कोई करे वह ॥

अनत असीम अनन्त अकाशा, सीमा रहित वह उड़ता ।

मन आनन्द अलौकिक छाया, किरिया अजब करे वह ॥

शोक रहित है मनवा उसका, लोभ मोह मन नाहीं ।

चिदा अकाशे गति है उसकी, आतम राम रमे वह ॥

जीवित मुक्ति जीवित साधन, जीवित रमण करे वह ।

करना धरना है कद्दू नाहीं, इक आनंद करे वह ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, मो पर भी हो किरपा ।

मुक्त गति मेरी भी इक दिन, न सोचूँ कि यह वह ॥

(११)

उद्दोधन - यग- तितक ताल - कहरवा

गीत न गाओ, राम न गाओ, अन्तर ध्यान लगाओ ।

अन्तर नाद अनेकों बाजत, ताहि में मन लाओ ॥

राग रंग बहु होत है अन्दर, होत प्रकाश अनेकों ।

किरिया होवत भान्ति भान्ति की, ताही लक्ष धरावो ॥

चन्दा सूरज अन्तर माहीं, अन्दर ही वन पर्वत ।

अन्तर पांचों तत्व विराजें, देखन जतन कराओ ॥

राम कृष्ण शंकर गुरुदेवा, अन्दर वास करत हैं ।

अन्तर देवी देव निवासा, अन्तर दर्शन पाओ ॥

अन्दर मुक्ति, अन्दर चेतन, सृष्टि सकल करत जो ।

चेतन से संजोग बनाकर, मुक्ति लाभ कमाओ ॥

तीर्थ शिवोम् हे प्रेमी साधक, अन्तर शरण प्रभु की ।

अन्तर चरण विराजें ताके, पूजा पूष्प चढ़ाओ ॥

(१२)

उद्दोधन - यग सारंग ताल - शुभाली

मनवा मोह ग्रसित क्यों होया ।

देखन सुनन शिथिल हैं होये, अब भी दूर न होया ॥

चलत फिरत भी जात नहीं है, देह में बल भी नाहीं ।

मन बुद्धि भी काम न देवें, पर तू शिथिल न होया ॥

साचा ज्ञान साची परतीती, तूने स्वाद चखा न ।

तो ही मूरख बना अजाना, जग में मोहित होया ॥

जब लौ श्वास चले अन्तर में तब लौं जीवन तेरा ।

राम भजन में लग जा मनवा, भ्रमित तू काहे होया ॥

जब हो मन में प्रेम प्रभु का, काल भी तोड़ सके न ।

साचा प्रेम साचा रघुराई, सागर पार है होया ॥

तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, नेह क्यों राम करे न ।

नेह ही तारे, नेह उबारे, सोचत काहे डुबोया ॥

(१३)

उद्गोधन - यग- मिश्र खमाज ताल- दादरा

मन की कली तो न खिली, जग में खिला तो क्या हुआ ।

राम अन्दर में मिला न, जग ही मिला तो क्या हुआ ॥

तू बना फिरता जहाँ में, अहले-दौलत-मन्द है ।

मन की दौलत न मिली, जग की मिली तो क्या हुआ ॥

खोजता फिरता तू बाहर, सुख कि जो अन्दर तेरे ।

सुख न अन्दर का मिला, जग ही दिखा तो क्या हुआ ॥

जगत में सर्वत्र है, वह राम ही फैला हुआ ।

राम अन्दर नाहीं दीखे, जग ही दीखे क्या हुआ ॥

मैं रहा दर दर भटकता, खोजने उस राम को ।

पर दिखा वह न कहीं, पुस्तक से समझा क्या हुआ ॥

तीर्थ हे शिवोम् अब तू, शरण ले उस राम की ।

सुख से जो बोला शरण मैं, मन से हुआ न, क्या हुआ ॥

(१४)

उद्गोधन - यग- मिश्रकाण्डि ताल- दादरा

अब तो मैं घबरा गया, दुनिया तेरी से हे प्रभु ।

है मेरा दिल भर गया, इन मुश्किलों से हे प्रभु ॥

स्वारथ भरे संसार में, अपना कोई न दीखता ।

अब तो मैं अकुला गया हूं, इस जगत से हे प्रभु ॥

तू है मालिक सब जगत का, पर तुझे कुछ ध्यान ना ।

मैं तो केवल जीव ही हूं, तंग जग से हे प्रभु ॥

बात भी करना कठिन है, उलटा जग है सोचता ।

बात को उलटे घुमाए, क्या करूं अब हे प्रभु ॥

तू बता अब क्या करूं, मुझको नहीं कुछ सूझता ।

कैसे सुलूँ इस जगत से, कौन रसता हे प्रभु ॥

तीर्थ यह शिवओम् है, तेरी शरण अब आ गया ।

छोड़कर सारे जगत को, आसरा तुम हे प्रभु ॥

(१५)

उद्घोधन - राग - मालकाँस ताल - केहरवा

बाप कहां से आया तेरा, माय कहां से आई ।

माया रूप बनाया सब ही, पति भगिनी भाई ॥

कर्म नहीं, ये काया नहीं, नाहीं जगत पसारा ।

जो दीखत सब माया कीना, माया रूप बनाई ॥

लोक बनाए, दृश्य दिखाए, जीव सभी प्रगटाए ।

माया लीला अजब जमाई, सृष्टि सकल बनाई ॥

जीव लिया उलझाय, माया, नाम रूप के माहीं ।

छूट सकत न तड़पत रहता, ऐसी कैद बनाई ॥

कृपा प्रभु बिन छूटत नाहीं, जीव फंसा जो माया ।

ये ही सभी प्रभु की लीला, लीला माया दिखलाई ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, माया समझ न आए ।

मैं तो शरण तुम्हारी पकड़ी, तू ही पार कराई ॥

(१६)

उद्घोधन - राग भूप ताल केहरवा

पंछी माया देश में, उड़त रहा आकाश ।

चंचल मनवा है बना, काया में परकाश ॥

काम क्रोध मद लोभ जब होवत निर्बल जाए ।

माया छोड़े देश मन, होवत शब्द प्रकाश ॥

शब्द लगा मनवा भला, शरण प्रभु की जाए ।

निर्मलता पाए तभी, तजता मायाकाश ॥

गुरु शब्द मन में लगे, जगते शब्द अपार ।

मनवा लागे शब्द में, होत विकार विनाश ॥

गुरु शब्द जा को मिले, सो बड़भागी होय ।

तम छूटे, माया हटे, अन्तर में परकाश ॥

तीर्थ शिवोम् रहे सदा, गुरु चरण के माहीं ।

गुरु कृपा ही देत है, आतम सुख तम नाश ॥

(१७)

प्रभुमाहिमा - यग - कलावती ताल-केहरवा

राम प्रभु मन हुआ प्रकाशित, मोरा मन आनन्द मनाए ।

राम सुआमी जगत सभी का, होते वही ताके मन भावे ॥

स्वामी है वह सब स्वामिन का, प्रणतपाल वह दीनन का है ।

ज्ञान ध्यान सब गौण धरे हैं, जो अनुकूल प्रभु हो जाए ॥

मुझे न सोहे तीरथ भटकन, न चाहूँ मैं भेष बनाना ।

जो प्रभु मेरा राजी मुझ पर, बेड़ा छिन में पार हो जाए ॥

शरण लेत जो राम प्रभु की, नहीं अपेक्षा उसको कोई ।

राम बचाए, राम सम्भाले, मन निर्मलता इकदम पाए ॥

प्रभु पावे प्रीतम प्यारा, वह सुख सेज समात निरन्तर ।

छोड़ जगत के बंधन सारे, राम को सन्मुख पाता जाए ॥

तीर्थ शिवोम् हे मोरे प्रभुजी, तुम निर्मलता हेतु इक हो ।

जो जन शरण तुम्हारी आवे, उसकी दुविधा सब कट जाए ॥

(१८)

उद्गोदन - यग स्वमाज ताल-केहरवा

नंगा जग में आए प्राणी, नंगा ही वह जाए जग से ।

जनम मरण दोनों ही नंगे, आश निरर्थक जीव की जग से ॥

मिथ्या जग मन आश जगावे, मन तन ढांकन लागा।

आतम राम सदा ही नंगा, लेत नहीं कुछ भी वह जग से ॥

संत जो सिमरे नाम प्रभु का, संग न माया काया ।

रहे सदा मन ही मन लागा, लेना क्या है उसको जग से ॥

साथ न कोई आवे जावे, मिथ्या जग में साथी ।

जो समझो तो बात यही है, किसको लेना साथ है जग से ॥

तीर्थ शिवोम् राम भज मनवा, जीवन यूँ ही निकला जाए।

सिमरे नाम विनाशे कर्मा, छूटे गांठ है तेरी जग से ॥

(१९)

उद्दोधन – शग-धानी तात-केहरवा

कृपा दृष्टि बिन होत नहीं कुछ, पच पच मानव जतन करे।

कृपा दृष्टि है अनंत अपारा, छिन में बंधन मुक्त करे ॥

अहंकार से बंध कर प्राणी, रागयुक्त साधन करता ।

मनवांछित फल पावे नाहीं, कितना भी वह जतन करे ॥

अहंकार दीवार बीच में, कृपामुखी मन होत नहीं ।

करे समर्पण भाव युक्त हो, मानव अनुभव प्राप्त करे ॥

भटक भटक जग देखा सारा, स्वारथ ही सब डूब रहे ।

गुरुदेव ही कृपाशील हो, भवसागर से पार करे॥

सद्गुरुदेव शरण में आया, किरपा मो पर हो जावे ।

तीर्थ शिवोम् हो अन्तर जाग्रत, छीन पाप शक्ति कर दे ॥

(२०)

उद्दोधन – शग- विलावल तात-केहरवा

जिनके लिए फिरा मैं खपता, वह ही मुझको दुख दीनों ।

सेवा की सबकी ही मैनें, ताने मुझ को ही दीनों ॥

हे प्रभु जगत बनाया कैसा, न कोई विश्वास करे ।

शंका करते इक दूजे पर, जग को यह क्या कर दीनो ॥

मैं अपमान सहे बहुतेरे, समझ न पाया मैं जग को ।

कैसी लीला है यह तेरी, शंका जग में भर दीनो ॥

एक करे दूजे की निन्दा, यही जगत का रूप बना ।

जहां बैठे तहां रगड़े देवें, गुड़ को गोबर कर दीनो ॥

देखा सहा समझ न पाया, मैं थक हार गया जग से ।

अब सब छोड़ भाग मैं जाऊं, ऐसा मनवा कर दीनो ॥

तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, तुम ही मुझे बना लीजो ।

जगत किसी को छोड़त नाहीं, मन को चंचल कर दीनो ॥

(२१)

उद्गोदन - यग - कलावती ताल-केहरवा

यह भी कोई बात है, कि तू निराश हो गया ।

आशा तुझे रही नहीं, विश्वास ही को खो दिया ॥

साधक बना अजीब तू, धीरज तेरा है चुक गया ।

अब और बनता कुछ नहीं, बैठा अकेला रो दिया ॥

छोटा नहीं कर दिल को तू, हरदम प्रभु तो साथ है ।

पर याद न तुझको यही, मारग ही अपना खो दिया ॥

उसको सभी कुछ ज्ञान है, जीवों सभी का ध्यान है ।

तू रख भरोसा राम पर, है पार जिस सबको किया ॥

शिवओम् साधन रत् रहो, इच्छा तो फल की न करो ।

वह ही तो देवनहारा है, भरपूर सबको है किया ॥

(२२)

उद्गोदन - यग-भजना ताल-केहरवा

मानुष जनम लिया जब तूने, जीवन में आ काय किया ।

राम भजन भी कीना नाहीं, सत्य कर्म भी नाय किया ॥

मन्द कर्म जो संचय कीने, मन मलीन अपना कीना ।

ताहीं राम जपा न तूने, न ही प्रभु का ध्यान किया ॥

जगत कर्म में मन तू दीना, लीन रहा विषयन माहीं ।

दुख सुख रह गया भोगत तू तो, विरथा जीवन काय किया ॥

मृत्यु द्वारे आय खड़ी है, तीर्थ शिवोम् तू चेत ज़रा ।

अगला जीवन सन्मुख तेरे, ता के हित तू काय किया ॥

(२३)

उद्घोषन - यग-यमन ताल-केरवा

भवसागर में पड़ा है मनवा, फिर भी सोए रह्या है ।

माया गहरी नींद पड़ा है, समय तो निकल रह्या है ॥

चलो मुसाफिर जाग उठो अब, दूर बहुत है जाना ।

वेला सोवन का यह नाहीं, समय गंवाय रह्या है ॥

सागर है गम्भीर अनन्ता, पार है उसको जाना ।

पर वह सोया तान के लम्बी, कुछ न समझ रह्या है ॥

तीर्थ शिवोम् है भवजल गहरा, है बेअन्त अनन्ता ।

आगे बढ़ो चलाओ चप्पू, समझ न पाए रह्या है ॥

(२४)

उद्घोषन - यग-राणेश्वी ताल-केरवा

धूमत फिरत जगत मैं हारी, क्या क्या रूप बनाए ।

उछलत कूदत खेल दिखाए, पर तुम पकड़ न आए ॥

सभी जगह मौजूद तुम्हीं हो, पर हो नज़र कहीं न आते ।

खोजूँ कहां, कहां मैं पाऊँ, रूप हो अपना गुस बनाए ॥

नज़र कहां मैं लाऊँ ऐसी, जो मैं तुमको खोज निकालूँ ।

दया तुम्हारी नज़र यह पाऊँ, नहीं तो रहत हूँ तम में खोए ॥

मैं उलझी हूँ बीच जगत के, नाम रूप ही सन्मुख मेरे ।

कैसे सन्मुख जगत हटाऊँ, दृष्टि तुमको सहज ही पाए ॥

हे प्रभु कृपा अभागिन पर हो, मैं तो कुछ भी जानूँ नाहीं ।

एक तुम्हीं मेरे परमेश्वर, नज़र तुम्हारी मुझ पर होए ॥

तीर्थ शिवोम् यह कुलटा नारी, हाथ जोड़कर अर्ज गुजारे ।

दर्शन दीजो, पार उतार, नैया सागर पार कराए ॥

(२५)

उद्घोथन - राग भैरवी ताल -केहरवा

निरुत्साही थका थका सा, क्यों दीखत मेरे भाई ।

मन में धीरज राखे नाहीं, चले चलो मेरे भाई ॥

मारग साधन कठिन बड़ा है, चलना इसमें भारी ।

मन में धीरज चलता जाए, चले चलो मेरे भाई ॥

धीरज विन साधन है जहाँ, मन निर्मल भी नाहीं ।

पकड़ शरण गुरुदेव प्रभु की, चले चलो मेरे भाई ॥

प्रभु अनन्ता हे भगवनता, करत कृपा दीनन पर ।

लाज तेरी वह राखे इक दिन, चले चलो मेरे भाई ॥

प्रभु समर्पण सेवा मन में, भक्ति योग पकड़ राखो ।

बेड़ा इक दिन पार तेरा भी, चले चलो मेरे भाई ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभुजी शरणीं, धीरज दान प्रदान करो ।

जुड़ा रहे चरणों में हरदम, चले चलो मेरे भाई ॥

(२६)

उद्घोथन - राग- जैजैवन्ती ताल-केहरवा

तन काला और मन है काला, काले कर्म कमावे ।

काली दृष्टि काली वाणी, काला दिखे दिखावे ॥

हे प्रभु मेरे मन में केवल, धुन्थ ही धुन्थ समाई ।

तुझको कैसे देखूं समझूं, अनुभव जग ही आवे ॥

मनवा तो भरमाया माया, माया नाचे गाए ।

मस्त बना माया में ऐसा, अपना आप भुलावे ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मेरे, किरपा से ही पाए ।

किरपा से ही कालख जाए, किरपा तुम्हें दिखाए ॥

(२७)

उद्दोधन - यग - दरबारी ताल - दीपचन्दी

सोचने का, बैठने का, अब समय जाता रहा ।

जो समय बिगड़ा, सो बिगड़ा, अब है दिन जाता रहा ॥

उम्र तो यूं ही गुजारी, फालतु चर्चा में ही ।

वह किया जो था न करना, जग में भरमाता रहा ॥

चल बसे सब साथ वाले, तेरी बारी आ गई ।

सोच कुछ तू मन में अपने पीछे पछताता रहा ॥

यह जनम यूं ही न जाए, इसका पल पल कीमती ।

यह मिला सौभाग से है, निकल यह जाता रहा ॥

यह जगत तो खेल माया, रूप थिर रहता नहीं ।

उलझ कर क्यों इसमें अब तक, दुख ही को पाता रहा ॥

अब समझ शिवओम् तू, यह जनम तो विरथा गया ।

पर तू बैठा सोचता है, भजन कर है न रहा ॥

(२८)

उद्दोधन- यग-देवगिरी बिलावत ताल-धुमाली

धीर धरे क्यों न मन माहीं, तेरा समय भी आएगा ।

गर्द गुबार सभी उड़ जाए, फिर सूरज प्रगटाएगा ॥

दर्शन राम कभी तो होंगे, बदल सभी कुछ जाएगा ।

मन विकार सब दूर हटेंगे, निर्मल मनवा पाएगा ॥

आशा तृष्णा हटे कभी तो, कभी तो माया टूटेगी ।

कभी हटेगा जग यह सन्मुख, आतम लाभ कमाएगा ॥

सुन शरण प्रभु की गहे रहे तू, टेर कभी तो सुन लेगा।

किरपा उसकी तुम पर होगी, मन आनन्द मनाएगा ॥

बंधन तेरे कभी कटेंगे, मुक्त बने, उन्मुक्त कभी ।

धीरज का फल होत है मीठा, धीरज का फल पाएगा ॥

तीर्थ शिवोम् हे मेरे मनवा, पल्ला पकड़े राम रहो ।

राम कृपालु, बड़े दयालु, किरपा ताकी पाएगा ॥

(२९)

उद्दोधन - यग भूप ताल-केहवा

भाई मेरे क्यों उलझा जग माहीं ।

विषयन में रमा तू ऐसा, भजन करत क्यों नाहीं ॥

काम क्रोध मन लोभ ही दीना, आशा तृष्णा जागी ।

तीन गुणों माहीं भरमाया, राम जपत क्यों नाहीं ॥

यह जग माया मन भरमाया, देखत तू हर्षया ।

मीठी लागे, दुख ही देवे, छोड़त जग क्यों नाहीं ॥

त्याग जगत की आशा तृष्णा, बंधन कारक है यह ।

मिलने का कुछ नाहीं तुझको, त्यागत है क्यों नहीं ॥

तीर्थ शिवोम् राम ही संगि, साथ ही नित्य जो रहता ।

ताही मनवा राम भजन कर, करत रहा क्यों नाहीं ॥

(३०)

उद्दोधन - यग मारु विहान ताल -केहवा

मझधार में नैया मोरी है, प्रभु मोहे आय बचा लीजो ।

जल गहरा भंवर अनोखा है, आ अपना हाथ थमा दीजो ॥

आशा है और नहीं कोई, बस तुमरा एक सहारा

हरि कृपा करो, प्रभु वेग करो, आ नैया पार लगा दीजो ॥

तुमरे ही शरण पड़ी हूं मैं, तुमरे चरणों की दासी हूं ।

तुम ही कर रही पुकार प्रभु, आ दुखड़ा मोर मिटा दीजो ॥

बलहीन बनी धीरज टूटा, आशा भी सभी निराश हुई ।

दुखिया की यही गुहार प्रभु, आ दर्शन मोहे करा दीजो ॥

तुमरा ही दर पकड़ा मैने, तुम पह ही आश लगी मेरी ।

तुमरे बिन मेरा न कोई, आ मन की पीर मिटा दीजो ॥

शिवओम् हृदय तड़पे मेरा, है मन में टीस उठे भारी ।

दर्शन की तेरी प्यासी हूं, आ मन की तड़प मिटा दीजो ॥

(३१)

उद्ग्रोधन - राग मरमाद सारंग ताल - धुमाली

काम नहीं कछु आवे तेरे, घर धन यह परिवारा ।

छोड़ चले जिस वेले जग तू, यह सब छिटकन हारा ॥

जग में जो कुछ जोड़ा है तू, साथ नहीं कुछ चाले ।

मित्र शत्रु सब छूटें तेरे, मिलता नहीं सहारा ॥

केवल एक प्रभु ही तेरा, साथ जो रहत सदा ही ।

न छोड़त वह कबहूं तोहे, दिवस हो या अंध्यारा ॥

राम नाम गुण गान करो तुम, यह मारग परमारथ ।

जाय छूट जगत बंधन से, जाये नदिया पारा ॥

हरि सिमरन से काल न पूछे, जनम मरन भी नाहीं ।

धाम हरि के वासा तेरा, जाए छूट संसारा ॥

तीर्थ शिवोम् हे भोले मनवा, काहे जग के पाढ़े ।

सिमरन हरि करत क्यों नाहीं, छूटे सकल पसारा ॥

(३२)

उद्ग्रोधन - राग किरवानी ताल-धुमाली

तज अभिमान करे जो सेवा, वह ही पी सुख जाने ।

तन मन धन सब अरपण पी के, पी को ही सब माने ॥

भेद मिटे सब, होए अभेदा, पी की सेज सुहावे ।

जगत विलीन, न रहत अभिमुख, नहीं जगत के ताने ॥

न को देखत, नहीं सुनत वह, पी ही वह रंग राती ।

मनवा सदा आनन्दित रहता, पी के रंग सुहाने ॥

जो न होत पिया रंगराती, दुख ही वह पावत है ।

कुढ़ती रहती, तड़पत रहती, जग को ही सब माने ॥

कठिन बड़ा है मारग मृत्यु, कष्ट बहुत ही भारी ।

कुलटा नारी दुख ही पावत, राह न सीधा जाने ॥

तीर्थ शिवोम् सुहागिन नारी, पी की परम पियारी ।

भाग अनूठा धन्य है तेरे, जगत तुझे है माने ॥

(३३)

उद्घोथन - शग-शीमपतास ताल - कव्वाली ठेका

अन्त समय पछताएगा, जो राम नहीं गुण गाएगा ।

पल पल जीवन घटत रहा तू सिमरन कब कर पाएगा ॥

तू लगा रहा विषयन माहीं, और भूले बैठा राम को है।

जग का पीछा तू कब छोड़े, कब जीवन लाभ कमाएगा ॥

जग तो यह बेड़ी पाओं की, छूटन कठिनाई है इसकी ।

तू जकड़े जाता है इसमें, छुटकारा कब तू पाएगा ॥

समझाए रहा हूं तुझको मैं, पर समझ नहीं तू पाता है ।

कुछ भी तो होश नहीं तोहे, तू कभी समझ भी पाएगा ॥

अब झंझट छोड़ जगत का तू, और सेवा राम को अपना ले ।

है जग में तेरा कुछ नाहीं, कब मन में बात यह लाएगा ॥

शिवओम् प्रभु ही मालिक है, वह ही जग का प्रतिपालक है।

उसकी ही शरण गहे भाई, वह बेड़ा पार कराएगा ॥

(३४)

उद्घोथन - शग-पीतू ताल-केण्वरा

प्रभु चरण हिरदय में धारो, गुरु पूरे के चरण पखारो ।

श्वास श्वास नित नाम प्रभु का, तन मन धन प्रभुहि पर वारो ॥

भूलत क्यों हो नाम प्रभु का, जिसने तीनों लोक संवारे ।

प्रणतपाल हितकारी जन का, सब दीनन का करत उधारो ॥

शरण लेत जो चरण कमल की, ता के दुख वह हरत है भारी ।

खाली हाथ न जाता कोई, करत सभी पर है उपकारो ॥

रूप न देख न रंग प्रभु का, कुल जाति भी है को नाहीं ।

सब जीवों का दाता प्रभुजी, संकट देत है दूर उतारो ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभु हे स्वामी, दीनन जीव तुम्हारी शरणी।

विपदा उनकी दूर हरो जी, नैया डूबत पार उतारो॥

(३५)

उद्दोधन - यग-तोड़ी ताल-केरवा

मनवा क्यों शरमाए रह्या ।

पीय मिले न तोहे अब लौं, तो दुख पाए रह्या ॥

क्यों लागा तू जग के पाछे, क्यों मन विषयन दीना ।

समझ न आई तो अजहूं, जग ललचाए रखा ॥

जगत भुलावा मन भरमाया, इसमें सार न कोई ।

सारहीन जग के तू पाछे, मन भटकाए रह्या ॥

सुन्दरता जो जग में दीखे, चेतन की ही छाया ।

जड़ को छोड़ पकड़ चेतन को समझ न पाए रह्या ॥

चेतन जग में सर्व समाया, भूला जीव है फिरता ।

चेतन को तो नहीं पछाने, जड़ भरमाए रह्या ॥

तीर्थ शिवोम् समझ मन मूरख, चेतन सुख का दाता ।

जड़-मन को जग जड़ ही भासत, जड़ मन छाए रह्या ॥

(३६)

उद्दोधन - यग - श्रीमपलास ताल-केरवा

हरि सुमिरन होवे मन माहीं ।

मन हि नारी पुरुष है दीखत, सज्जन दुर्जन मन के माहीं ॥

मात पिता गुरु भ्राता सब ही, दीखत जग है मन के माहीं ।

देश विदेश महेश सकल ही, उछलत डोलत मन के माहीं ॥

मन ही काया मन ही माया, महल भवन है मन के माहीं ।

जा मन अन्दर प्रेम प्रकट हो, प्रभु उजागर ता मन माहीं ॥

तीर्थ शिवोम् हे मनवा तेरी, गति समझ कोई न पाता ।

क्या क्या करे कराए मन में, दिखत दिखावत क्या मन माहीं ॥

(३७)

उद्गोथन - यग-किरणानी ताल - धुमाली

यह शरीर है घर बालू का, प्रकटे छिन में जाए।

मैं मैं तू तू करत है मिथ्या, काल इसे खा जाए ॥

ऊंचे मन्दिर महल हो गाड़ी, सुविधाएं सब जग की ।

फिर भी छोड़ चला सब पंछी, साथ नहीं कुछ जाए ॥

धन सम्पत्ति यश के कारण, जीव है डोले फिरता ।

आंख बंद कुछ काम न आवे, विरथा सब ही जावे ॥

यार मित्र सब मिल कर बैठे, करते वाह वाह तेरी ।

अन्त समय कोई साथ न चाले, देख तमाशा ही रह जाए ॥

काहे फिर तू राम जपे न, काहे मैं मैं करता ।

क्यों आसक्त बना तू जग में, यहीं जगत रह जाए ॥

तीर्थ शिवोम् दुखी जग सारा, सुखी जगत न कोई ।

सिमरे नाम सोई जन सुखिया, बाकी तो दुख में रह जावे ॥

(३८)

उद्गोथन - यग भैरवी ताल - धुमाली

मनवा राम सिमर पछताएगा ।

जियड़ा लोभ करत है भारी, छिन में काल समाएगा ॥

जग में लग कर जनम गंवाया, पर कुछ हाथ न आया ।

माया मोह गर्व न कीजो, सांझ पड़े उठ जाएगा ॥

जब यम आकर तुझको धेरे, कहत नहीं कुछ आवेगा ।

फिर क्यों राम जपत न पगले, माटी में मिल जाएगा ॥

सुधरे कर्म किये न तूने, नेक कमाई न कीनी ।

दण्ड मिलेगा नरक में तोहे, तो तू तरले खाएगा ॥

तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, जीवन विरथा जाय रहा ।

अब भी राम भजन तू करले, नहीं तो गोते खाएगा ॥

(३९)

उद्घोषण - राग यमन कल्याण ताल -केहरवा

अच्छा करो, या कि बुरा, दुनिया करे बदनाम है ।

कुछ भी करो, कैसे करो, रहने न दे आराम है ॥

उलझा है मन मेरा यहां, आए समझा में कुछ नहीं।

क्या करूं दुनिया का मैं, करने न दे विश्राम है ॥

सब कुछ मैं करके थक गया, पर मैं न खुश हूँ कर सका ।

अब मैं हुआ मायूस हूँ, मन में नहीं आराम है ॥

अब छोड़ पीछा जगत का, और लग प्रभु की याद में ।

उसमें ही सब आराम है, देता तो सुख बस राम है ॥

है इक प्रभु ही दे सके, आनन्द जो मानव को है ।

बाकी तमाशे देखते, शुभ न कोई पैगाम है ॥

शिवओम् अब तो जिन्दगी, गुज़रे प्रभु की याद में ।

दुनिया से भरपाया है मन, दुनियां में न आराम है ॥

(४०)

उद्घोषण - राग - कौशिया ताल -केहरवा

साधु की निन्दा जो कीजे, इससे बड़कर पाप न कोई ।

गुरु दरोही जो जन होवे, इस से बढ़कर धात न कोई ॥

नार पराई करे जो दृष्टि, इससे बड़ा कुर्कम न कोई ।

मात पिता की करे अवज्ञा, इससे बढ़कर ताप न कोई ॥

चेतन को अन्तर अवलोके, क्रियाशीलता उसकी देखे ।

दृष्टा भाव में रहत निरन्तर, इससे बढ़कर जाप न कोई ॥

जगत द्वेष में सब जग डूबा, अहित ही करते इक दूजे का ।

जो जन करत है परहित चिन्तन, इससे बढ़कर हाट न कोई ॥

जो जन राम भरोसे रहते, हरदम राम की सेवा करते ।

पल पल छिन छिन राम सिमरते, इससे बढ़कर पाठ न कोई ॥

तीर्थ शिवोम् सुनो हे मनवा, सदगुरुदेव ही एक सहारा ।

शरण गहे जो सदगुरुदेवा, इससे बढ़कर बात न कोई ॥

(४१)

उद्घोषन - गण - आसावरी ताल-फैहरवा

कर्म अर्धर्म किए तू जितने नाम हरि सब छीन करे।

पाप पुण्य की दलदल माहीं, नाम हरि ही दूर करे ॥

नाम हरि गुणगान का है फल, यह मन को निर्मल करे।

नाम हरि मन प्रेम उबारे, प्रेम में मन को लीन करे ॥

दास भाव है सबसे ऊँचा, करे गर्व को चूर वही।

समर्पण प्रेम से मनवा, भाव हृदय भरपूर करे ॥

जो न सिमरे नाम प्रभु का, काम क्रोध हंकार जले।

निर्मल मनवा पावे है जन, धाम प्रभु के वास करे ॥

तीर्थ शिवोम् यह विनय गुजारे, संतन संग का दान करो।

प्रेम भक्ति हो हिरदय माहीं, संत चरण का ध्यान धरे ॥

(४२)

उद्घोषन - गण-पीतू ताल- दादरा

खोजता ही रहा मैं तुम्हें, पर भ्रमित मैं स्वयं जग हुआ।

मैं तो पा पाया तुमको नहीं, न ही जग में भी कुछ फल हुआ ॥

मैं कहीं का भी रह न गया, न जगत ही मिला न तुम ही।

मैं तो लटका रहा बीच में, हाल कुछ मेरा ऐसा हुआ ॥

मैं न दर का न घर का रहा, अब हूं बेकार जग धूमता।

पूरी इच्छा न मन की हुई, मैं तो बदनाम यूं ही हुआ ॥

न दिखाने वाला कोई, न ही जानूं मैं ही रास्ता।

कैसे मैं खोज पाऊं तुम्हें, मैं भटकता फिसलता हुआ ॥

तू कर कृपा मुझ पर प्रभु, छूट जाए यह संसार ही।

मुझको दर्शन भी तेरा मिले, धूमूं उन्मुक्त मैं तो हुआ ॥

तीर्थ शिवोम् की यह विनय, करना स्वीकार मेरे प्रभु।

मैं शरण हूं तेरी आ गया, अब मैं अर्पण हूं तेरे हुआ ॥

(४३)

उद्गोथन - राग- कौशिया ताल-केहरवा

घर में तेरे धन गड़ा है, तू जगत में खोजता ।

बह रही अन्तर में गंगा, तू कुआं है खोजता ॥

भटकता तीरथ में फिरता, माथा दर दर टेकता ।

झांक कर अन्दर न देखा, दर बदर है डोलता ॥

जा प्रभु बाहर में खोजे, अपने अंदर खोज तू ।

राम तो अन्दर ही रहता, क्यों है दर दर ठोकता ॥

शरण ले गुरुदेव की, अन्दर दिखावे राम को

अन्दर नज़ारे हर तरह, अन्दर नहीं क्यों खोलता ॥

चंचल बना है मन तेरा, चारों दिशाएं धूमता ।

है मन तो थिर तेरा नहीं है, क्यों नहीं तू रोकता ॥

शिवओम् क्या सोचे है तू, मारग गुरु ही है तेरा ।

वह ही करावे पार है, अन्तर पट न खोलता ॥

(४४)

उद्गोथन राग यमन ताल - दीपचन्दी

वक्त का है क्या भरोसा, कब कहां ले जाएगा।

अब सम्भल जा ऐ बन्दे, साथ न दे पाएगा ॥

क्यों रहा गुज़रान कर तू, ज़िन्दगी बेकार में ।

याद कर ले तू प्रभु को, साथ तेरे जाएगा॥

वक्त जो भी बीतता है, वह नहीं फिर आएगा ।

है इसे तू क्यों गंवावे, हाथ कुछ न आएगा ॥

सब कोई बेगाना दीखे, अपना कोई है नहीं ।

इक सिवा गुरुदेव के, कोई निभा न पाएगा ॥

मैं समर्पित तो मेरे गुरुदेव, शिवओम् मैं ।

ज़िन्दगी तेरे लिए, जीवन सम्भल ही जाएगा ॥

(४५)

उद्दोधन - गण-गाग ताल - प्रिताल

घट में भरा समुन्दर व्यापे ।

अनत अगोचर गहर गम्भीरा, अन्तर राम ही आपे ॥

अन्तर में ही गंगा जमना, अन्तर वन पर्वत है ।

अन्तर में धून होत निरन्तर, आपे नाम ही जापे ॥

अन्तर खेल करे वह नाना, अन्तर सोवत वह जागे ।

अन्तर कर्म करे वह संचित, अन्तर करे सयापे ॥

अन्तर ज्ञान अविद्या सब ही, अन्तर भरम भुलाना ।

अन्तर ही मन निर्मल होवे, अन्तर माया व्यापे ॥

अन्तर तेरा राम बसत है, बाहर काहे खोजे ।

अन्तर शुद्ध करे जो मनवा, आय मिले वह आपे ॥

तीर्थ शिवोम् है बाहर छाया, सब ही फैली माया ।

राम कृपा से दीखे अन्तर, अन्तर अगन जो तापे ॥

(४६)

उद्दोधन - गण भैरवी ताल-केहरवा

राम ही देखे, राम ही बोले, किरिया सभी करत है ।

राम उठाए, राम समेटे, राम ही सभी धरत है ॥

राम चलाए, राम बिठाए, राम ही खात पचाए ।

राम बनाए रूप अनेकों, राम ही नृत्य करत हैं ॥

राम फंसाए, राम निकाले, राम ही लीला सारी ।

राम बिना कुछ जग में नाहीं, राम ही खेल करत है ॥

तीर्थ शिवोम् राम जी मेरे, तुम हो अपरम्पारा ।

राम नाम बिन नहीं सहारा, राम ही पीर हरत है ॥

(४७)

उद्घोषण - यग-छायान्त ताल-टाट्या

मैला नाला मिले गंग में, गंग का रूप धरे है।

मिल कर राम, राम हुई जावे, धरता रूप हरि है ॥

जो जन मिथ्या कपटी भोगी, रहता जगत समाए ।

अंध कूप माया में जाए, गहरे गरत परे है ॥

जागो जन जागो तुम जागो, मारग काहे भट्के ।

छोड जगत की आशा तृष्णा जग में काहे जरे है ॥

सुख सारा तो राम के माही, जग में सुख है नाहीं ।

विरथा जीवन जाए तेरा, रहता सदा डरे है ॥

भूत पिशाच बना तू फिरता, आशा रहत नचाए ।

अब तक नाचत थाका नाहीं, मन से नाहीं लरे है ॥

तीर्थ शिवोम् सुनो है मनवा, जग है रैन बसेरा ।

हुआ सवेरा काया छूटी, काहे लिए मरे है ॥

(४८)

उद्घोषण - यग - पीलू ताल-केण्ठवा

पढ़िए लिखिए नाम कमाइये, अनुभव बिना कुछ होत नहीं।

अनुभव दर्शन राम कराए, राम बिना सुख होत नहीं ॥

जब लौ पारस छूत हैं नाहीं, लोह कंचन होत नहीं ।

चेतन के संयोग बिना तो, जीव भाव है खोत नहीं ॥

जल बिन नाव नहीं है बहती, जल में परवाहित होती ।

तैसे योग प्रभु बिन पाए, छुटकारा तो होत नहीं ॥

तीर्थ शिवोम् हे मोरे मनवा, राम भजन अनुभव होता ।

राम भजन से राम हो सन्मुख, राम भजन दुख होत नहीं ॥

(४९)

उद्दोधन - यग्न यमन कल्याण - धुमाली

मन मैला मैं कैसे आऊँ ।

तन मैला और कर्म हैं मैले, रिज्ञा मैं कैसे पाऊँ ॥

मन की मैल न धोयी जाए, न तन उजला होए ।

क्या क्या जतन किए हैं मैनें, निर्मल कैसे होऊँ ॥

मन पर दाग लगे जो गहरे, मेटे नहीं मिट्ट हैं।

साबुन कौन लगाऊँ इसको, क्या जल काम में लाऊँ ॥

नाम का साबुन भक्ति जल ही, निर्मलता कर पाए ।

कृपा तेरी बिन होय कछु न, किरपा तुमरी पाऊँ ॥

मैं तो जतन करत ही हारा, सफल मनोरथ नाहीं ।

कृपा करो हे कृपा करो प्रभु, बार बार सिर नाऊँ ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, शरण पड़ा हूँ तेरी ।

तुमरा केवल एक सहारा, तुम से ही कह पाऊँ ॥

(५०)

उद्दोधन - यग्न- जीवनपुरी ताल - भजनी ठेका

सुत जननी का ध्यान धरे ज्यों, वैसे हरि धिआवे ।

झूटे बंधन ता जन का है, हरि हि रूप कमावे ॥

चलत फिरत और ऊठत बैठत, लगा हरि मन रहवे ।

दूजा कछु भी सूजत नाही, चित्त चरणन हि लावे ॥

माया तृष्णा काम करे, ता जगत नहीं उरझावे ।

जगहि रहे जगत से न्यारा, अन्तर माही समावे ॥

तीर्थ शिवोम् जो हो जन ऐसा, ताकी महिमा न्यारी ।

सुर नर मुनि जन ताही सिमरें, प्रभु ता पीछे आवे ॥

(५१)

उद्दोधन - यग - पहाड़ी ताल-केहरवा

सजनी प्रेम बुलावा आया ।

प्रियतम तड़पे मिलन को तोहे, मन माहीं अकुलाया ।

प्रियतम ताई ध्यान न तेरा, रही जगत हि उलझी ।

कैसी कुलटा बनी अभागिन, प्रियतम हृदय भुलाया ॥

छोड़ सुहाग करे तू सेवा, दूजे पुरुष रमी तू ।

सोचत अपना भला बुरा न, बुद्धि भ्रम फैलाया ॥

सोचत नाही तू मन माहीं, कहां तू भटक रही है ।

पी घर छोड़ फिरे तू बाहर, बाहर मन भरमाया ॥

तीर्थ शिवोम् कहूं मैं तोहे, अब तो सोच पिया की ।

सुख पावेगी हिरदय माहीं, अब लगि बहु दुख पाया ॥

(५२)

उद्दोधन - यग-तोड़ी ताल-केहरवा

गाफला सोए तू क्यों रह्या ।

जाग उठो अब हुआ सबेरा, बेसुध सोए रह्या ॥

यह जग बदलत जात प्रतिक्षण, तू जड़ हो क्यों बैठा ।

चेतन रूप धरे तू नाहीं, जग भरमाए रह्या ॥

या जग में भरमाया मनवा, होत न कभी किसी का ।

फिर तू जग काहे को लागा, क्यों दुख पाय रह्या ॥

रात अंधेरी जग है सपना, सपने मनवा चंचल ।

निद्रा त्याग सचेतन हो जा, समझ न पाए रह्या ॥

गाफिल बना जगत में भटके, शोक मोह भ्रम अटका ।

धावत रहा है विषयन में तू, न दर आए रह्या ॥

तीर्थ शिवोम् हे गाफिल मनवा, क्यों तू नहीं है चेते ।

बिन चेते दुख होत घना है, मन पछताए रह्या ॥

(५३)

उद्घोथन - शग-देस ताल-केरखवा

सांम संभाल मैं कर न पायी, जो प्रभु कपड़ा दीना ।

घूमत फिरी जगत में विरथा, यह मैंने क्या कीना ॥

दाग अनेकों लागे कपड़े, काम लोभ माया के ।

शकल बिगाड़ी कपड़े अपने, घना अनादर दीना ॥

कहीं फटा मैं सी न पायी, गया फटत ही कपड़ा ।

अब तो कपड़ा भया है जरजर, अंग शिथिल में कीना ॥

अब तो न पहचाना जाए, न ही काम में आए ।

अब तो फेकन जोग हैं कपड़ा, यह हालत मैं कीना ॥

कपड़ा प्रभु कृपा कर दीना, पर मैं मैला कीना ।

कदर न जानी, सार न जानी, तार तार कर दीना ॥

कपड़े जोग नहीं था मनवा, दूषित कर्म घनेरे ।

फिर भी कृपा प्रभु कर दीनी, जो कपड़ा दे दीना ॥

अब तो कपड़ा फटा है मैला, क्या मुंह ले प्रभु जाऊं ।

लाज लगे कर्मों पह अपने, विरथा कपड़ा कीना ॥

मैं पापी दम्भी हठधर्मी, मिथ्या जग लिपटानी ।

कपड़ा पहिर जगत को धायी, पकड़ जगत ने लीना ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, तुम तो दीन दयाला ।

क्षमा करो मेरी भूलों को, आदर नहीं मैं कीना ॥

(५४)

उद्दोधन - राग वैशाखी भैरव ताल-केहरवा

सूर्य उदय हो उच्च गगन में, जीवन का भी हाल यही ।

आए निकले औ उठ जाए, मिथ्या जीवन हाल यही ॥

पशु समान बना है मनवा, जीवन सार वह न समझे ।

बैठ रहे न कोई आकर, क्षण भर जीवन हाल यही ॥

खाए धाए मन पश्चाए, बैठा पूँछ हिलाए है।

मिथ्या जग के भोग हैं मिथ्या, जीवन का बस सार यही ॥

क्यों ललचाए देख तू जग को, काहे मन भरमाए है ।

राम भजन कर मूरख मनवा, राम भजन है सार यही ॥

संत पुरुष समझाए तोहे, लाभ उठा इस जीवन का ।

बीत वृथा यूं ही न जावे, आवेगा दोबार नहीं ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोहे, बल विवेक दीजो मोहे ।

भूल न जाऊं राम नाम को, जीवन का उपकार यही ॥

(५५)

उद्दोधन - राग - काफी ताल केहरवा

बहती नदिया जात निरन्तर रह गई खडे किनारे ।

आगे बढ़ी पिया न पाया, रह गई बिना सहारे ॥

पिया मिले न जब तक मोहे, तब तक चैन नहीं है ।

खड़ी निहारत नदिया को मैं जावत मिलन पिआरे ॥

पिया बुलावत राह निहारो, जात अभागन नाहीं ।

ऐसी मूँह बनी मैं सोई, पड़ी हूँ बीच विचारे॥

मेरा साजन छैल छबीला, सर्व सुखों का दाता ।

मनवा तो जग के सुख लागा, रही हूँ मैं मतिमारे ॥

जात उमरिया बीतत मेरी, अंग शिथिलता आई ।

अब लौं समझ न आई मोहे, बिन नाविक पतवारे ॥

तीर्थ शिवोम् अभागिन नारी, जनम पे जनम गंवावे ।

झूब रही विषयन के माहीं, भूली रही पिआरे ॥

(५६)

उद्दोधन - यग - विहान ताल - केहरवा

कंकर पत्थर जोड़ जोड़ कर, महल बनाया ऊँचा है ।

कि मन तो गिरा हुआ जग मार्हीं, हो न सका वह ऊँचा है ॥

मनवा हुआ अधीर जगत में, अंध कूप वह माया में ।

गिरता जावत नीचे नीचे, जात कभी न ऊँचा है ॥

माया नगरी भवन बनाया, विषय वासना द्वारी ।

गर्व हृदय का ऊँचा जावत, ऊँचा ऊँचा ऊँचा है ॥

जगत किसी का नहीं हुआ है, दीखत मधुर लुभाना ।

मन पंछी इसमें है उलझा, उड़ता ऊँचा ऊँचा है ॥

हे प्रभु मेरे, शरण हूं तेरी, तू ही मेरा स्वामी है ।

तू ऊँचे से ऊँचा प्रीतम, तुझसे न कुछ ऊँचा है ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मेरे, पापी नीच कुकर्मी हूं ।

शरण तुम्हारी पार कराओ, तू ऊँचे से ऊँचा है ॥

(५७)

उद्दोधन - यग - मारवा ताल - केहरवा

प्रेम का मारग कठिन है भाई ।

गर्व तजे जो अपने मन का, वह ही जाए चढ़त चढ़ाई ॥

प्रेमी जन न मांगे कुछ भी, अपना सब कुछ दे प्रियतम को।

मन बुद्धि और चिन्तन सब ही, अर्पण प्रियतम करता जाई ॥

अपना मेरा तेरा सब ही, कुछ भी राखे संग न अपने ।

इच्छा प्रियतम उसकी इच्छा, अपनापन प्रियतम के जाई ॥

जीवन उसका प्रियतम ताई, ज्यों नदिया सागर के ताई ।

न जल पीवत अपने ताई, सागर मिलन ही बढ़ती जाई ॥

तीर्थ शिवोम् जो ऐसा प्रेमी, मन में राखे वैर न कोई ।

पाए वह निर्मलता मन की, मन विकार सब भागत जाई ॥

(५८)

उद्घोषन - यग-मिश्र पीतू ताल-केरवा

जग की भूल भूलैया भटका, जीव निकल न पाता है ।

फिर भी रहता धूमत फिरता, पर सुख नाहीं पाता है ॥

ऐसी माया रची प्रभु ने, जिसका पारावार नहीं ।

छूट चाहे निकलन चाहे, कर कुछ नाहीं पाता है ॥

दुख देती पर दीखत नाहीं, रही लपेटत जीव सभी ।

ऐसी अगम अपार अनंता, कोई बच न पाता है ॥

विवश हुआ है ऐसा मनवा, कर न सके करन चाहे ।

जो न चाहे, किए जात है, पर अन्तर दुख पाता है ॥

कैसे हो छुटकारा जग से, कैसे माया दूर हटे ।

कैसे मुक्त होय यह मनवा, अब तक जग में जाता है ॥

तीर्थ शिवोम् हे मेरे प्रियतम, अब माया भ्रम दूर करो ।

माया रही बहुत भरमाया, माया जी घबराता है ॥

(५९)

उद्घोषन - यग-भूपाती तोड़ी ताल-केरवा

जग को कहत रहा तू मेरा ।

घर परिवार सकल सुख साधन, कुछ भी नाहीं तेरा ॥

जब तू छोड़ चलेगा जग को, अनुभव होगा तब तो ।

छोड़ चला सब यहीं पह मूरख, करत रहा मेरा मेरा ॥

माया भ्रम में पड़ा तू ऐसा, लिपट रहा तू जग में ।

मोह बना है दुख का कारण, पकड़ा क्यों तेरा मेरा ॥

जप ले, भज ले, नाम हरि का, वह ही तुझको पार करे ।

काहे विरथा भटके जग में, क्यों उलझे मेरा तेरा ॥

केवल राम ही पार उतारे, और नहीं ऐसा कोई ।

शरण गहे तू उसकी पगले, जाय यह मेरा तेरा ॥

तीर्थ शिवोम् कृपा रख मो पर, शरण राम तेरी आया ।

अब तो जग से ऊब चुका हूँ, रहा भ्रमित मेरा तेरा ॥

(६०)

उद्घोषण - शग - मिश्र भैरवी तात - केहरवा

ध्यास शिथिल न जब तक, मिटे न भाव जगत का ।

देह जगत का अंग बना है, मिथ्या भाव जगत का ॥

जब तक चित्त प्रकट है अन्दर, जीव बना अज्ञानी ।

माया अन्दर रहत है उलझा, उलझा भाव जगत का ॥

विषय वासना हो आकर्षित, जग आवेश है रहता ।

झूबा रहत है विषयन माहीं, पार न पात जगत का ॥

आशा रूपी विष है धातक, खिलत कमल न मन का ।

करे विचार न आतम का वह, करत विचार जगत का ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, करे जतन न जग का ।

छूटे मनवा जग विषयन से, छूटे धाम जगत का ॥

(६१)

उद्घोषण - शग - मिश्र भैरवी तात - कीर्तन

मनवा केशव केशव बोल ।

सिमरन केशव गायन केशव, अन्तर नयना खोल ॥

ऊठत केशव बैठत केशव, सोवत धावत खावत केशव ।

केशव तेरा जनम मरण है, केशव मन में घोल ॥

घर में केशव बाहर केशव काम करत भी केशव केशव।

केशव तेरा संगी साथी, केशव में ही डोल ॥

केशव तेरे काज संवारे, केशव तोहे पार लंघाए

दयावन्त उपकारी केशव, केशव में नहीं पोल ॥

केशव केशव नाम सिमर तू, केशव सेवा कर्म करे तू ।

केशव को ही अर्पण जीवन, मन में रख तू तोल ॥

तीर्थ शिवोम् हे मेरे मनवा, केशव ही परमारथ धनवा ।

केशव ही यह जगत बना है, केशव को ले मोल ॥

(६२)

उद्दोधन - याग-तालित ताल - केरहवा

साधु होना कठिन है भाई, साधन बहुत कठिन है।
लगे रहो दिन राती इसमें, सफल न होत जनन है ॥

सरल है करना बातें जग की, सरल बहुत दिखलावा ।
सरल है मिथ्याचार जगत में, साधन बहुत कठिन है ॥
साधन कोई नहीं दिखावा, यह तो बात करन की ।
जग से उलटे चलना भाई, साधन बहुत कठिन है ॥
राग द्रेष न राखे मन में, क्रोध लोभ कछु नाहीं ।
निर्मलता सम्पादित करना, साधन बहुत कठिन है ॥
मन न मानत ज्ञान की बात, चले जगत के चाले ।
मन को काबू करना भाई, साधन बहुत कठिन है ॥
अन्दर जमें जो बैठी यादें, बाहर निकलत नाहीं ।
इन्हें हटाना मन से भाई, साधन बहुत कठिन है ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, साधन किरपा तुमरी ।
कृपा बिना हो मेरे भाई, साधन बहुत कठिन है ॥

(६३)

उद्दोधन - याग- वैयागी भैरव ताल-केरहवा

एक एक कर चले मुसाफिर तू क्यों रहत है सोया ।
या जग की तो रीत यही है, जो सोया सो खोया ॥
जैसी करनी वैसी भरनी, छूट न पाता कोई।
या जग की तो रीत यही है, वह काटा जो बोया ॥
सब दिन रहत न एक समाना, बदलत रहत निरन्तर ।
या जग की तो रीत यही है, हँसा एक दिन रोया ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो हे मनवा, मस्त रहो अपने में ।
या जग की तो रीत यही है, जो होना सो होया ॥

(६४)

उद्दोधन - शग- गौड़ मत्हार ताल- भजनी ठेका

देखत हूँ मैं जग को रोवत, अचरज होवत मेरे मन में ।

जगत बनाया सुख को सुआमी, फिर क्यों दुखी सभी मन में ॥

अपने संसार में रहत सभी, सब लोक- कल्पना रमे हुए ।

भगवान के जग में न कोई, ता ते दुखिया सब ही मन में ॥

आया संसार मिटाने को, पर जग में रहा समाए है।

है डूबे भवजल हर कोई, ता ते दुखिया सब ही मन में ॥

यह जग तो किसी का है नाहीं, जग तो उपजाया राम प्रभु ।

इस बात को समझत जीव नहीं, ता ते दुखिया सब ही मन में ॥

त्यागे जो मोह जगत माहीं, और भजन करे परमेश्वर का ।

पर करत नहीं यह जीव कभी, ता ते दुखिया सब ही मन में

शिवोम् समझ ले मन में तू, यह जगत नहीं तेरा प्यारे ।

जग को जो आपना समझ रहे, ता ते दुखिया सब ही मन में ॥

(६५)

उद्दोधन - शग - देवगिरी बिलावल ताल - केछवा

राम भजन में मन न लागे ।

भागत जाए विषयन ताई, सुख वाही में जागे ॥

रहत हूँ मैं समझाए मनवा, राम भजन ही सुख है ।

पर वह जावत भोगन ताई, भोग करन को लागे ॥

कौन उपाय करूँ मैं ऐसा, मनवा जा वश होवे ।

अब लौं भटकत रहा जगत में, जग ही रहत है भागे ॥

राम अनंता है सुख राशि, राम करे निस्तारा ।

राम भजन ही पार करावे, राम भजन जग भागे ॥

क्यों मन नाहीं जपत राम है, मारग राम न जावे ।

राम बचावन हारा दुख सों, राम हि दुविधा भागे ॥

तीर्थ शिवोम् राम भज मनवा, पार उतारन हारा ।

राम ज़पन सगले दुख नाठे, राम नाम मन लागे ॥

(६६)

गुरु - राग-जीवनपुरी ताल-केहरवा

गुरु जी ! तुम किरपा वहु कीनी ।

मो को पंथ दिखाया अपना, अमृत वर्षा कीनी ॥

मैं तो खुभी हुई थी जग में, तू कीना उजियारा ।

अन्तर चेतन जाग्रत कीना, वृत्ति अन्तर कीनी ॥

अन्तर खेल अनेकों देखूं, अनुपम सुख मैं पाऊं ।

मनवा निर्मल बनता जाए, किरपा ऐसी कीनी ॥

सरल सुगम साधन मो दीना, दृष्टा भाव जगाया ।

अब तो मैं आनन्द मनाऊं, हिरदय प्रेम निरन्तर ॥

कुछ करना, न कुछ धरना, ऐसी शक्ति दीनी ॥

आशा तृष्णा भ्रम है भागत, जोत जगा ही दीनी ॥

तीर्थ शिवोम् हे सदगुरुदेवा, मैं तेरे गुण गाऊं ।

अंधकूप में तड़प रही थी, दुखिया काढ़ है लीनी ॥

(६७)

गुरु - राग - जीवनपुरी ताल-केहरवा

गुरु ने हरि-धन दियो अपार ।

मनवा मेरा बदल है डाला, रस छूटा संसार ॥

यह धन करत प्रकाशित अन्तर, तृष्णा तम है भागा ।

हुआ उदित है सुख आनन्दा, भया सकल उजियार ॥

तन में सुख है मन में सुख है, जग में भी सुख दीखे ।

शोक मोह सब बीत गए हैं, कृपा है अपरम्पार ॥

गुरु रूप आनन्द स्वरूपा, न्यारा जगत विषय से ।

पातक याचक पास जो आवे, एक ही करि निहार ॥

तीर्थ शिवोम् आनन्दित मनवा, सार गुरु का पाया ।

गुरु प्रेम में नाहीं भेदा, संशय दिया निवार ॥

(६८)

गुरु- गण मिश्र काफी ताल- ध्यानी

हुआ शिवोम् जगत से न्यारा, कृपा भयी गुरुवर की।

जग जंजाल हुआ छुटकारा, बलिहारी गुरुवर की ॥

भागत धावत उमर गुज़ारी, चैन नहीं पल पायो ।

अब तो मनवा थिर हुई लागा, बलिहारी गुरुवर की ॥

हरि भजन में मनवा लागे, जगत विषय न जाए ।

ऐसी किरपा कीजो मो पर, बलिहारी गुरुवर की ॥

प्रेम सदा ही गुरु चरण में, हिरदय ध्यान धरूं मैं ।

वास तुम्हारा अन्तर माहीं, बलिहारी गुरुवर की ॥

तीर्थ शिवोम् भया आनन्दा, पाईं कृपा प्रभु की ।

छूटन लागी जगत वासना, बलिहारी गुरुवर की ॥

(६९)

गुरु - गण ख्याज ताल- केषवा

जाग उठो तुम, जाग उठो अब, जाग उठो गुरुदेवा ।

मैं पापी बालक अंजाना, कृपा करो गुरुदेवा ॥

चरण धूलि तुमरी शुभ कारक, अन्तर्जीत जगाए ।

अन्तर परगट हिरदय माहीं, दूर करो तम देवा ॥

प्रेम सदा ही चरण तिहारे, हिरदय भाव तेरा हो ।

ध्यान धरूं नित तेरा गुरुवर, तेरा नाम ही लेवा ॥

जग और जग के विषयन सब ही, मन को नहीं सुहावें ।

प्रीत तुम्हीं संग लागी प्रभुजी, आतम पाऊं मेवा ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभु चरणों में, भगती मोहे दीजो ।

सब जग छोड़ हरि चरणों में, लगा रहूं गुरुदेवा ॥

(७०)

गुरु - राग - कलावती ताल-केरवा

गुरुदेव मैं तेरा हूँ, तेरा ही बस तेरा हूँ ।

तेरे सिवा न कोई, इक आसरे पड़ा हूँ ॥

जग तो मुझे बुलाए, मन को मेरे रिज्जाए ।

मन में तो मेरे तू है, तेरे ही मन लगा हूँ ॥

तू ही है मेरा साधन, तू ही तो साध्य भी है ।

तू ही करण करावन, तेरे में ही जमा हूँ ॥

करना कृपा यह ऐसी, मन तुम में ही लगा हो ।

जग तेरा रूप देखूँ, बस गोद में पड़ा हूँ ॥

शिवोम् यह पुकारे, चरणों में राख लीजो ।

तन मन में वास तेरा, हर हाल में तेरा हूँ ॥

(७१)

गुरु - राग यमन ताल -केरवा

वह ही पक्षी रूप धरे है, वह ही पिंजरा बनता ।

हँस कलोल है करता फिरता, वही सरोवर बनता ॥

वही शिकारी हो जग आवे, आप ही पिंजरे जावे ।

माया खेल रचाया उसने, जीव है दूभर बनता ॥

कैसी रचना तेरी गुरुजी, कैसी तेरी माया ।

तू ही जगत बना है आपे, आपे कर्ता बनता ॥

जीव बेचारा उलझ के माया, दुख सुख रहत है पाता ।

तू ही डाले, तू ही काढ़े, आप तमाशा बनता ॥

तीर्थ शिवोम् गुरुजी मोरे, माया अजब अनूठी ।

देत भुलावा जग को हरदम, देख देख तू हँसता ॥

(७२)

गुरु - गण-मातृकर्मेय ताल-धुमाली

सद्गुरु किरपा मैं बलिहारी ।

अनूप अनोखी बनी रसायन, आशा तुष्णा मारी ॥

व्यापक दृष्टि प्रेम अनन्ता, समता भाव समाया ।

अंतर प्रकट निरंजन न्यारा, गई कुबुद्धि सारी ॥

लागी सुरति पिया सो ऐसी, छूटत नहीं छुड़ाए ।

नशा रहत है नित्य निरन्तर, विपदा दूर है भारी ॥

अब तो मैं और मेरा प्रियतम, देखे इक दूजे को ।

सर्व समाया साजन मेरा, महिमा उसकी न्यारी ॥

तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, क्या किरपा बरसाई ।

भीग गया तन है सब मेरा, उतरत नहीं उतारी ॥

(७३)

गुरु - गण- अहीर भैरव ताल - धुमाली

मेरा गुरु गुणों की खान ।

जा पर कृपा करे बे-अन्ता, वह जावे सब जान ॥

बन्धन काटे, सीमा तोड़े, किरपा ता की न्यारी ।

शिष पावे है सुख अनन्ता, रहे न वह अन्जान ॥

रहे अडोल सदा ही जग में, जुगती कर्म पछाने ।

शोक मोह से रहे अद्घूता, वैरी किसे न जान ॥

ज्ञान- समाधि भाव स्थिति में, सदा ही विचरण करता ।

भक्तन पर जब दया करे वह, गत होवे अज्ञान ॥

सहज अवस्था सहज-समाधि, रहता लीन सदा ही ।

अपने में ही मस्त बना वह, दूर मान अपमान ॥

तीर्थ शिवोम् गुरु पर ऐसे, तन मन सब ही बारूं ।

ऐसा सदगुरु आवे जग में, करने को कल्यान ॥

(७४)

गुरु - शग-नंद ताल - भजनी ठेका

सदगुरुदेव कृपा की मो पर, प्रभु दिया दर्शाए ।

अब बिसरुं न, अब भूलुं न, अन्तर हरि दिखाए ॥

सोवत धावत राम निहारूं, संग ही संग विराजे ।

दूजो काम नहीं कछु मोहे, ऐसे राम मिलाए ॥

जगत बुलाए, मन परचाए, करत रहत मनुहारी ।

पर अन्तर जो राम विराजे, दूजो क्यों कर आए ॥

छोड़े जात जगत भी पीछा, जग के काम की नाहीं ।

आपुन मन आनन्द भयो है, छूटत विपदा जाए ॥

सदगुरुदेव है धन्य तुम्हारी, महिमा अपरम्पारा ।

राम मिलाया जगत छुड़ाया, मो से कही न जाए ॥

तीर्थ शिवोम् राम रंग राती, राम ही राम निहारूं ।

राम बिना कछु दीखत नाहीं, मन आनन्द समाए ॥

(७५)

गुरु - शग - माझ विघाग ताल-धुमाली

गुरु बिन कौन उतारे पार ।

बीच पड़त है नदिया गहरी, मिलना कठिन किनार ॥

ज्ञान गुरु जब लौं नहीं अन्तर, सगले जतन हैं विरथा ।

जप तप तीरथ कुछ भी कीना, नाहीं मिलत मुरार ॥

दीपक ज्ञान जले न गुरु बिन, जावत अंध्यारा ।

काम क्रोध मद लोभ में उलझा, भटक रहा संसार ॥

तीर्थ शिवोम् धन्य गुरुदेवा, दीन हीन हितकारी ।

पापिन हित अबतार धरो है, भक्तन सुनत पुकार ॥

(७६)

गुरु - यग - शंकरा ताल - प्रिताल

सदगुरु देत मिटाय पाप ।

अन्दर राम दियो दर्शाई, दूर भए संताप ॥

प्रभु खोजन कारन हैं भटक्यो, घर में ही दिखलायो ।

शक्ति अन्दर राम विराजे, दर्शन गुरु प्रताप ॥

गुरु महिमा हैं काय बखानूं, अनुपम अनत निराली ।

किरपा शिष्य वर्ग के ताई, हरत सकल ही ताप ॥

गुरु सम नहीं सहायक जग में, राह दिखावन हारा ।

आप साध्य हैं, साधक आपे, हरत हैं कल्मिश आप ॥

शिष्य खोजता गुरु को धाय, गुरु खोजता शिष्य ताई ।

हरि कृपा से मेल मिलत है, वह ही करत मिलाप ॥

तीर्थ शिवोम् जाऊं बलिहारी, सदगुरुदेव प्रिभु की ।

आपे लियो बचाए मोहे, आप भगाए ताप ॥

(७७)

गुरु - यग यमन ताल - दादरा

आज शिवोम् भया आनन्दा, गुरु दर्शन है पाया ।

जनम जनम की आशा पूरी, अनुपम सुख है पाया ॥

गुरु मिलया, मन शीतल होया, दूर सभी अंध्यारा ।

अन्तर मन प्रकाश समाया, मन वांछित फल पाया ॥

जा दिन कारन जप तप कीना, सो ही आज दिवस है ।

गुरुदेव मन में आलोकित, आसन हृदय जमाया ॥

गुरु आए मन मन्दिर बनया, सहज ही पूजा जागी ।

योग ध्यान सब सहजे प्रकटे, सहज ही सहज समाया ॥

अब मनवा आनन्द मनावे, नाम रसायन पावे ।

करत क्रिया अलमस्त होय कर, अमृत रस बरसाया ॥

तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, कृपा तुम्हारी पाई ।

गई वासना, अनत हुआ मन, अनुभव रामहि पाया ॥

(७८)

गुरु - राग काँफी ताल रूपक

हे मेरे गुरुदेव करुणा कर के अपना लीजिए ।

शरण में आया तुम्हारी, मुझको अपना लीजिए ॥

मैं विकारों में बंधा हूँ, कुछ भी कर पाता नहीं ।

सूझता मुझको नहीं कुछ, मुझको अपना लीजिए ॥

नाव डूबी जात मेरी, कोई माझी भी नहीं ।

दीन की विनती सुनो और, मुझको अपना लीजिए ॥

दीनानाथ दयाल तुम हो, न कठिन तुमरे लिए ।

किसको पुकारूँ मैं भला, मुझको अपना लीजिए ॥

तुमने अनेकों जीव तारे, मुझको भी तारो प्रभु ।

मैं शरण में आ गया हूँ, मुझको अपना लीजिए ॥

है विनय शिवोम् की, मन में समर्पण भाव हो ।

मार दो या तार दो, जैसी खुशी हो कीजिए ॥

(७९)

गुरु - राग खमाज ताल-धुमाली

संत का सारा जग परिवारा ।

मित्र शत्रु न कोई उसका, न कोई कुविचारा ॥

सगले शिष्य हैं पुत्र समाना, न कोई निज का बेटा ।

एक समान सम प्रेम सभी से, करे एक सम प्यारा ॥

ऐसा संत है रूप प्रभु का, सब जग अपना जाने ।

रोग शोक भय क्रोध न राखे, इन सब ही से न्यारा ॥

तीर्थ शिवोम् जो ऐसा पूरा, सदगुरुदेव मिले जो ।

धन्य भाग हैं जन सुखियारा, हो जाए निस्तारा ॥

(८०)

गुरु- गण मिश्र पीटू ताल- भजनी ठेका

मेरा भाग जागा, गुरु मैंने पाया ।

गयी छूट भटकन की, साधन है पाया ॥

मिली मुझको किरपा, कृपा से गुरु की ।

यह अन्तर को मनवा कि, मुड़ अब है पाया ॥

रहा उलझा जग में, हूँ धूमा मैं दर दर ।

नहीं अब तलक था, कोई चैन पाया ॥

यह दिन आया ऐसा, दर्शन मिले हैं ।

गुरु मेरे सन्मुख, परगट हो के आया ॥

हुआ तृप्त मन है, साधन मिला है ।

मिली अपनी मन्जिल, सभी कुछ है पाया ॥

कि शिवओम् अब है, शरण में गुरुवर ।

कृपा मुझ पह ऐसी, प्रभु मैंने पाया ॥

(८१)

गुरु - गण यमन कल्याण ताल-त्रिताल

धन्य धन्य गुरुदेव हमारे, पावन चरण परम हितकारे ।

परम पुरुष दातार, अनूठे, दीन जनन करते उपकारे ॥

धन्य वे माता, धन्य पिता वो, धन्य देश नगरी परिवारा ।

जा अवतार अलौकिक धारा, तन मन ताहीं पर सब वारे ॥

धन्य गुरु ऐसा शिष कीना, धन्य गंग जहां साधन कीना ।

धन्य धरत जहां वासा कीना, धन्य जननन सब ही कर डारे ॥

धन्य हुआ मैं किरपा मो पर, धन्य तुम्हारी कृपा अहैतुक ।

मो सम नीच अभागे मानव, नैया सबकी पार उतारे ॥

तीर्थ शिवोम् मैं वारी जाऊं, माथा आगे गुरु नवाऊं ।

रखियो शरण प्रभुजी मोरे, चरण कमल राखूं उर धारे ॥

(८२)

गुरु - राग यमन ताल - धुमाली

परम पियारा सद्गुरु देवा ।

भक्तन अर्थ अमंगल हारी, परम दयाला सद्गुरु देवा ॥

शिव स्वरूप शक्ति के दाता, मन निर्मलता मुक्ति प्रदाता ।

शरणागत वत्सल हितकारी, परम कृपाला सद्गुरुदेवा ॥

जय दुख हर्ता, जय सुख कर्ता, जय शत्रु संहारण करता ।

जय हो तुमरी जय हो प्रभुजी, जय प्रतिपाला सद्गुरु देवा ॥

मैं हूँ शरण तुम्हारी गुरुवर, चरण कृपा बरसावो मुझ पर ।

मिथ्या ज्ञान त्याग चरणों में, हूँ विलीन मैं सद्गुरु देवा ॥

आशा अन्य न मन में कोई, केवल तुम ही लक्ष्य बने हो ।

केवल तुम ही एक सहारा, केवल तुम ही सद्गुरु देवा ॥

तीर्थ शिवोम् विनय कर जोरे, दास अर्किंचन सेवक तुमरा ।

मुझको कहीं भुला न देना, परम प्रतापी सद्गुरुदेवा ॥

(८३)

गुरु - राग-कलावती ताल-केहरवा

गुरु कृपा ! फिर डरना क्या रे ।

जग बंधन जब छूट गया तो, जन्म कहां और मरना क्या रे ॥

टूट गया जब नाता सब से, फिर कोई न संगी साथी ।

जग में खाता बन्द हुआ जब, लेना क्या और करना क्या रे ॥

भोग तेरे सब छीन हुए जब, मन तब विषयन जात नहीं है ।

फिर भोगों की उलझन कैसी, रखना क्या और धरना क्या रे ॥

जब मन है अन्दर में पलटा, भूख नहीं इन्द्रिन को कुछ भी ।

सूख गया विष सारा तब ही, पीना क्या और भरना क्या रे ॥

कृपा बिना भवसागर कोई, नहीं उतरता पार कभी भी ।

नज़र हुई जब देव गुरु की, पार हुए फिर तिरना क्या रे ॥

तीर्थ शिवोम् दया गुरुवर की, नदी लंघावे दीन जनों को ।

कृपा अनत का सेतु पाया, लांघ गए फिर गिरना क्या रे ॥

(८४)

गुरु- शग मिश्र पीलू ताल - दादरा

कहां खोजूं मैं राम को जाए, घट-घट माहिं लखा न जाए ।

कण-कण में है रोम-रोम में, व्यापक राम पकड़ न आए ॥

खोजत - खोजत ज्ञानी ध्यानी, यत्र करत सब ही थक हरे ।

पता ठिकाना किसे न पाया, कुछ भी मारग समझ न पाए ॥

राम अनन्त है अलख अनूपा, इन्द्रिन वहां पहुंच न पाए ।

जीव रहा माया में उलझा, घर को कैसे खोज वह पाए ॥

मंदिर देखे तीरथ न्हाए, पुस्तक के पन्ने पलटाए ।

अंदर राम मिले क्यों बाहर, विरथा जीवन दिवस गवाए ॥

चंचल मनवा राम न खोजे, फिर-फिर वह विषयन को धाए ।

सद्गुरुदेव करे जो किरपा, वह ही बेड़ा पार लगाए ॥

तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, तुम बिन रस्ता कौन दिखाए ।

जग में एक तुम्हीं को देखा, जो बिगड़ी को देत बनाए ॥

(८५)

गुरु - शग - मिश्र तिलक कामोद ताल-धुमाली

गुरु- वाणी भव बंधन काटे ।

अमृत रस जो पान करे है, ताकी दुविधा नाठे ॥

सीधे जात है हृदय गगन में, नाशे मल माया को ।

निर्मल हिरदय प्रेम भाव मन, कर्म सभी ही फाटे ॥

यह वाणी है अजब अनूठी, पार न इसका कोई ।

माया परदा दूर करे है, हरदम झलक विराटे ॥

तीर्थ शिवोम् सुनी मैं वाणी, मन आनन्द भया ।

आशा तृष्णा दूर हुई सब, अन्तर सब भ्रम हाटे ॥

(८६)

गुरुदेव - राग-सूर मल्हार ताल-केहरवा

गुरु मोहे घर में दर्शन दीनों।

विपदा मोरी सब हर लीनो, मन में ही सुख दीनों॥

अन्तर परगट गुरु भया है, मन आनन्द घना है।

तत्व नित्य के दर्शन पाए, गुरु अवतार है लीनो ॥

गरजन तरजन बिजली चमके, नाद अनेकों परगट ।

किरिया होवत भान्त भान्त की शक्ति चेतन कीनो ॥

जग का ज्ञान दिया बिसराए, मनवा अन्तर कीनो ।

जग से अब क्या लेना देना, ऐसा मो कर दीनो ॥

गुरु आए, मन हुआ आलोकित, तम है बाहर भागा ।

अब तो गुरु विराजे अन्तर, दीप उजागर कीनो ॥

तीर्थ शिवोम मेरे गुरुदेवा, बलिहारी मैं तेरी ।

भव जल में तो डूब रही थी, मुझे पार कर दीनो ॥

(८७)

गुरुदेव - राग - भीमपलास ताल - दादरा

गुरुवर यह ही विनती तुमसे, विलग कहीं न कर देना ।

मनवा हरदम तुमरे माहीं, मुझको नहीं भुला देना ॥

हिरद वास सदा ही तेरा, तेरा ध्यान नहीं भूलूँ ।

सेवा में ही बनी रहूँ मैं, ऐसा मुझको को वर देना ॥

तड़पत तेरे बिना है मनवा, जैसे मछली नीर बिना ।

जब भी ध्यान धरूँ मैं तेरा, उसी समय दर्शन देना ॥

जीवन में हूँ एक अकेली, कोई संग न साथ मेरे ।

एक सहारा तुमरा गुरुवर, छोड़ मुझे तुम न देना ॥

जग विषयन आकर्षित करते, देर न लगती गिरने में ।

मुझे सम्भाले रखना प्रभुजी, मुझे सहारा तुम देना ॥

जग ने परे हटाया मुझको, सेवा न मैं कर पायी ।

जीवन डोर तुम्हारे हाथों, न तुम दूर हटा देना ॥

है शिव ओम् करत विनय मैं, रखना सदा ही चरणो में ।

हूँ मैं दासी जनम जनम की चरण-शरण मोहे देना ॥

(८८)

गुरुदेव - यग-कलावती ताल-धुमाली

हे मेरे गुरुदेव, अब मैं आ गया हूँ, आ गया हूँ ।

मैं हूँ अपराधी तेरा, दरबार तेरे आ गया हूँ ॥

मैं रहा भूला तुझे, और कर्म संचित हैं किये ।

कर ने अपने मन को दूषित, दर तेरे मैं आ गया हूँ ॥

काम अच्छा है न कोई साधना भी की नहीं ।

मन में लेकर वासनाएं, सामने मैं आ गया हूँ ।

दे सज्जा जो चाहे मुझको, या क्षमा कर दे मुझे ।

मानता हूँ गलतियों को, हाज़िरी में आ गया हूँ ।

अब तो मैंने कान पकड़े, हूँ मैं शर्मिन्दा बहुत ।

हो गया है जो था होना, क्या करूँ? अब आ गया हूँ ॥

मैं रो रहा, पछता रहा हूँ, रगड़ माथा दर तेरे ।

दी गवां विरथा ही मैंने, काला मुह ले आ गया हूँ ॥

अब सिवा शिवओम् तेरे, है नहीं अपना कोई ।

रखने तेरे सामने अब, ज़िन्दगी को आ गया हूँ ॥

(८९)

उद्घोषण - यग- शुद्ध कल्याण ताल - धुमाली

बना हृदय है कैसा दर्पण, केवल जग ही दीखे है ।

आतमराम तो दीखत नाहीं, केवल मिथ्या दीखे है ॥

प्रतिविम्बित होता जो आतम, पर वह दीखत है नाहीं ।

मलिन चित्त आवरण बना है, आतम राम न दीखे है ॥

आतमराम सदा परकाशित, मल निर्मल हो मन कैसा ।

निर्मल मन ही में वह अनुभव, तब ही वह तो दीखे है ॥

साधन से आतम न मिलता, केवल मन निर्मल करता ।

निर्मलता कारण ही साधन, निर्मलता में दीखे है ॥

तीर्थ शिवोम् गुरुजी मोरे, निर्मल मोहे कर दीजो ।

अन्तर आतम राम प्रकाशित, अन्दर बाहर दीखे है ॥

(९०)

गुरुदेव - गण-विलासस्थानी टोड़ी ताल-कैहरवा

गुरु वचन मन सहज समावे।

प्रभु प्रेम हिरदय के माहीं, जग में नहीं भ्रमावे ॥

मनमुख का मन जग में जाए, तृष्णा बहुत भगाए ।

जो लागे सद्गुरु की शरणी, भव से पार वह जावे ॥

गुरु वचन हरि दरस कराए, माया मोह हटाए ।

निर्मल मनवा होत तभी है, सद्गुरु चरणीं जावे ॥

सद्गुरु शब्द अमोलक वस्तु, रोगी लाभ कमावे ।

भव का रोग कटत है उसका, धाम हरि के जावे ॥

तीर्थ शिवोम् हे सद्गुरु मेरे, मैं हूँ तेरी शरणीं ।

भ्रम काटो भव पार कराओ, दुविधा सब ही जावे ॥

(९१)

गुरुदेव - गण-नट विलावल ताल - त्रिताल

श्री गुरु तृष्णा अगन बुझाई ।

मन निर्मलता सद्गुरु दीनी, हरि चरनन लिव लाई ॥

गुरु ही नाम अलौकिक दीना, चेतन शक्ति जाग्रत ।

स्वयं सिद्ध किरियाएं होती, मन भक्ति प्रकटाई ॥

अगन वासना में संसारा, धधके ज्यों वन अग्नि ।

गुरु नाम ही रक्षक होता, अगनी दे निपटाई ॥

गुरु प्रकाशे, अन्तर ज्ञाना, गुरु मारग दिखलाए ।

गुरु से ही निज घर प्राप्त हो, बंधन देत छुड़ाई ॥

गुरु देता भक्ति भंडारा, मन आनन्दित होता ।

सारा जग मिथ्या परकाशित, दे आवरन हटाई ॥

तीर्थ शिवोम् गुण गाए गुरु के, फल किरिपा का पाया ।

मन चंचलता दूर हुई सब, तृष्णा अगन बुझाई ॥

(९२)

गुरुदेव - राग खमाज ताल - शुभाली

हे दाता हे मेरे प्रभुजी, मात पिता तुम स्वामी ।

शरण तुम्हारी आई गुरुवर, पत राखो हे स्वामी ॥

दीन हीन अज्ञानी मन हूँ, सोच समझ न पाती ।

जाना कहां किधर को जाना, जान न पाऊं स्वामी ॥

तुम सर्वज्ञ विधाता जग के, पालनहार हो सबके ।

पकड़े चरण तुम्हारे मैंने, कृपा करो हे स्वामी ॥

जग में तड़प रही हूँ निसदिन, मैं हूँ छूट न पाती ।

मुझे छुड़ाओ, मुझे बचाओ, दयाशील हे स्वामी ॥

मन से बहुत मलीन हुई हूँ, पापिन नीच कुकर्मी ।

तुम ही एक सहारा प्रभुजी, हे मेरे प्रभु स्वामी ॥

तीर्थ शिवोम् दया की मांगू, भीख मैं फैला झोली ।

प्रेम दान चरणों में दीजो, दीन जान हे स्वामी ॥

(९३)

गुरुदेव - राग खमाज ताल - शुभाली

मात पिता तुम ही स्वामी हो, हे मेरे गुरुदेवा ।

तुम हो प्राण अधारा प्रभुजी, हे मेरे गुरुदेवा ॥

भगवद् रूपा तुम हो गुरुजी, ज्ञान की धारा तुम हो ।

तुम हो अलख अलेप अनन्ता, हे मेरे गुरुदेवा ॥

जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुम हो, तुम ही तो तुर्या हो ।

तुमरी कृपा ही शक्ति जाग्रत, हे मेरे गुरुदेवा ॥

तुम सर्वज्ञ अरूपा स्वामी, शक्ति ज्ञान प्रदाता ।

मुझ पर भी हो किरपा तेरी, हे मेरे गुरुदेवा ॥

मेरा बेड़ा पार लगाओ, अर्पण सभी तुम्हें है ।

मैं दासी तेरे चरणों की, हे मेरे गुरुदेवा ॥

तीर्थ शिवोम् तुम्हीं हो मेरे, दाता सर्व प्रदाता ।

पार करो प्रभु नैया मोरी, हे मेरे गुरुदेवा ॥

(९४)

गुरुदेव - राग - कलावती ताल-धुमाली

सजना साहिब सतिगुरु पाए ।

बड़ी कृपा है मो पर कीनी, मेरे घर हो परगट आए ॥

दर्शन पाए हिरदय शीतल, अन्तर नयन अति सुख पाए ।

चहूं दिशा आनन्द समाया, निजानन्द को आ प्रगटाए ॥

क्लेश मिटे मन हुआ प्रकाशित, मोहे आ हरि नाम सुनाए ।

अन्तर चेतनता आलोकित, मोरे आकर कष्ट मिटाए ॥

सखियां मंगल गीत हैं गावत, दृश्य अलौकिक हैं दर्शाए ।

शोक मोह मद विगत भाए हैं, मन में आ समता दिखलाए ॥

दृष्टि बदल गई अब मोरी, मन तो हरदम ही हर्षाए ।

रहत बना वह मस्त प्रतिपल, जीव ब्रह्म को एक कराए ॥

तीर्थ शिवोम् हे सदगुरु देवा, धूली चरण हूँ तेरी चेरी ।

मैं क्या थी, मो क्या कर दीना, दिया ससीम असीम बनाए ॥

(९५)

गुरुदेव - राग बिलावत ताल - प्रिताल

सतिगुरु आतम सुख का दाता ।

तम का नाश होत मन तन में, ज्ञान लोक पर दाता ॥

जीव रहे जागत जग माहीं, तो ही लिपटा माया ।

मद में मनवा चूर है रहता, बनता अन्न प्रदाता ॥

मानत सुख माया के अन्दर, ता ही चंचल रहता ।

मोह का फन्दा गल में पड़या, रहता पाप कमाता ॥

जन्म लेत आशाएं लेकर, आशा में मर जाता ।

उलझा रहे जगत के माहीं, पर वह हरि न गाता ॥

गुरु कृपा जब तक न होवे, कैसे नाम कमावे ।

चेतन नाम बिना यह जिवडा, नाहीं मुक्ति पाता ॥

तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, राखो शरणी अपनी ।

पापी मूढ अकिञ्चन बालक, कुछ भी समझ न पाता ॥

(९६)

गुरुदेव - राग - बागेश्वी ताल-धुमाली

गुरु का ज्ञान गुरु आराधे, जग में ज्ञान न होई ।

गुरु ही जग में ज्ञान का सागर, जग तो दुविधा होई ॥

जो चाहे तू राम को पाना, गुरु ही उसका साधन ।

गुरु का ध्यान राम को पावे, राम मिलन है होई ॥

गुरु राम में अन्तर नाहीं, राम ही गुरु कहावे ।

गुरु का हाथ पकड़ जो चाले, राम दुआरे होई ॥

मूरख मनवा जग को धावे, चरण गुरु न पकड़े ।

जा ध्यावे है मुक्ति होवे, अन्तर आनन्द होई ॥

तीर्थ शिवोम् मिले गुरु पूरा, जावे सकल दुखेरा ।

होए मुक्त जगत छुटकारा, लीन प्रभु वह होई ॥

(९७)

गुरुदेव - राग - शुद्ध कल्याण ताल-केष्ठवा

सर्व सुखों का सद्गुरुदाता ।

सार सम्भाल करे भक्तन की, ज्यों बालक की करत है माता ॥

गुरुचरण की सेवा से है, मन आनन्दित होता ऐसा ।

भक्तन के हिरदय को सुखमय, करत हैं जैसे श्री रघुनाथा ॥

गुरु सहारा मिलता जन को, विपदा आन पड़े कैसी भी ।

जैसे कोई सुख को पाता, वर्षा में ज्यों सिर पर छाता ॥

मनवा जावे और कहीं न, कैसी भी हो विषय वासना ।

एक कामना, एक सहारा, गुरु चरण ही मन को भाता ॥

पूज्य यही बस गुरु चरण हैं, सब देवों के एक ही देवा ।

एक गुरु ही सभी देव है, नाम गुरु ही रहता गाता ॥

तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, शरण तुम्हारी एक भरोसा ।

एक तुम्हीं मेरे परमेश्वर, मनवा और कहीं न जाता ॥

(९८)

गुरुदेव - राग - देस ताल-ध्याती

माया मोह रहा था भटकत, जनम सफल गुरु कीना ।

जग जंजाल हटाया मोहे, प्रभु चरणों कर दीना ॥

जग छुटकारा कठिन था भारी, सकत न होय मो से ।

सदगुरुदेव किया उपकारा, प्रकट सार जग कीना ॥

तम छाया अज्ञान भरा था, सूझत नहीं था मुझको ।

कर किरपा गुरुदेव ने मो पर, अंजन ज्ञान का दीना ॥

सार राम ही है जीवन का, ज्ञान नहीं था मोहे ।

राम बिठाया अन्दर मोरे, राम रंग रंग दीना ॥

धन्य गुरु है किरपा दृष्टि, धन्य तुम्हारी करनी ।

तीर्थ शिवोम् राम रंग रंगया, अतुल अनुग्रह कीना ॥

(९९)

गुरुदेव - राग - तिलक कामोद ताल-केरहवा

जब मिला गुरुदेव से, था प्रेम मन में छा गया ।

जग से हुआ उपराम मैं, था राम मन में भा गया ॥

बार बार गुरु चरण पङ्कू मैं, माथा द्वारे टेकूं ।

मन हुआ आनन्द ऐसा, दुख जगत को खा गया ॥

मैं बलिहारी सदगुरु देवा, शरण तुम्हारी पा सुख पाया ।

करो कृपा इस दीन हीन पर, अब मैं नहीं भरमा गया ॥

गुरुचरण नित रोज पखाँ, दर्शन पाय मैं धन्य मनावा ।

अब तो आस तेरी गुरुदेवा, मन श्री चरण में आ गया ॥

तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, दर्शन नित्य करूं मैं तेरा ।

मैं पापी मैं नीच घमण्डी, दर तेरे पर आय गया ॥

(१००)

विश्व शग - गङ्गा केदार ताल धुमाती

तड़पूं रोऊ शोक मनाऊं, प्रियतम दर्स न पाया ।

रो रो हाल बुरा है मेरा, प्रियतम अजहूं न आया ॥

अवगुण कारण मेरा साजन, मुझसे बिछुड़ गया ।

इसमें दोष प्रभु का नाही, मन मेरा भरमाया ॥

साजन मेरा सबका स्वामी, पर मैं कदर न जानी ।

जो बीता जोबन मेरा, हृदय मोर पछताया ॥

सुख न किसे बिना साजन के, सुख प्रियतम के सेजे ।

मनवा तो भरमाया जग में, पर सुख मिल न पाया ॥

कृपा तेरी जो प्रियतम मोहे, तो ही मिलन मैं पाऊं ।

नहीं तो सिसक सिसक रह जाऊं, पर प्रियतम न पाया ॥

तीर्थ शिवोम् है मारग पतला, सूना संग अंधेरा ।

कैसे जाऊं कैसे निकलूं, कृपा बिना नहीं पाया ॥

(१०१)

विश्व - शग-विहान ताल-केहरवा

मैं बिछुड़ गई, मैं बिछुड़ गई, मैं प्रियतम प्यारा बिछुड़ गई।

मैं राम को अपने भूल गई, प्रियतम प्यारे से छिटक गई ॥

मैं कैसी कुलटा नारी हूं, जो मन है भोगत जात रही ।

वह हटत नहीं है विषयन से, प्रियतम प्यारे से बिदक गई ॥

अब विषय सतावत हैं मोहे, भोगन विषयन दुख मानत हूं ।

पर भोगन पीछा छोड़त न, मैं भोगन माहीं उलझ गई ॥

मन मेरा अपना है निर्बल, भोगन का दोष नहीं इसमें ।

मन मेरा जात खिंच भोगन ताई, मैं मन निर्बलता पिसत गई ॥

शिवओम् प्रभुजी टेर सुनो, मन विषयन हटत नहीं मोहे ।

इक तेरी शरण सहारा है, हूं जग भोगों में फिसल गई ॥

(१०२)

विरह - यग-यगेश्वी ताल - धुमाली

प्रियतम मुझे लगाओ अंग ।

तङ्ग परही हूँ मिलन को तेरे, करना चाहूँ संग ॥

सेज तुमारी का सुख भोगूँ, प्रियतम साथ बिहारूँ ।

प्रेम पाश में बंधी रहूँ नित, पड़े न कोई भंग ॥

गहर गम्भीरा हे प्रियतम जी, मो पह रंग चढ़ाओ ।

रंगी रहूँ बस रंग रंग में, कभी न हो बदरंग ॥

मैं तेरी हूँ प्रियतम मोरे, मो को गले लगाओ ।

सिमटत जाऊँ पाश में तेरे, जुड़े अंग से अंग ॥

मनवा रहे समाया तुझमें, दूजी ठौर न जाए ।

सेज तुम्हारी निश्चित, मनवा रहे अंग के संग ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभु मतवारी, विनय पुकारत तोहे ।

चंचल जगत भरोसा नाहीं, मिथ्या ता का संग ॥

(१०३)

विरह - यग - मारवा ताल - केहरवा

प्रभु मोहे प्रियतम रूप दिखावो ।

तृष्णा तेरे प्रेम की मन में, वर्षा प्रेम करावो ॥

प्रेम स्वरूपा प्रभुजी मेरे, मैं हूँ प्रेम की प्यासी ।

दर्द दिखाओ मोहे अपना, हिरदय पीर मिटावो ॥

विषय वासना मन से जाय, प्रेम तेरा परगट हो ।

नाम जपूँ और दर्शन पाऊँ, दीपक प्रेम जलावो ॥

हरदम प्रेम भरा हो अन्तर, मन वाणी कर्मों में ।

बिना प्रेम हो भाव न दूजा, ऐसा भाव जगावो ॥

सब जग देखूँ रूप तुम्हारा, हिरदय प्रेम हो छाया ।

सब नारिन को माता देखूँ, तृष्णा भाव हटावो ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभु हे मेरे, होत कृपा बिन नाहीं ।

मुझ पर तेरी एक नज़र हो, आतम दीप जलावो ॥

(१०४)

विश्व - गण आसावरी ताल - केहरवा

तन में, मन में, लगन लगी है, पी घर वापिस आए।

कहाँ गयो है साजन मेरा, आ के दर्स दिखाए ॥

साजन मेरा एक जगत में, दूजा ता सम नाहीं ।

अपना मुख दिखलाए मोहे, शीतलता बरसाए ॥

कौन देश को गमन है कीना, कहाँ छुपा वह बैठा ।

कौन गली में घर है कीना, डेरा लिया जमाए ॥

तुमने देखा, उसने देखा, पूछत फिरू मैं सबसे ।

कौन बताए मारग पी का, मारग कौन है जाए ॥

तीर्थ शिवोम् है मेरे साजन, कब लौं जलूं, कुदूँ मैं ।

आकर दरस दिखाओ मोहे, मन तृसि हो जाए ॥

(१०५)

विश्व - गण-विहान ताल- दीपचन्द्री

मैं बुलाती रह गई, पर रुठ कर तू चल दिया ।

छोड़कर मुझको अकेली, रुठ कर तू चल दिया ॥

तरस तुझको है नहीं, कि क्या दशा मेरी हुई।

मैं तड़पती रह गई, पर रुठ कर तू चल दिया ॥

अब तो मैं हूं और तेरा, जग यह मेरे सामने ।

तू नज़र आए कहीं न, रुठ कर तू चल दिया ॥

क्या गिला मन में है तेरे, क्या शिकायत है तुम्हें ।

कुछ बता मुझको सही तो, रुठ कर तू चल दिया ॥

मैं रही शिवओम् हूं, तुमको बुलाए हे प्रभु ।

आ भी जाओ, मान जाओ, रुठ कर तू चल दिया ॥

(१०६)

विरह - यग - मदमाट सारंग ताल - केरहवा

मैं बैठी हूँ सेज बिछाए, साजन अजहूँ न आए।

सूनी सेज पिया बिन मोरी, दर्स नहीं हो पाए ॥

फूल गए मुरझाए अब तो, चादर भई है मैली ।

रस्ता देखत भीगे नयनां, हृदय रहत अकुलाए ॥

बीता सावन गई बहारें, भंवरे गूंज समेटी

हरियाली अब निकल गई है, लौट न साजन पाए ॥

खोल द्वार मैं रही निहारत, चाप सुनत पद नाहीं ।

धड़कत हिरदय अंगवा शीतल, पी बिन मन घटि जाए ॥

आओ प्रियतम मोरे प्रियतम नयन बिछाए रहत हूँ।

मान भी जाओ वापिस आओ, यौवन विरथा जाए ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, देखूँ राह तेरा ही ।

आओ दर्शन दीजो मोहे, मो अब रहा न जाए ॥

(१०७)

विरह - यग - चारकेशी ताल - धुमाली

अंग अंग है तड़पत मोरा, दर्शन राम मिले न ।

हिरदय पीड़ा उठत निरन्तर, आए प्रभु मिले न ॥

ढूंडत कभी हृदय के अन्दर, कबहूँ बाहर भटकत ।

अजहूँ पिया मिले न मोहे, कुछ संकेत मिले न ॥

मन्दिर खोजत तीरथ भटकत, भटकी द्वारे द्वारे ।

हुई दीवानी पीय बिना मैं, मारग पीव मिले न ॥

नाक पकड़ कर सांस मैं रोकूँ, अन्तर ध्यान लगाऊ ।

है जग हंसे, नाम धरे वह, लांछन बहुत लगाए ॥

जतन अनेकों पी मिलने को, अजहूँ राम मिलेन ।

दर दर ठोकर खाय रही मैं पीव प्रसाद मिले न ॥

तीर्थ शिवोम् हे प्यारे प्रीतम काहे मुझे सताओ।

मैं तो तड़पत हूँ बिन तेरे, तुम ही आन मिले न ॥

(१०८)

विश्व - यग काफी तात-केहरवा

गए जब वन के माही, प्राण क्यों निकलत नाही ।

भया कठोर है ऐसा मनवा, क्यों वह पिघलत नाहीं ॥

राम गयो मन चैन गया, अच्छा न कछु लागे।

सूखे नयनां न मन लागे, तडपत पल पल माहीं ॥

मैं तो रह गई यहीं तडपती रह गई विनय करत ही ।

एक सुनी विनती न मोरी, निकल गयो छिन माही ॥

अब तो मनवा लागत नाहीं, राम हि रहत निहारत ।

कौन घड़ी वह वापिस आए, यहीं सोचत मन माहीं ॥

तीर्थ शिवोम् मेरे रघुवीरा, टेर सुनो अब मोरी ।

बीती जाए वृथा उमरिया. जो तुम आए नाही ॥

(१०९)

विश्व - यग- बंगाल भैरव तात - ऋषक

मैं मनाए जा रही हूं, तू रिसाए जा रहा।

क्या करूं अब मैं तेरा, कुछ भी समझ न आ रहा ॥

साधनाएं की अनेकों, जतन भी मैंनें किए ।

पर पसीजा तू न अब तक पकड़ में न आ रहा ॥

तू तो रिसया ऐसा बैठा, मुहं छुपाए जात है।

क्या भयी है भूल मेरी, जो नज़र न आ रहा ॥

अब तेरे बिन है मुझे, कुछ भी तो अच्छा न लगे ।

तू मेरा जीवन बना है, तरस है न आ रहा ॥

इक तरफ छोड़ा जगत न, बेरुखी दूजे खड़ी ।

क्या करूं ऐसे मैं मैं, यह समझ मैं न आ रहा ॥

शिवओम् मैं बैठी बनी, लाचार हूँ तेरे बिना ।

देख ले तू इक नज़र ही, चैन मन न आ रहा ॥

(११०)

विश्व - राग - माल्बिहान ताल-धुमाली

प्रीतम की राह निहारूं, प्रितम नज़र न आए।

मन में शंका यह भारी, कहीं वह भूल न जाए ॥

बेपरवाह बना है प्रीतम, राग मोह कद्दू नाहीं ।

उस पर कोई असर नहीं है, चाहे कुछ हो जाए ॥

लाख करोड़ हैं चाहने वाले, कमी न उसको कोई ।

पर मुझको तो एक है प्रीतम, छोड़ कहीं न जाए ॥

हर मन में हर तन में रहता, कण कण खेला करता ।

सर्व नियन्ता हो कर भी वह, कहीं नज़र न आए ॥

धीर धरो हे मेरे मनवा, प्रीतम कभी तो आए ।

धीरज का फल विरथा नहीं, प्रीतम मिल ही जाए ॥

तीर्थ शिवओम् प्रभुजी मोरे, जनम जनम की दासी ।

रहत खड़ी मैं रस्ता देखूं, कब हो दर्शन पाए ॥

(१११)

विश्व - राग तिलक कामोद ताल - दीपचन्दी

मन में जो आशा करी, अब तक अधूरी रह गई ।

राम का दर्शन न पाया, मन की मन में रह गई ॥

क्या क्या किया है मैंने, पाने प्रभु के मिलन को ।

काम पुरुषारथ न आया, मन की मन में रह गई ॥

मैं न छोड़ा कोई साधन, भटकता दर दर फिरा ।

पर मिलन तो हो न पाया, मन की मन में रह गई ॥

जो सुना कुछ भी पढ़ा, करता जतन मैं सब रहा ।

मन मेरा माना न कुछ भी, मन की मन में रह गई ॥

अब मेरे गुरुदेव तू ही, कर कृपा इस दीन पर ।

अब तलक पूरी हुई न, मन की मन में रह गई ॥

तीर्थ हे शिवओम् मैं, पापी कुकर्मी नीच हूं ।

नज़र जब तक हो प्रभु न, मन की मन में रह गई ॥

(११२)

राम विरह - यग बिलासख्यानी ताल-केहरवा

अवध में तड़पत भरत रहा ।

हिरदय धारण रूप राम का, जीवन कटत रहा ॥

पल पल छिन छिन विरह सतावे, मनवा चैन न पावे ।

फिर भी सेवा - राम समझ कर, नाहीं हटत रहा ॥

रह कर के भी बीच अवध के, रहा बना बनवासी ।

स्वामी जैसा वेश बनाया, सब सुख झटक रहा ॥

सेवा करते ध्यान निरन्त, र यही साधना मारग ।

राम राम का नाम सतत ही, पल पल रटत रहा ॥

क्रिया रूप में दिया दिखाय, रस्ता जो साधन का ।

सेवा समझे कर्म करे जो, जग को पटक रहा ॥

तीर्थ शिवोम् भरत हे भैया, सदा तुम्हारी जय हो ।

किया उजाला जग में तूने, जो तम भटक रहा ॥

(११३)

राम विरह - यग- जोगिया ताल - केहरवा

नाम बिन दुखिया हर कोई ।

युवा कोई हो बूढ़ा, जिसको देखो वो ही ॥

राम हुए बनवासी जबसे, हुई अयोध्या सूनी ।

पत्ता पत्ता गौएं सब ही, जिस को देखो वो ही ॥

भरत दुखी विरह की पीड़ा, बना वेश वैरागी ।

मात कौशल्या रूप वत्सला, जिस को देखो वो ही ॥

पतित्रता का रूप उर्मिला, मन विचलित है भारी ।

पशु पक्षी और मानव सब ही, जिसको देखो वो ही ॥

चौदह वर्ष की लम्बी अवधी, काली रात भयानक ।

अंधकार में डूबी नगरी, जो देखो सो वो ही ॥

तीर्थ शिवोम् दुखी मन ऐसा भया अवध में सबका ।

पल भर चैन किसी को नाहीं, जिसको देखो वो ही ॥

(११४)
विश्व - शग-पीतू ताल-केहवा

प्रभु जी ! जियड़ा कैसे लागे ।

तुम तो मोहे नहीं निहारत, मनवा तुमहिं भागे ॥

मन में तो तुम एक समाए, दूजा भाए नाहीं ।

तुमरे दर की आस है पकड़ी, ठौर ठौर कहां भागे ॥

तुम ही दीन दयाला प्रभुजी, तुम ही राखन हारे ।

राम दुहाई मेरे प्रियतम, तुम से नेह लगो है ॥

एक ही साजन, एक ही अपने, एक छोड़ कहां भागे ।

अब तो सुन लो विपदा मोरी, विरहा तोर सताए ॥

हरदम तुमरे ही मन लागा, अब तक नयन अभागे ।

मैं तो नारी, दुख की मारी, तुमरे ही दर भागे ॥

तीर्थ शिवोम् शरण मैं तोरी, छोड़ कहां, कहां मैं जाऊं ।

आश सभी तुम ही पह मोरी, और नहीं मन भागे ॥

(११५)

कृष्ण विश्व - शग-कलिंगड़ा ताल-केहवा

शाम बिन गोकुल भया उजाड़ ।

पंछी तो मथुरा जा बैठा रह गए खुले किवाड़ ॥

भई उदासी गोपिन सब ही, नयनन अविरल धारा ।

छोड़ हमे क्यों गयो कन्हाई, हम सो कौन बिगाड़ ॥

अब तक शाम बनो था सन्मुख, रहत निहारत ताको

अब तो लियो छुपाए हम सो करत रहा खिलवाड़ ॥

शाम गयो सब सूख गयो है, मुरझाई सब बेले ।

घास फूल और तरुवर सब ही, दीखत हरा न झाड़ ॥

राह चलते जल-मटका फोड़े, माखन दही चुराए ।

चीर हरेगा कौन हमारे, कौन दिखाए लाड ॥

तीर्थ शिवोम् हैं रोवत नयना, मनवा नयनन नाही ।

हो पाए न हम सो कुछ भी, गिरती खाए पच्छाड़ ॥

(११६)

विरह - गग पठाड़ी ताल - केहरवा

पिया गए परदेस, खड़ी मैं राह निहारूँ ।

न कोई संदेश, पड़ी मैं यही विचारूँ ॥

अटके कहाँ पिया जाए कर, सुध न लेत हमारी ।

मैं तो हरदम पी पी करती, पी को रहत पुकारूँ ॥

कह गए आवन, आए नाहीं, मन से मुझे भुलाया ।

मनवा तो पी बिन न लागे, ले ले नाम गुहारूँ ॥

जग विषयन तो काटे खाएं, बिच्छु डंक लगाएं ।

तड़पत रह जाऊं भोगों से, पी पर सब कुछ वारूँ ॥

कोई संत मिलाए प्रियतम, राह जो उसका जाने ।

ता संतन के वारी जाऊं, हिरदय वा को धारूँ ॥

तीर्थ शिवोम् सजन बिन मोहे, पल भर चैन न आवे ।

रोवत कलपत नीर बहावत, प्रियतम पंथ निहारूँ ॥

(११७)

विरह - गग-बिलासखानी ताल-केहरवा

काय करूँ ? प्रियतम नहीं मानत ।

पायं पड़त मनाय रही मैं, वह मन में नहीं आनत ॥

मैं तो कुटिल कुबुद्धि नारी, भूली पिया निरन्तर ।

अब तो मनवा पी सो लागा, नहीं दूसरा जानत ॥

साधन करूँ तपस्या भारी, पीया रीझे मोरा ।

अब लौं सफल मनोरथ नाहीं, जल को रही मैं छानत ॥

कोई बताए मारग मो को, क्यों कर पिया मनाऊँ ।

बिन पाए मन चैन न आए, यही हृदय में जानत ॥

तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुदेवा, शरण पड़ी ही तुमरे ।

देयो दिखाय पीया मो को, वह तो नहीं है मानत ॥

(११८)

शम विश्व - राजा- जोगिआ ताल-केहरवा

अवध में कब आएंगे राम ।

छोड़ भरत को एक अकेला, बन माहीं विश्राम ॥

राज काज को भरत संभाले, मान राम की सेवा ।

मन में जलती अगन विरह की, करता सब ही काम ॥

सेवक धर्म कठोरा सबसे, मुख से कद्दु न बोले ।

पीड़ा सहे हृदय में हरदम, छोड़े नाहीं काम ॥

हिरदय माहीं ध्यान राम का, हाथ राम की सेवा ।

कबहुं राम पधारें वापिस, देखत सुबह व शाम ॥

राम प्रभुजी दर्शन दीजो, करो अनुग्रह मो पर ।

दास पुकारे तुम को हर पल, ले ले तुमरा नाम ॥

तीर्थ शिवोम् भरत की सुन लो, चरणी अर्ज गुजारे ।

वेग करो प्रभु आवन की अब, मन पावे विश्राम ॥

(११९)

विश्व - राजा - भीमपलास ताल - दादरा

किस भूल पर हो रुठे, मेरे सलोने प्रीतम ।

तुमको रही मनाय, अब मान जाओ प्रीतम ॥

घर द्वार मैने छोड़ा, जग से है नाता तोड़ा।

तुम ओर मुंह मोड़ा, अब मान जाओ प्रीतम ॥

सब कुछ तुम्हीं मेरे हो, हिरदय में तुम बसे हो ।

आखों का नूर हो तुम, अब मान जाओ प्रीतम ॥

माना कि मेरे जैसे, तुमको हज़ार दूजे ।

पर एक तुम ही मेरे, अब मान जाओ प्रीतम ॥

तुमको रही बुलाए, मिन्नत रही मनाय ।

कर छोड़ सारे नखरे, अब मान जाओ प्रीतम ॥

शिवओम् मैं खड़ी हूं, देखूं तेरा ही रस्ता ।

प्रभु लाज रखना मेरी, अब मान जाओ प्रीतम ॥

(१२०)

विनय - यग मारु विहाग ताल - केष्ठवा

प्रभुजी आए संवारो काज ।

जगत अंधारे बीच पड़ी हूं, आओ बचाओ लाज ॥

चंचल छाया मन भरमाया, थिरता पल भर नाहीं ।

शरण तिहारी आई प्रभुजी, सुनिए हे गुरु राज ॥

मन लिपटा विषयन के माहीं, देखन देत तुम्हें न ।

वश में मनवा आवत नाहीं, गर्व का पहना ताज ॥

ध्यान तुम्हारा जब हूं करती, चंचलता है दुख देवत ।

अनुभव दृश्य विचार अनेकों, भोग करत है खाज ॥

तीर्थ शिवोम् हे मेरे प्रभुजी, कैसे माया छूटूं ।

तुम ही एक बचावन हारे, एक तुमी महाराज ॥

(१२१)

विनय - यग पहाड़ी ताल- दीपचन्दी

पार करावन हार हमारा ।

दीखत नाहीं हाथ देय है, भव निधि करे उतारा ॥

भक्तन सेती, माया अन्दर, लीला करत अनेकों ।

अनुभव देत अनोखे जन को, है वह अपरम्पारा ॥

दाता ऐसा हरि अनोखा, ता भण्डार अनन्ता ।

देत रहे पर खूटे नाहीं, करत जगत निस्तारा ॥

दीन दयाला मेरे प्रभुजी, मायातीत अनन्ता ।

भगती वर्षा कृपा हो मो पर, पड़ा हूं मैं अंध्यारा ॥

तीर्थ शिवोम् हे मेरे स्वामी, मो पर किरपा राखो ।

लगा रहूं नित चरणों माहीं, छोड़ जगत विस्तारा ॥

(१२२)

विनय - यग- मध्यवन्ती ताल केरवा

प्रभुजी मैं तो हार गयो ।

जतन बहु निर्मलता ताई, न कछु पार पयो ॥

कृपा विन न मेरे प्रभुजी, मनवा निर्मल होए ।

पच पच मरे कोई भी कितना हाथ कछु न पयो ॥

असुर अनेकों अन्तर माहिं, निकलत नाहिं मन से ।

जीत सका न एक भी इनमें, न तज हृदय गयो ॥

काय करुं अब मैं असुरन का, मो अब लड़ा न जाए ।

लड़ते लड़ते धीरज टूटा, थक हूं हार गयो ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, वेग करो अब आओ ।

अर्ज गुजारू, राह निहारूं चरणी आन पयो ॥

(१२३)

विनय - यग - आसा ताल केरवा

मन में भक्ति प्रेम हृदय में हाथ तेरी ही सेवा में

जीवन मेरा सफल तभी हो, मनवा हरदम सेवा में ॥

उठना सोना खाना पीना, सेवा विन कुछ न होवे ।

साधन कर्म सभी हो सेवा, मनवा हरदम सेवा में ॥

जाऊं जहां जहां मैं प्रियतम, ठहरू जहां जहां पर मैं ।

सेवा भाव रहे हिरदय में, मनवा हरदम सेवा में ॥

मेरे प्रियतम अन्तर्यामी, जानत सब मन में जो भी ।

कहूं तुम्हें क्या अपने मुख सों, मनवा हरदम सेवा में ॥

अर्पण जीवन प्रभु है तेरे, तूने ही जीवन दीना ।

तेरा दिया तेरे ही अर्पण, मनवा हरदम सेवा में ॥

तीर्थ शिवोम् हे मेरे साजन, सेवा दान मुझे दीजो ।

सेवा विन न मांगत कुछ भी, मनवा हरदम सेवा में ॥

(१२४)

विनय - यग - छायानट ताल-केहरवा

माधव आया तेरी शरणी ।

जग में कोई सार मिला न, अब हूं तेरी चरणीं ॥

मेरे मन तो गुण है नाहीं, कला न कोई विद्या ।

केवल एक सहारा तेरा, नहीं है कोई करणी ॥

मन्दिर देखे, तीरथ देखे, देखे नगर अनेकों ।

तुझसा मिला न कोई जग में, धूम फिरा सब धरणीं ॥

साधन ज्ञान नहीं है कुछ भी, पूजा भजन है नाहीं ।

कैसे उतरूं पार प्रभुजी, कैसे होगी मरणीं ॥

तीर्थ शिवोम् तेरा दर पकड़ा, तू ही प्रीतम मेरा ।

तुमरे द्वारे माथा रगड़ूं, पड़ा हूं तेरी शरणीं ॥

(१२५)

विनय - यग - काफी ताल- ठाठद्या

भूलनहार प्रभुजी मैं हूं, हे बेअन्त अनन्ता ।

गुण तेरे मैं कैसे गाऊं, हे असीम भगवन्ता ॥

सीमाओं में बंधा हुआ हूं, विषयों माहीं उलझा ।

बल विवेक न कोई मुझमें, गुणातीत बलवन्ता ॥

तुझसा तू है, तू ही तू है, दूजा नाहीं कोई ।

जिसे बुलाए वह ही आए, दूजा पहुंच न पाए ॥

कृपा बिना मैं कैसे पहुंचूं, दयावान गुणवन्ता ।

शक्ति हीन है जीव बेचारा, भटकत फिरे बेअन्ता ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मेरे, मैं हूं शरण तिहारी

कृपावन्त हो दीनहीन पर, पा जाऊं मैं अन्ता ॥

(१२६)

विनय- यग-भूप ताल-केहरवा

प्रभु जी, क्यों न करत मोहे नंगा ।

आतम रूप बनाया मो को, काहे कीनो गंदा ॥

माया काया जगत बनाया, जग में ही भरमाया ।

उलझत डूबत डूब गया मैं, होय गया मैं गंदा ॥

निर्मल मनवा मलिन बना है, संचित कर्म अनेकों ।

एक एक कर पहने कपड़े, चंगा बन गया गंदा ॥

तीर्थ शिवोम् कृपा से तेरी, परदे दूर घनेरे ।

मन निर्मलता आतम थिरता, हो जाऊं मैं नंगा ॥

(१२७)

विनय - यग-विलासखानी तोड़ी ताल-केहरवा

हे प्रभु ! अर्ज सुनो हमरी ।

द्वार तुम्हारे कब के ठारे, राह देखत तुमरी ॥

कब के द्वार पड़े हैं तुमरे, रहे पुकारत तुमहिं ।

राह देखत पथराये नयनां, सुनत नहीं हमरी ॥

अब तो बीती जात उमरिया, नयनन ज्योति जाय ।

देह कूबड़ और हाथ में लाठी, निबट रही हमरी ॥

कब चेतोगे, कबहूं सुनोगे, न कुछ पता हमें है ।

विनय करत हैं श्री चरणों में, टेर सुनो हमरी ॥

क्या कठिनाई चूक हमारी, धरत ध्यान तुम नाहीं ।

जैसे भी हैं हम तेरे, यही वनय हमरी ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभुजी हमरे, हम तो शरण पड़े हैं।

नैया अब तो जात है डूबत, पार करो हमरी ॥

(१२८)

विनय - शग - तिलक कामोद ताल - केहरवा

तुम छोड़ के मुहं को मोड़ गए, तुम छोड़ गए, तुम भूल गए।

अखियां तरसें, दर्शन ताई, तुम यादें सब ही तोड़ गए ॥

मोहे याद सतावत है तेरी, हर पल तेरा ही नाम जपूँ ।

मनवा लागत न कहीं अभी, मुझको क्यों जग से जोड़ गए ॥

तुम कैसे प्रीतम हो सैंया, जो याद न आवत कभी मेरी ।

मेरे मन हरदम कशश तेरी, जलने को मोहे छोड़ गए ॥

मैं रहती आहें भरती हूँ, हिरदय मेरा गमगीन बना ।

है सोच विचार यही मन में, प्रियतम क्यों मोहे छोड़ गए ॥

तुम दूर देश को गए कहां, आ सकती मैं न चाहकर भी ।

तुम तो रम गए वहीं जाकर, तड़पन तरसन को छोड़ गए ॥

शिवओम् पुकारत हूँ हरदम, अब आओ अब तो आ जाओ ।

तुम आए बिन न चैन मुझे, मन काहे मेरा तोड़ गए ॥

(१२९)

विनय - शग खमाज ताल-केहरवा

मन विकार है जावत नाहीं ।

प्रेम प्रभु का हिरदय माहीं, आवत नाहीं, भावत नाहीं ॥

मन विकार है छाए अन्तर, मन छाया है राज उन्हीं का ।

पलभर हिरदय छोड़त नाहीं, प्रेम प्रभु का भावत नाहीं ॥

जीवन बीता इनसे लड़ते, एक भी इनमें मरा नहीं ।

एक से एक है जम के बैठा, प्रेम प्रभु मन भावत नाहीं ॥

निर्विकार तू है भगवन्ता, अलख अरूप बना तू चेतन ।

फिर मैं शुद्ध नहीं क्यों प्रीतम, प्रेम क्यों हिरदय भावत नाहीं ॥

मेरे प्रियतम, मेरे प्रभुजी, मेरी ओर नहीं क्यों दृष्टि ।

क्यों डूबा मैं माया भव में, प्रेम क्यों हिरदय आवत नाहीं ॥

तीर्थ शिवोम् हे मेरे सजना, मैं तो शरण सदा ही तेरी ।

क्यों विसराया मोहे प्रियतम, प्रेम क्यों हिरदय आवत नाहीं ॥

(१३०)
विनय-राग- धानी ताल - दादग

आया शरण हूं तेरी, मुझको बचालो प्रियतम ।
 नैया है जाती डूबी, मुझको बचा लो प्रियतम ॥

गोते हूं खा रहा मैं, मुश्किल है सांस लेना ।
 कुछ कर न पाऊं मैं तो, मुझको बचालो प्रियतम ॥

भोगों ने मुझको घेरा, मनवा बना है चंचल ।
 किसको पुकारूं तुम बिन, मुझको बचा लो प्रियतम ॥

हैं हाथ पाओं मारे, साधन किए हज़ारों ।
 है काम कुछ न आया, मुझको बचा लो प्रियतम ॥

तेरी शरण है पकड़ी, तेरी अनन्त शक्ति ।
 किरपा करो प्रभुजी, मुझको बचा लो प्रियतम ॥

शिवओम् आया द्वारे, आशा है तुमसे भारी ।
 करना निराश नाहीं, मुझको बचा लो प्रियतम ॥

(१३१)
विनय - राग भैरव ताल-ध्यमाली

जागो प्रियतम जागो सजना, जाग उठो अब जागो ।
 देखो दीन दशा अब मोरी, राम प्रेम में लागो ॥

बीती रात हुआ उजियारा, जागन वेला आई ।
 करो कृपा है दीन शरण में, प्रेम करन में लागो ॥

तड़प रही हूं मिलन को तेरे तेरे ही मन लागा ।
 तेरे हरदम ध्यान लगा है, सेज बुलावन जागो ॥

तीर्थ शिवोम् पड़त हूं पैयां, मन में मोहे राखो ।
 गले लगावन, जगत छुड़ावन, जागो अब तो जागो ॥

(१३२)

विनय - शग दरबारी ताल - टाठ्या

भजन न जानूं, पूजा नाहीं, न लिखना कुछ तेरा ।

नहीं सहारा जग में कोई, मैं तो केवल तेरा ॥

विद्या कला योग न जानूं, नहीं ज्ञान विज्ञाना ।

किरपा तुमरी एक सहारा, मैं तो केवल तेरा ॥

तेरे बिन कोई न मेरा, मैं हूं शरण तुम्हारी ।

एक भरोसा बल है तेरा, मैं तो केवल तेरा ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, हाथ बढ़ाए राखो ।

तुम्हें पुकारूं, तुम्हें विचारूं, मैं तो केवल तेरा ॥

(१३३)

विनय - शग - तिलक कामोद ताल-केहरवा

मै चल आई तेरे द्वार ।

गिरती पड़ती उठती बढ़ती, आई हूं नदिया पार ॥

हे प्रभु अब तो सुन लो हमरी, अर्ज गुजारूं तुम पह ।

गहरा जल और तेज हवाएं, आने न दें आर न पार ॥

शान्त प्रकाशित देश तुम्हारा, तुम हो गहर गम्भीरा ।

मैं दुखियारी जग की मारी, आई करत पुकार ॥

अब क्यों बन्द किवार किए हो, खोलत नाहीं काहे ।

खटकाए रही हूं कब से, खोलो प्रेम किवार ॥

जग में तो दुविधाएं ही हैं, सुविधा यहां न कोई ।

जग की ओर न जाना चाहूं, फिसलन वहां हजार ॥

तीर्थ शिवोम् हे मेरे प्रभुजी, हूं चरणों की दासी ।

खोल किवार लंघावो अंदर, तुमसे यही पुकार ॥

(१३४)

विनय - शग - मिश्र काँडी ताल-केहरवा

माधव केशव कृष्ण कन्हाई, हमको दर्शन दीजिए ।

हम पर किरपा कीजिए, चरणों में रख ही लीजिए ॥

हम दर्स के हैं प्यासे, चैन दर्शन बिन नाहीं ।

नज़र हम पह कीजिए, बिगड़ी बना ही दीजिए ॥

जग की है न चाह कोई, मन है भोगों में नहीं ।

कामना तेरे मिलन की, बस यह पूरी कीजिए ॥

भक्त वत्सल, प्रेम सागर, मन में परगट हो मेरे ।

मन को उजागर कीजिए, अब वास मन में कीजिए ॥

तीर्थ हूं शिवओम् मैं, आया शरण तेरी प्रभु ।

जगत बंधन से छुड़ाकर, वास चरणों दीजिए ॥

(१३५)

विनय - शग भैरवी ताल-केहरवा

अब तो तेरे हवाले, जीवन मेरा यह प्रीतम ।

मारो या चाहे तारो, मरज़ी हो जैसी प्रीतम ॥

साधन किए अनेकों, अब तक बना न कुछ भी ।

अब हूं शरण तेरी मैं, मेरे सलोने प्रीतम ॥

हंकार था यह मन में, साधन बहुत करुंगा ।

साधन का गर्व टूटा, अब तो हवाले प्रीतम ॥

तू ही तो सब करत है, तूने बनाया सबको ।

तूने फसाया सबको, तू ही निकाले प्रीतम ॥

अब आ गया शरण में, अभिमान साथ लेकर ।

तेरा तेरे हवाले, अब तो संभालो प्रीतम ॥

शिवओम् है नहीं कुछ, कर पाए जो कि कुछ भी ।

सब कुछ कृपा से तेरी, अब पार कर दो प्रीतम ॥

(१३६)

विनय - शग सारंग ताल - केहरवा

मैं आय पड़ी मझधार, श्याम जी वेग पथारो ।

कोई नहीं बचावनहार, श्याम जी आए उबारो ॥

उग मग डोले खाती नैया, तुम बिन कोई नहीं रखैया ।

आ कर दो बेड़ा पार, श्याम जी करो उधारो ॥

गहरी नदिया भंवर भी गहरा, मैं तो निकल न पाऊं इससे ।

तुम पतराखो महाराज, श्याम जी करो उतारो ॥

तीर्थ शिवोम् तुम्हीं से आशा, जग तो केवल एक तमाशा ।

तुम कर दो नैया पार, श्याम क्या करत विचारो ॥

(१३७)

विनय - शग-टेवगिरी बिलावल ताल - दादरा

आओ बनाओ दुनिया, मेरी जो बिगड़ी जाती ।

मुझसे तो जग की मुश्किल आसान हो न पाती ॥

अन्दर जगत जो उपजा, उलझाए मन रहा है ।

उलझन यह मुझसे लेकिन, सुलझाई तो न जाती ॥

भटकी मैं राह तेरा, घनघोर है अंधेरा ।

तुम ही हो मेरे साजन, मैं तो संभल न पाती ॥

उलझी भंवर मैं नैया, है घूमती वहीं पर ।

मुझसे तो अपनी नैया, है पार हो न पाती ॥

शिवओम् मैं पुकारूं, रो रो तुम्हें प्रभुजी ।

किरपा करो हे प्रियतम, नैया है झूबी जाती ॥

(१३८)

विनय - यग-पीलू ताल- दादरा

मैं हूं गिरती जा रही, मुझको बचा लो हे प्रभु ।

हाथ मेरा थाम लो, मोहे संभालो हे प्रभु ॥

जगत भोगों न हे घेरा, मैं उलझती जा रही ।

निकल मैं इनसे न पाऊं, मोहे निकालो हे प्रभु ॥

काम लज्जा, क्रोध में, हूं मैं सिमटती जा रही ।

छूट न पाऊं मैं इनसे, मोहे छुड़ा लो हे प्रभु ॥

तुमरी शक्ति है अनन्ता, जगत के स्वामी तुम्हीं ।

मैं पड़ी तेरे दुआरे, मुझको खोलो हे प्रभु ॥

मैं रही शिवओम् अब, करती विनय तुमसे यही ।

जगत बंधन में कसी, मुझको छुड़ी लो हे प्रभु ॥

(१३९)

विनय - यग तोड़ी ताल-केहरवा

गहरे तम में डूब रही मैं, आओ करो उजाला ।

न कुछ सूझे, न कुछ दीखे, पार करो गोपाला ॥

तुम ही रक्षक दाता मेरे, तुम मेरे प्रतिपाला ।

तुम विन कौन सहाई मेरा, तुम हो दीनदयाला ॥

अन्दर तम है बाहर तम है, छाया धोर अंधेरा ।

अंथ कूप में डूबत जाऊं, तुम ही काढ़न वाला ॥

अंधी बनी पुकारूं तोहे, आओ करो सहाय ।

एक भरोसा तुमरा पकड़ा, हो मेरे नन्द लाला ॥

तीर्थ शिवोम् शरण में आई, छोड़ सहारे सारे ।

नैया मोरी बीच भंवर में, हे प्रियतम मतवाला ॥

(१४०)

वन्दना - राग दरबारी काठड़ा ताल - भजनी ठेका

सब जग छोड़ शरण तेरी आया ।

करि किरपा हे मेरे प्रभुजी, भ्रम भय शोक हटाया ॥

अंधकूप से मोहे काढ़ा, आवागमन छुड़ाया ।

मन में संशय दूर किए सब, सिमरन नाम कराया ॥

मिथ्या जग का रूप दिखाया, छूटी सगली माया ।

तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मेरे, यश तुमरो मन भाया ॥

(१४१)

विनय - राग मिश्र स्वमाज ताल-धुमाली

अवगुण हूं भरपूर प्रभुजी, तुम सर्वज्ञ सुआमी ।

अलख अरूप अलेप निरंजन, अंतर्यामी सुआमी ॥

करो कृपा हे गुरु मेरे, अवगुण दूर हो मन के।

तुमरे लिए कठिन न कुछ भी, शक्तिमान प्रभु सुआमी ॥

मैं आई हूं द्वार तेरे पर, लेकर, बहुत ही आशा ।

न ठुकराना, हृदय लगाना, दयावन्त तुम सुआमी ॥

मैं मलिन हूं, बड़ी बात न, निर्मल शुद्ध स्वरूपा ।

अंगीकार करो प्रभु मोहे, शरण पड़ी हूं सुआमी ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, अशरण शरण प्रदाता ।

दुखियारी की लाज बचाओ, दुविधा हरो हे सुआमी ॥

(१४२)

शंकर-स्तुति - गण यमन कल्याण ताल-धमारी

हे शंकर त्रिपुरारी, हे दीनन हितकारी ।

शरण में आए तेरे प्रभुजी, बलकारी अघहारी ॥

तुम स्वामी हो पारवती के, तुम स्वामी दीनन के ।

भला बुरा न चीनो प्रभुजी, हे शंकर असुरारी ॥

दीनन के तुम तारन हरे, पार करत भवपारा ।

पतितन पापिन तुम रखवारे, रक्षा करो हमारी ॥

जब जब भीर पड़ी भक्तन पर, आय होत सहाय ।

दीन पतित न हमसा कोई, करो अनुग्रह भारी ॥

तीर्थ शिवोम् हे शंकर स्वामी, हे कैलाश निवासी ।

उच्च शिखर पर आसन तेरा, अर्जी पेश हमारी ॥)

(१४३)

विनय - गण - मिश्र पीलू ताल - केछवा

झूबत मैं मञ्जधार रही हूं, अंग शिथिल हैं मेरे ।

मुझे बचाओ आओ प्रियतम, शरण पड़ी हूं तेरे ॥

वन विशाल में मारग भूली, जाना किधर न जानूं ।

मुझे बचाओ आओ प्रियतम, संकट पड़ी घनेरे ॥

माया नगरी बहुत भुलानी, जग में जात हूं झूबी ।

मुझे बचाओ आओ प्रियतम, भूली जात अंधेरे ॥

जग जंजाल फसाए पंछी, मैं उलझी इसमें ।

विषय वासना गहरा सागर, लेत फंसाए झुबोए ॥

मुझे बचाओ आओ प्रियतम, संकट देयो निबेरे ।

मुझे बचाओ आओ प्रियतम, खाती पड़ी थपेरे ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, जनम जनम की दासी ।

चरण तुम्हारे पकड़े मैने, शरण पड़ी हूं तेरे ॥

(१४४)

विनय - शग - शिवरंजनी ताल - केहरवा

प्रभु तुम्हें कैसे सज्जाऊँ ।

प्रेम हृदय में मेरे तेरा, पर मैं कह न पाऊँ ॥

तुम तो अन्तर्यामी प्रभुजी, बात छुपी न कोई तुमसे ।

व्यथा हृदय मेरी जानत हो, मैं क्या बात बताऊँ ॥

ऐसा भासित होता मुझको, तुमको तो परवाह नहीं ।

मैं अकुलाऊँ तड़पूँ तुम बिन, हिरदय खोल नहीं दिखलाऊँ ॥

तुम तो बैठे हिरदय अन्दर अन्तर की तुम हो सब जानत ।

तुमसे गुप्त व्यथा न मेरी, व्यथा तुम्हें कैसे दिखलाऊँ ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, मैं सेवक हूँ दास तुम्हारा ।

व्यथा हरो प्रभु दर्शन दीजो, और तुम्हें मैं क्या बतलाऊँ ॥

(१४५)

विनय - शग- गौड़ सारंग ताल-धमाली

सूना अंगना, पड़ा सिंहासन, न कोई बैठन हारा ।

रहत उदासी, छाई हरदम, खुशियां किया किनारा ॥

पतझड़ रहत सदा ही मन में, आस न कोई पूरी ।

पिया मिले नाहीं संदेशा, नाहीं कहीं सहारा ॥

फैला तम है मन के अन्तर, दीखत नहीं उजाला ।

कौन जलाए दीपक अन्दर दूर हटे तम सारा ॥

आओ प्रभुजी दर्शन दीजो, आसन राह निहारत ।

दूर उदासी तम हो सारा, आनन्द अपरम्पारा ॥

तीर्थ शिवोम् हे साजन मेरे, भूल गए क्यों मोहे ।

जनम जनम से अर्ज गुजारूं, आए करो निस्तारा ॥

(१४६)

विनय - शग - मिश्रा मत्छार ताल-केहरवा

तेरे बिन मैं तड़प रही ।

मछली जैसे बिना नीर के, अन्तर मैं हूं कसक रही ॥

बिना किनारे नदिया जैसी, डोलत इधर उधर मैं ।

धीरज नाही मंजिल नाही, पर के बिन हूं फड़क रही ॥

हे प्रभु मोरे दीन दयाला, दया नहीं क्यों मुझ पर ।

इकट्क राह दया का देखू, गगने हूं मैं लटक रही ॥

तीर्थ शिवोम् हे मेरे मनवा. आस तेरी ही लागी ।

और न सूजत मोहे कुछ भी, तेरे ध्यान ही लिपट रही ॥

(१४७)

विनय - शग मिश्र पठाड़ी ताल-धुमाली

हरियाली हर ओर है छाई, हृदय मोरा फिर भी सूना ।

भरी उदासी, उदय निराशा, रहता है हरदम वह सूना ॥

पिया मिलन की आस है मोहे, पूरी हुई अभी तक नाहीं ।

रहत है तड़पत पी बिन मोरा, रहत है हिरदय सूना ॥

पी है मोरा मन का मौजी, ध्यान न आवे मो पर उसका ।

मैं हूं देखत राह उसी का, पर मिलता हिरदय सूना ॥

क्योंकर हिरदय हरा हो मेरा, कैसे दूर उदासी यह जो ।

कैसे रोनक मेरे मन में, कैसे हटे यह सूना सूना ॥

सदगुरुदेव बताए मारग, वह ही मन में क्रिया करे है ।

वह ही निर्मलता उपजाए, वह ही दूर करे यह सूना ॥

तीर्थ शिवोम् हे प्यारे गुरुवर, शरण तुम्हारी पड़ी अभागिन ।

दूर करो यह विपदा मन की, दूर करो यह सूना सूना ॥

(१४८)

विनय शंग - दरबारी ताल स्पृक

गर्भ बंधन से छुड़ाया, अनंत सुख जग का दिया ।

पर गया मैं भूल तुझको, नाम तेरा न लिया ॥

जो करे सिमरन प्रभु का जगत दुख से छूटता ।

यह जनम आगे जनम भी, सुख उसी ने है लिया ॥

काम न आए जगत जीवित, बाद मरने भी नाहीं ।

जीते जी है जिस=ने छोड़ा, उसने सब कुछ पाय लिया ॥

जिस रची माया अनूठी, जग का पालनहार जो ।

जिस दिया उसको है अर्पण, घर है उसने छा लिया ॥

दुख सुख बनाया जिसने है, वह ही पार लंघाय है ।

जिसने पल्ला उसका पकड़ा, उसने फल है पाय लिया ॥

तीर्थ हे शिवोम् राघव, चरणों में रख लीजो ।

पड़ा रहूं तेरे ही दर पह, सेवक है मोहे कर लिया ॥

(१४९)

विनय - शंग पहाड़ी ताल - केहरवा

हे विट्ठल हूं शरण तिहारी ।

मो गरीब को बङ्गा देयो प्रभु, सुनियो टेर हमारी ॥

नाम बड़ा है धाम बड़ा है, मैं तो तुच्छ हूं प्राणी ।

चरण तुम्हारे पकड़े मैंने, वेग करो गिरधारी ॥

तुम स्वामी हो सर्व व्यापक, दीन हीन मैं पापी।

तुमरे तो कठिनाई कछु न, दुविधा काटो सारी ॥

तीर्थ शिवोम् नीच पाखंडी, शरण तेरी हूं आया ।

अब तो लाज बचाओ विट्ठल, चरणों पर बलिहारी ॥

(१५०)

विनय - शग सारंग ताल -केहरवा

मन तन तेरा ही गोपाल ।

दीनन बंधु परम हितकारी, सुनिए दीनदयाल ॥

तू अनंत प्रभु मेरा स्वामी, तुम बिन दूजा नाहीं ।

सकल सृष्टि भरपूर रहा तू, है तू परम कृपाल ॥

दर्शन तेरा इन नयनों से, रसना तुझे ही सिमरे ।

आपुन नाम कृपा हो मो पर, अर्ज करूं नंदलाल ॥

तीर्थ शिवोम् शरण हूं तेरी, जगत बड़ा दुखदायी ।

तेरी मौज किया मो परगट, कीजो तू प्रतिपाल ॥

(१५१)

विनय - शग - बागेश्वरी ताल -केहरवा

मुझ में नहीं बड़ाई कोई ।

बना मैं पुतला पापन का हूं, गुण है नाहीं कोई ॥

कैसे हो उद्धार प्रभु जी, सूझत मुझे न कुछ भी ।

कर्म करूं अभिमान करूं हूं, संचित कर्म अनेकों ॥

भगति भाव हिरदय में नाहीं, नाहीं प्रेम है कोई ।

साधन योग कर्म न जानूं, ज्ञान भी नाहीं कोई ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, शरण तुम्हारी जानूं ।

दूजा ठौर न जानत हूं मैं, मारग नहीं है कोई ॥

(१५२)

विनय - शग-जैजैवन्ती ताल केछरवा

खटका रही किवाड तेरा मैं, तुम तो खोलत नाहीं ।

तेरी किरपा तुमसे मांगूँ, और तो मांगत नाहीं ॥

प्रभुजी एक अरज्ज सुन लीजो, चाहूँ तुमरी सेवा ।

चरणों रख लीजो मोहे, और तो चाहत नाहीं ॥

कण-कण तोहे रहूँ निहार, हिरदय भाव यह दीजो ।

प्रेम तुम्हारा अन्तर माहीं, और तो गावत नाहीं ॥

अपरम्पार अलख हो स्वामी, चेतन रूप अनन्ता ।

बनी रहूँ दासी चरणों की, और तो जावत नाहीं ॥

तीर्थ शिवोम् सुनो हे स्वामी, अनुपम प्रेम अनूठा ।

जुडा रहे मन चरणों माहीं, और तो मैं कुछ चाहत नाहीं ॥

(१५३)

विनय - शग भूप ताल केछरवा

मोहे लागी विरहा प्रीत ।

नित ही रहत पिया ही झूबत, गाऊं पियहिं गीत ॥

हिरदय तडपत पिय मिलन को, पी पी रहत पुकारत ।

नयना बरसत हैं दिन राती, यहीं विरह की रीत ॥

देखत पियहिं राह निहारत, नयनन राह बिछाए ।

फड़कत हरदम अंग अंग है, नयनन पियहिं नीत ॥

लगे रहो हिरदय तुम, हर पल, पिया मिलन की आस ।

पहुँचे पुकार कभी प्रियतम तक, कभी विरह की जीत ॥

तीर्थ शिवोम् हे विरही मनवा, क्या समझाऊं तुमको ।

प्रेम विरह ही रंगे रहो तुम, विरह तुम्हारा मीत ॥

(१५४)

वृद्धना - याग बिलावल ताल-केहरवा

शब्द ब्रह्म भी तू ही प्रभुजी, तू प्रगटावन हारा ।

अपनी करनी आपे देखे, आप दिखावन हारा ॥

नाम भी तू ही, नाम में शक्ति, बैठा नाम जपे ।

तेरे बिन है नाम न कोई, आपे देवन हारा ॥

नाम प्रदान करो प्रभु मोहे, जपूं मैं नाम निरन्तर ।

जप भी तू ही, जाप करे भी, जाप करावन हारा ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, तेरा नाम अमोलक ।

नाम जपे सो हो निस्तारा, पार करावन हारा ॥

(१५५)

वृद्धना - याग भैरवी ताल - त्रिताल

प्रभु मेरे तुम अनन्त गम्भीर ।

माया पर हो तुम हो निर्गुण, तुममें न तकदीर ॥

जो तुम करो सो करत न कोई, महिमा तुमरी न्यारी ।

तुम सा दूजा कोई नाहीं, हो वीरों के वीर ॥

माया अन्दर आकर भी तुम, बने अद्घृत रहते ।

यह तो तुमरी लीला प्रभुजी, धरते जगत शरीर ॥

तुमको पाने, तुमरी किरपा, एक है यही उपाय ।

जीव बेचारे की क्या गिनती, न कोई तदबीर ॥

मन तरंग है तेरी किरिया, सब तेरी चेतनता ।

जगत बना जड़ केवल दीखत, बहता बनकर नीर ॥

तीर्थ शिवोम् है लागा शरणी, अन्तर आय विराजो ।

मन आनन्द तेरा मैं पाऊं, बनूं धीर गम्भीर ॥

(१५६)

ग़ज़ल - शग गौड़ सारंग ताल - दीपचन्दी

हो गई मेरी तसल्ली हो गई ।

आरजू जो दिल की पूरी हो गई ॥

रहमते हक है अयां अब हो गया ।

एक इच्छा थी कि पूरी हो गई ॥

अब तो कोई आरजू दिल में नहीं ।

दिल में जो भी थी वह पूरी हो गई ॥

अब तो मैं हूं और मेरा यार है ।

आरजू-ए-वसल पूरी हो गई ॥

यार का जलवा ही बाकी रह गया ।

अब इबादत हक है पूरी हो गई ॥

तीर्थ ऐ शिवओम् अब खुशियां मना ।

दिल में तेरे जो थी, पूरी हो गई ॥

(१५७)

ग़ज़ल - शग-तोड़ी ताल- दीपचन्दी

महफिलों से लज्जतों से, दिल तो मेरा भर गया ।

देखकर चेहरा जगत का, दिल तो मेरा डर गया ॥

अब तमन्ना है न ख्वाहिश, है कोई कुछ भी जरा ।

कर सका जो कुछ यहां पर, करना था सो कर गया ॥

फक्त इक ही आरजू बाकी है दिल में रह गई ।

रास्ता कोई दिखाए, मैं तो मेहनत कर गया ॥

पीरो - मुर्शिद या कोई, अहसान मुझ पर आ करे ।

पाऊं मैं रस्ताए हक को, गुज़र मौका कर गया ॥

तीर्थ ऐ शिवओम् नाहक, तू तो रोए जा रहा ।

जो था होना हो गया, और खत्म किस्सा हो गया ॥

(१५८)

ग़ज़ल - शग यमन कल्याण ताल - दादरा

तलब न जिस दिल में हो, तेरे दीदार की ।
है हवस ही जगत उसको, न तेरे दीदार की ॥

मर गए, जो मर रहे हैं, दे पड़ा रहने उन्हें ।
वह हैं सुख की नींद सोये, न जगा बेकार ही ॥
आए वह मेरे ही दर पह, पर वह वापिस हो गए।
बदनसीबी खोट मेरा, न मिला दीदार ही ।
तीर्थ ऐ शिवोम् न कर, जग से कोई तू गिला ।
न तमन्ना रख जहां की, रख तमन्ना यार की ॥

(१५९)

हिन्दी ग़ज़ल - शग मिश्र शिवरंजनी ताल - भजनी ठेका

रहत जगत में बजत सदा ही, एक प्रभु का इक तारा ।
कभी बनाए, कभी मिटाए, खेल करत है इक तारा ॥
कभी सुनाई देत वह बजता, कभी सुनाई न देवे ।
बजना उसका बन्द कभी न, रहत बजत ही इक तारा ॥
इक - तारा ही करे दुखी जग, वह ही मन आनन्द भरे ।
ऊपर नीचे रहत घुमाए, जगत बेचारा इक तारा ॥
हे इक तारे रहो बजत ही, रहो सुनाई देते ही ।
लगा रहे मन धुन ही तुमरी, धुन ही साची इक तारा ॥
तीर्थ शिवोम् हे मेरे मनवा, जगत ठुनक इक तारे की।
ठुनक उठे जग परगट होए, ठुनक विलीन ही इक तारा ॥

(१६०)

गङ्गा-गङ्गा-माण्ड ताल - दादरा

जग से हूं घबरा गया, अब तो बचा लो हे प्रभु ।

एक दिन भी चैन नाहीं, अब तो सम्भालो हे प्रभु॥

वासनाओं ने है घेरा, भोग दुख देते मुझे।

तम हृदय में छा गया, आया शरण में हे प्रभु ॥

मूढ़ अज्ञानी हठी हूं, जानता कुछ भी नहीं ।

पर रहा अभिमान डूबा, दो सहारा है प्रभु ॥

अब सम्भालो इस जगत को, दे रहा दुख है मुझे ।

मैं निपट इससे न पाता, कह न सकता है प्रभु ॥

अब बुला लो, अब बचा लो, है विनय शिवओम् की ।

यह जगत तुमको मुबारक, भर मैं पाया हे प्रभु ॥

(१६१)

गङ्गा - गङ्गा - भटीयार ताल - भजनी ठेका

जग से ऊबा, जग वालों से, शरण तिहारी आया ।

जग तो रूप दिखाया अद्भुत, इससे मन घबराया ॥

काहे भेजा जग के माहीं, बात न कोई सुनता।

तुमरे घर में सुख से था मैं, जग में आ पछताया ॥

मैं तो दुखड़ा मन का रोता, बात है नाहीं जग की ।

जग तो केवल कारण दुख का, दुख को ही बतलाया ॥

करो कृपा हे रघुवर मो पर, मनवा हटे या जग सों ।

लागे तुमरे ही चरणों में, शरणी ही सुख पाया ॥

तीर्थ शिवोम् विनय तुम आगे, माया रूप हटाओ ।

नाशे भरम दूर सब दुविधा, तुम मैं ही मन छाया ॥

(१६२)
गङ्गा - याग-जैजैवल्ली ताल - दादरा

है दुनिया की जानिब खरामां खरामां,

कदम तेरा बढ़ता खरामां खरामां ।

नहीं होश तुझको है खुद का तो कुछ भी,

है बढ़ता बदी को खरामां खरामां ॥

है दुनियां तो ज़ालिम सितमगर यह भारी,

है तेरी अकल तो गई इसमें मारी

नहीं फर्क समझे तू नेकी बदी में,

कि नेकी से हटता खरामां खरामां ॥

है तेरी भलाई इसी में बशर है,

न रखे तु दिल में तो कोई कसर है ।

तू यादे प्रभु में रहे मस्त हरदम,

हटे तु जगत से खरामां खरामां ॥

प्रभु ही बनाए, प्रभु ही बिगाड़े,

बमूजब वह कर्मों के सबको सबोरे ।

वही बछाता वे सहारों सहारे,

उसी तरफ चल तू खरामां खरामा ॥

है शिवओम की तो हुआ बस यही है,

कि उलफत हो कदमों में तेरे प्रभु है

है ख्वाहिश मुझे और कोई नहीं है,

तङ्गप दिल में पैदा खरामा खरामा ॥

(१६३)

गजत- राग- यमन- ताल टाटरा

सुहाना है मौसम सुहानी है रातें,
सुहाना मुझे यह जगत दीखता है ।
हैं ऐसे में भी मन, मेरा दुख है माने,
प्रभु न जगत में कहीं दीखता है ॥

बनाए प्रभु ने यह सुन्दर नज़ारे.
यह झरने यह नदिया, समुन्दर संवारे ।
तराशे मनोहर हैं, नदिया किनारे,
मगर वह प्रभु न कहीं दीखता है ॥

यह मन्दिर यह तीरथ इबादित यह गाहें,
भवन ऊंचे उठे हैं, जाती निगाहें ।
कहीं साफ सड़कें हैं, सुन्दर यह राहें,
प्रभु है छुपा न कहीं दीखता है ॥

यह पुस्तक यह पोथी, यह कागज यह पन्ने,
खड़े लहलहाते, कहीं खेत गन्ने ।
भरी है तिजोरी कहीं सेठ धन्ने,
प्रभु पर मुझे न कहीं दीखता है ॥

प्रभु सब जगह है, किताबें यह कहती,
नदी में भी शक्ति उसी की है बहती ।
गमो आरजुओं में रोशन है रहती,
कहूं क्या प्रभु न मुझे दीखता है ॥

करो अब उजागर कि शिवओम् पर भी,
उठाओ यह परदे कि शिवओम् पर भी ।
हो रोशन यह जलवा कि शिवओम् पर भी,
है द्वृटे यह कहना, नहीं दीखता है ॥

(१६४)

दाद्या गङ्गल - श-पीतू ताला- दाद्या

आए फर्ज तू बनाए बहाने, लगा तू है दुनिया बहाने बहाने ।

प्रभु याद तुझको न आए कभी भी, निकल भागता है बहाने बहाने ॥

है बेकार में वक्त अपना गंवाए, है बेकार कामों में खुद को लगाए ।

है बेकार में अपने मन को भगाए, निकल भागता है बहाने बहाने ॥

उमरिया तो यूं ही है बीती ही जाए, समझ तुझको कोई नहीं पर तो आए ।

कोई सीख देता मगर मन न भाए, निकल भागता है बहाने बहाने ॥

है मंज्ञधार में तेरी नैया पड़ी है, सहारे बिना ही वह जल में अड़ी है ।

तमाशा है देखे यह दुनियां खड़ी है, निकल भागता है बहाने बहाने ॥

अभी भी समय है जो कुछ पास तेरे, सिमर ले प्रभु को सवेरे सवेरे ।

वही पाप कर्मों को तेरे निवेरे, निकल भागता है बहाने बहाने ॥

शिवओम् की यह विनय है प्रभु से, नहीं मांगता और कुछ मैं प्रभु से ।

है आशा सहारे की मुझको प्रभु से, कि मन भागता है बहाने बहाने ॥

(१६५)

गङ्गल - शग - देस ताल - दाद्या

भटकता भटकता तू आया है जग में, तुम्हें याद है कि नहीं याद है ।

यहां आके भूला है मालिक को अपने, प्रभु याद है कि नहीं याद है ॥

तुम्हें याद दुनियां के सब काम धन्धे, हो बेकार चाहे या कितने भी गंदे ।

हो चाहे जरूरी या कितने भी मन्दे, प्रभु याद है कि नहीं याद है ॥

तू गाफ़िल बना क्यों प्रभु से है अपने, नहीं याद तुझको फर्ज ये जो अपने ।

पड़ा मोह में ही पराये कि अपने, प्रभु याद है कि नहीं याद है ॥

न जाएगा यह तेरे साथ कुछ भी, कमाया बनाया फसाया न कुछ भी ।

न घर बार धनवा तेरे पास कुछ भी, प्रभु याद है कि नहीं याद है ॥

है काहे को अपना समय है बिगारे, है भव में पड़ा बीच नदिया मझारे ।

है मालिक सहारा जो तुमको उबारे, प्रभु याद है कि नहीं याद है ॥

है शिवोम् समझाए तुझको पिआरे, पड़ा बीच नदिया न आता किनारे ।

है दुख दूर करके, वही तो संवारे, प्रभु याद है कि नहीं याद है ॥

(१६६)

ग़ज़ल - गण - देवगिरी बिलावत ताला-फेरवा

अब तमन्ना है यहीं, प्यारा प्रभु मुझको मिले ।

कुछ मिले या न मिले, पर मेरा प्यारा मिले ॥

आरजुओं वासनाओं में दिया जीवन बिता ।

इक घड़ी भी यह न सोचा, कि मेरा प्यारा मिले ॥

यह कमाया यह बनाया, मैं लगा बस यह रहा ।

याद यह मन में न आई, कि मेरा प्यारा मिले ॥

अब न कोई वासना है, चाह भी कुछ है नहीं ।

चाह तो बस है यहीं इक, कि मुझे प्यारा मिले ॥

है यहीं शिवओम् तीरथ, अब दुआ तुम से प्रभु ।

जगत जाए छूट मुझसे, पर मेरा प्यारा मिले ॥

(१६७)

ग़ज़ल - गण यमन ताला-धूमाली

दर को छोड़ कहां मैं जाऊं ।

जग में ठौर न दीखत कोई, जाय कहां संसार बसाऊं ॥

भाई बांधव और परिवारा, और और सब है रट लाई ।

तुम ही एक दयालु प्रभुजी, तुम को छोड़ कहां मैं जाऊं ॥

जग तो रूप बदलता रहता, थिरता इसमें है को नाहीं ।

नित्य शुद्ध तुम एक प्रभुजी, एक छोड़ दूजे नहीं ध्याऊं ॥

यह जग तो सुख देत दिखाए, पर देता वह दुख ही दुख है ।

एक तुम्हीं सुख सागर प्रभुजी, क्योंकर मैं सुख छोड़ के जाऊं ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मेरे, एक तुम्हीं बस मेरे अपने ।

एक तुम्हीं जो पालन करते, ऐसा छोड़ कहां मैं जाऊं ॥

(१६८)
गजल - यग - दरबारी ताल - दीपचन्दी

फूल में तुम मुस्कुराते दीखते हो,
बन के कोयल चहचहाते दीखते हो ।
ग़म में भी आसू बहाते दीखते हो,
तुम हवा में सरसराते दीखते हो ॥

तुम ही सूरज बन चमकते हो जगत में,
तुम ही अग्नि में दमकते हो जगत में ।
दिल में धड़कन बन धड़कते हो जगत में,
खेत में तुम लहलहाते दीखते हो ॥

तुम ही रोगी में बने हो रोग प्रियतम,
तुम ही भोगी में बने हो भोग प्रियतम ।
तुम ही योगी में बने हो योग प्रियतम,
जगत में खाते खिलाते दीखते हो ॥

मैं बता सकता नहीं जो गुण तुम्हारे,
मैं दिखा सकता नहीं जो गुण तुम्हारे ।
मैं तो गा सकता नहीं जो गुण तुम्हारे,
भक्त को नदिया लंघाते दीखते हो ॥

तुम बने भगवान हो मंदिर में बैठे,
तुम ही भक्तन के भी हो अन्दर में बैठे।
तुम ही उजड़े टूटने खंडर में बैठे,
जगत में लड़ते लड़ाते दीखते हो ॥

तीर्थ यह शिवओम् तेरी ही शरण है,
टेकने माथा तो बस तेरा चरण है।
तू ही करता भी तो सबका ही भरण है,
बन कृपा करते कराते दीखते हो ॥

(१६९)

गजल - शग - जीवनपुरी ताल - कव्वाली ढेका

जिंदगी तेरे लिए हो, मौत भी तेरे लिए ।
पास जो कुछ भी हो मेरे, एक बस तेरे लिए ॥

आरजूएं दिल की धड़कन, मन में जो अरमान भी।
एक बस तेरे लिए ही, एक बस तेरे लिए ॥

दिल में है ये ही तमन्ना, आरजू कोई न हो ।
आरजू गर हो भी कोई, एक बस तेरे लिए ॥

मैं हंसूं, तड़पूं या रोऊ, गोद तेरी में रहूं ।
सांस हर तेरे लिए हो, एक बस तेरे लिए ॥

है दुआ शिवओम् की सुन, है मेरे प्रभु ।
मैं धरूं, कुछ भी करूं सब, एक बस तेरे लिए ॥

,

(१७०)

गजल - शग - किरवानी ताल - केहरवा

तेरी याद प्रीतम बनी ही रहे ।
तड़प तेरी हरदम बनी ही रहे ॥

किसी हाल में भी, कहीं पर रहूं मैं।
कि फरियाद हरदम बनी ही रहे ॥

महकता कलेजा तेरी याद में ही ।
कि खुशबुएं हरदम बनी ही रहे ॥

बिना याद तेरी कशश न किसी में।
कशश तेरी हरदम बनी ही रहे ॥

नहीं सूझे कुछ भी सिवा तेरे मुझको,
मुझको तेरी याद हरदम बनी ही रहे ॥

है शिवओम् मांगे दुआ है तुम्हीं से ।
कि चाहत यह हरदम बनी ही रहे ॥

(१७१)

गजत शग-भीम पतास ताल- दीपचन्द्री

जग तमाशा देखता, पहले ही मैं मुरझा गया

फूल तो खिलने से पहले, ही रहा कुम्हला गया ॥

जग में आया भी न था, जाने को मैं तैयार हूँ ।

पांव रखने से ही पहले, मैं रहा लड़खा गया ॥

जग में देखा सब तरफ ही, गम भरा दुश्वारियां ।

आ के मैं पछता गया और मैं रहा घबरा गया ॥

न कोई पूछे किसी को, सब हैं भागे जा रहे ।

देखकर हालत जगत की, मैं रहा शरमा गया ॥

जगत का यह रूप देखा, पर लुभाना दीखता ।

मन रहा काबू न मेरे, मैं रहा भरमा गया ॥

तीर्थ यह शिवओम् तू, मूरख अजब है आदमी ।

जग है माया खेल सारा, फिर भी धोका खा गया ॥

(१७२)

गजत - शग-शगेशी ताल-दादरा

प्रभु याद में दिल मेरा महक जाने दे ।

प्रेम अपने में यह दिल थोड़ा बहल जाने दे ॥

मैं रहूँ याद में डूबा ही तेरे ही हरदम ।

मीठे सपनों में इसे थोड़ा चहक जाने दे ॥

याद तेरी ही में, रंगीन रहूँ मैं तो ।

याद की आग को, थोड़ा तो दहक जाने दे ॥

है यह शिवओम् यही मांगे दुआ है तुमसे ।

मैं तो पुरनूर बनूँ कुछ तो चमक जाने दे ॥

(१७३)

ग़ज़त - यग-देवगिरी बिलावत ताल - दीपचब्दी

आरजू कोई न मन में, आरजू बस है तेरी ।

जुस्तजू कोई न मन में, जुस्तजू बस है तेरी जुस्तजू ॥

कर लिया जो था कि करना, अब नहीं बाकी कोई ।

काम यह ही एक बाकी, जुस्तजू बस है तेरी ॥

फूल सब मुरझा गए, जीवन में जो कि थे खिले ।

फूल ये ही एक बाकी, जुस्तजू बस है तेरी ॥

गिर गए अरमान सब, पैदा हुए मन में मेरे ।

एक ही अरमान बाकी, जुस्तजू बस है तेरी ॥

तीर्थ अब शिवओम् मन में, है तमन्ना न कोई ।

है तमन्ना एक बाकी, जुस्तजू बस है तेरी ॥

(१७४)

ग़ज़त - यग- जैजैवन्ती ताल रूपक

जब नज़ारा हो गया, फिर मन तो उसमें लग गया है ।

दुनिया से लेना है फिर क्या, हो गई बेकाम है ॥

एक जल्वा है तेरा ही, दीखता हर तरफ तू ।

और दूजा है न कोई, दूसरा क्या काम है ॥

दर पह तेरे जब आ गया मैं, दर बदर भटका किया ।

घर तेरे जब आ गया तो, वासना क्या काम है ॥

एक मैं हूं, एक तू है, और तेरी सेज है ।

अब तो है आनन्द ही बस, शोक का क्या काम है ॥

आ गई शिवओम् मैं, अब सेज तेरी है प्रभु ।

ले लगा मुझको गले से, उलफत यहीं अंजाम है ॥

(१७५)

गजल - यग- दरबारी काठहड़ा ताल - धुमाती

तेरे कूचे में भटका मैं, तुमी को ढूँडता हूँ ।
नहीं कछु देख पाता मैं, तुमी को खोजता हूँ ॥

तसल्ली दिल में है यह ही, कि भटका मैं नहीं जग में ।
मैं अटका तेरे दर पह ही, तुमी को पूछता हूँ ॥

अगर तुम न मिले तो फिर कहा जाऊगां दीगर मैं ।
तुम्हारी याद में आसू बहाता पोछता हूँ ॥

लिए सीने में आगे हिज्ज, फिरुं हूँ दर बदर भटका ।
तमन्ना तेरे मिलने की राह जग डोलता हूँ ॥

रहा शिवओम् है हरदम कि घर तेरा ही खोजे है।
न मिलता घर न मिलता दर, कि दर दर ठोकता हूँ ॥

(१७६)

गजल - यग- यमन ताल-केहरवा

इक निराशा के सिवा कुछ भी न हाथ आया ।
जिसको भी साथ लिया, वह तो साथ न आया ॥

किस पह एतवार करें, इस जहान मे आकरा।
जिसको भी पास बुलाया, वह पास न आया ॥

जिस पह भी है दिले गम, हमने है किया जाहिर ।
धोका उसने ही दिया, वह तो काम न आया ॥

हे प्रभु तेरे सिवा, कोई मेरा साथ नहीं ।
कोई गम ख्वार नहीं, कुछ भी रास न आया ॥

तुझ पर एतवार मेरा, अहले वफा तू ही है।
जग तो जब वक्त पड़ा, कुछ भी काम न आया ॥

है राह शिवोम् पड़ा, कदमों में तेरे प्रीतम ।
रहम तेरे ही पड़ा, और काम न आया ॥

(१७७)

पश्चाताप - शग - जैजैवन्ती ताल - दीपचन्दी

मैं चला था खोजने को राम को, पर मैं रस्ते में उलझ कर रह गया ।

जग की उलझन में ही फसकर रह गया, राम तो बैठा किनारे रह गया ॥

अब जगत नाहीं मुझे है छोड़ता, दे दिखा कर्तव्य का दर्पण मुझे ।

और किए हीले हजारों ही बना, राम का तो खोजना ही रह गया ॥

इस तरफ जग फर्ज दिखलाए मुझे, दूसरा बातें बनाए हैं मुझे ।

क्या करूं, न मैं करूं, न सूझता, काठ की पुतली हूँ बनाकर रह गया ॥

अजब दुविधा में पड़ा हूँ इस तरह, कुछ भी कर पाता नहीं निर्णय रहा ।

यह करूं या वो करूं, क्या ठीक है, राम पाना इक तरफ ही रह गया ॥

राम पाना ही प्रथम कर्तव्य है, जिसलिए निकला था मन में ठान कर ।

बाकी तो सब गौण है तेरे लिए, रह गया, सो रह गया, रह ही गया ॥

शिवओम् रख तू लक्ष्य को मन में सदा, जिसलिए जीवन गंवा तूने दिया ।

अब तो रस्ता साफ तेरा हो गया, राम पाना एक मन में रह गया ॥

(१७८)

पश्चाताप - शग - देवगिरि बिलावल ताल पंजाबी ठेका

हम आ गए जगत में बस, यूँ ही चलते चलते ।

हो कर यहां पर मोहित, गए ठहर चलते चलते ॥

फिर कर लिया यहां घर और घर में बंध गए हम ।

छोड़ो कहां है जाना कब, तब यह चलते चलते ॥

पूछा किसी ने कुछ भी, बोले जो आया मन में ।

बस कह दिया उसे, कुछ ऐसे ही चलते चलते ॥

कर्मों को समझा अपना, फल को भी माना अपना ।

उलझे कि उनमें ऐसे, फंसे कि चलते चलते ॥

अब घर है टूटने को आयु भी बीतने को ।

बेकार में ही यह तो, निकली है चलते चलते ॥

शिवओम् हे प्रभु अब, आई है याद तेरी ।

हम फिर निकल पड़े हैं, चलने को चलते चलते ॥

(१७९)

पश्चाताप - शग-मटीयार ताल-धुमाती

आशा करत जगत से फिर फिर, होत निराश है भारी ।

फिर भी आशा नाहीं छोड़त, काहे बुद्धि मारी ॥

तृष्णा कभी न पूरण होती, लोभ करे भोगन का
जीव न सुख को पाता कबहुँ, हारी सृष्टि सारी ॥

प्रभु बनाया ऐसा जग है, आशा तृष्णा सबको ।

हर कोई इस ही में उलझा, हर कोई दुखियारी ॥

क्षीण होत है जग यह क्षण में, बदले रूप निरन्तर ।

पर है चंचल करता रहता, सबको है अति भारी ॥

चंचल जग है चंचल मनवा, थिरता कैसे पाए ।

गुरु कृपा ही, हटे है मनवा, वच जाए विपदा सारी ॥

तीर्थ शिवाम् कृपा मो कीजो, थिरता पाऊँ मैं भी ।

जगत किया है बहुत दुखी ही, होन न देत सुखारी ॥

(१८०)

पश्चाताप-शग-मद्माट सारंग ताल-केछवा

जब से छोड़ा घर है अपना, मिला नहीं आराम है।

चंचल हो कर दुःखी है मनवा, लगा रहे बेकाम है ॥

आतम राम मेरा घर अपना, आया जग के माहीं मैं ।

काम क्रोध से मन भर लीना, रहा न वह निष्काम है ॥

भूला खुद को, अपने घर को, मस्त हुआ विषयों मैं मैं ।

होश तभी, जब ठोकर खाई, नहीं पायो विश्राम है ॥

भटक भटक सारा जग ढूँडा ठौर कहीं भी न पाई ।

बाहर होवे तो घर पाऊँ, कि रहा फिरत बेकाम हूँ ॥

तीर्थ शिवोम् हे मेरे प्रभुजी, मैं अज्ञान महापापी ।

कैसे लौटूँ घर मैं अपने, घर तो आतम राम है ॥

(१८१)

पश्चाताप - यग-तोड़ी ताल-धुमाती

एक दिवस भी विरथा जाता, मन में पीड़ा होती ।

जीवन निकला समय गंवाते, विफल उमरिया होती ॥

मन को निर्मल करने कारण, जन्म अमोलक पाया ।

समय बीतता जाता यूँ ही, व्यथा हृदय में होती ॥

जग में कर्म कमाए मिथ्या, लाभ नहीं कुछ पाया।

निकला जाए, बीता जाए, क्षीण है आयु होती ॥

मूरख समझ है पल पल तेरा, बना कीमती भारी ।

क्यों तू रहा गंवाए अपनी, करता आयु खोटी ॥

वह साधक ही नहीं है साधक, समय का भान नहीं है ।

बातों वक्त खपाए विरथा, बुद्धि तेरी मोटी ॥

तीर्थ शिवोम् शरण में लागा, साधन करूँ निरन्तर ।

अब तक तो न समझा इसको, उम्र वृथा है होती ॥

(१८२)

पश्चाताप- यग भूप ताल - ऋषक

देखकर मन को दुखी है, जीव का मन रो दिया ।

जग के पीछे भागते ही, जन्म अपना खो दिया ॥

जगत में मन को लगाया, यह ही भारी भूल है ।

हो के मोहित कर्म करके, बीज दुख का बो दिया ॥

था मिला अनमोल उसको, जन्म मानुष देह का ।

जगत भोगों में लगे रह, उसको विरथा खो दिया ॥

न किया साधन भजन ही, न कमाया नाम को ।

न ही सत् कर्मों को कीना, न ही मन को धो दिया ॥

शिवओम् मन में समझ ले, दुख से जगत तो है भरा ।

क्यों रसा तू नित्य इसमें, क्यों है अवसर खो दिया ॥

(१८३)

पश्चाताप - यग- अभोगी ताल - केहरवा

काया काहे रोए रही, चलत प्राण की वेला ।

काया लागी जग विषयन में, छूटा जात है मेला ॥

किया लोभ धन बहुत कमाया, कौड़ी कौड़ी जोड़ी ।

सब तो धरा यहीं रह जावे, काम न आया धेला ॥

विषय भोग में उमर गुजारी, वनिता बहु मन भावे

इन्द्रिन शिथिल न मन भरमावे, दीखत जगत झमेला ॥

प्राण चले जग सारा छूटा, कोई साथ न जावे ।

मात-पिता, भगिनी सुत नारी, गुरु हो चाहे चेला ॥

निकले प्राण जल गई काया, बच्ची राख की ढेरी

पंछी उड़ा अकाश अनंते, सब जग छाड़ अकेला ॥

तीर्थ शिवोम् री भोली काया, प्राण से संग न होई ।

काहे तू पछतावे मन में प्राण तो एक अकेला ॥

(१८४)

पश्चाताप - यग-जौनपुरी ताल - दादरा

देखते ही देखते साथी तो सब ही उठ गए ।

वक्त तेरा दूर न, जीवन के दिन हैं लद गए ॥

मांग कर लाए थे जितने, दिन प्रभु से उम्र के ।

कामनाओं में तो कुछ, आशा में सब ही कट गए ॥

यह उमर थी एक लम्बी, या कि केवल स्वप्न था ।

आँख झपकी भी नहीं थी, कि सभी दिन हट गए ॥

मैं समझ पाया भी न, जीवन निकलता ही गया ।

खोल भी पुस्तक न पाया, सब ही पन्ने फट गए ॥

वक्त की रफ्तार तो, रुकती नहीं है किस तरह ।

जो बरस पाए नहीं है, वह भी बादल छट गए ॥

है संभाले अब रहा शिवओम्, दिन जो जिंदगी ।

लाभ कोई न कमाया, और दिन हैं घट गए ॥

(१८५)
पश्चाताप - शग - भैरवी ताल - दादरा

अब रहा घबराय हूँ पछताए मैं, क्यों चला आया जगत में मैं भला ।

जगत में तो सुख किसी को न मिला, श्रम किसी मानव का नाहीं है फला ॥

मुहँ चिड़ाए यह जगत सब ही को तो, उलझनें पैदा करे सब ही को तो ।

है बखशता न किसी मानव को तो, सुख यहां पर आ सभी का है गला ॥

मारता ठोकर सड़क पह जो पड़ा, दे उड़ाए उसको, जो कुछ है अड़ा ।

ले उठा जो कुछ किसी का है धरा, मुख किसी का देखकर मन है जला ॥

जब है देखा चैन से रहता किसे, है नहीं लगता तभी अच्छा उसे ।

कुछ भी कह के, करके चैन उड़ाए है, देख सुख जाता है मनवा कुलबुला ॥

यह जगत उल्जन है इक दूजे लिए, मांगते सब सुख हैं जीवन के लिए ।

पर करें पैदा वह दुख सब के लिए, जगत पीछे लग किसी का न भला ॥

अब चलो शिवओम् अपने घर को, तू छोड़कर जग का झमेला, दर को तू ।

ले बचा कैसे भी अपने सर को तू, यह जगत तो इक बला है इक बला ॥

(१८६)

पश्चाताप - शग - श्रीमपलास ताल - दीपचन्द्री

जल निरन्तर बह रहा नदिया में है, वक्त का धंटा तो बजता ही रहा ।

उम्र तो हर पल है बीती जा रही, काफिला चलता, सो चलता ही रहा ॥

जो है पीछे रह गए, सो रह गए, साथ दे पाए नहीं जो वक्त का ।

वक्त की रफ्तार आगे बढ़ गई, रह गया सो हाथ मलता ही रहा ॥

वक्त आगे बढ़ गया, लौटे नहीं, वक्त मुड़कर भी न पीछे देखता ।

जिसको जाना, साथ आए वक्त के, वक्त तो आगे ही बढ़ता ही रहा ॥

धूमता रहता है चक्र यह वक्त का, न निकल पाए कोई भी चक्र से ।

है धुमाता धूमता ही यह रहा, जगत सारा चक्र इसमें ही रहा ॥

अब तो चाहे निकलना जो चक्र से, अप्रभावित हो के तब तू कर्म कर ।

रह लगा हरदम प्रभु की याद में, टूट जाएं चक्र चलता ही रहा ॥

निकल बाहर आएगा शिवओम् तू, छूट जाएं मुश्किल सब वक्त की ।

तू बसे आनन्द अपने घर रहा, चक्र जो है धूमता, चलता रहा ॥

(१८७)

पश्चाताप - शग- भैरवी ताल-केहरवा

जीवन निकला आहें भरते, मिला मुझे न कुछ भी ।

मैं तो देखत रह गई रस्ता, बना न पाई कुछ कुछ भी ॥

कुछ न मिला तो गम है नाहीं, गम तो है बस ये ही ।

पास में जो था वह भी चौपट, पास रहा न कुछ भी ॥

जीवन विरथा निकल गया है, विरथा पल पल बीता ।

विरथा कर्म सभी हैं कीने, पाया नहीं है कुछ भी ॥

अब तो जीवन बीत गया है, लड़ते मरते खपते ।

अब तो समय नहीं कुछ बाकी, नहीं कमाया कुछ भी ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, करो कृपा अब तुम ही ।

बीत गया है जैसे कैसे, हाथ न आया कुछ भी ॥

(१८८)

पश्चाताप - शग-तिलंग ताल-केहरवा

अब तो मेला हो गया, है माल भी सब बिक गया ।

अब चलो शिवओम् घर को, अब तो जीवन चुक गया ॥

कर लिया जो था कि करना, खा लिया खाना तुम्हें ।

अब बचा बाकी न कुछ भी, दिन का सूरज छुप गया ॥

अब नहीं संबंध तेरा, कुछ रहा इस जगत से है ।

छोड़ कर सारे बखेड़े, काल भी अब रुक गया ॥

अब भी तू आसक्त जग में, सोचता आगे की न ।

मन हटा अब जगत से तू, सब है तेरा खुट गया ॥

सोचना था तूने पहले, वक्त था जब पास में ।

अब तो चलने का समय है, अब तो वेला चुक गया ॥

सोचता शिवओम् रह, चलना कहां, जाना कहां ।

पर नहीं होने का कुछ भी, सांस तो अब रुक गया ॥

(१८९)

अगम्यता - राग यगेश्वी ताल - कव्वाली ढेका

प्रियतम अलख लखूं मैं कैसे, मोहे समझ न आवे ।

माया अन्दर छुप के बैठा, पकड़ में वह न आवे ॥

जितना जतन करूं देखन का, वह छुपता ही जाए ।

डूबत जाए, उलझत जाए, पर वह नज़र न आवे ॥

क्या माया है प्रभु रचाई, ऊपर परदा डाला ।

अपना आप छुपाया ऐसा, सामने नज़र न आवे ॥

कभी नज़ारे कभी संवारे, सुन्दर रूप कभी दर्शाए ।

अपना आप करे न परगट, जग सारा भरमावे ॥

परदे पीछे तार हिलाए, पुतली नाच नचाए ।

करे कराए अजब तमाशे, पर बाहर न आवे ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, तेरा खेल निराला ।

कर्ता होय दिखे न कर्ता, क्या क्या खेल रचावे ॥

(१९०)

अगम्यता - राग - अहिर भैरव ताल - त्रिताल

प्रभु ही सब कुछ करने हारा ।

वो ही देखे सो अनदेखे, बात करावन हारा ॥

वो ही जगत अमोलक रचया, वह इसको खा जावे ।

वो ही कर्म करे बहु भान्ति, वह भुगतावन हारा ॥

वो ही व्यापे रहे अलिसा, वो ही साज सजावे ।

वन पर्वत भूमि जल बनया, वो ही जलने हारा ॥

वही निकाले वही फसावे, उसकी सब है माया ।

जिस पर कृपा करे प्रभु मेरा, उसे निकालन हारा ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, मैं जानूं न कुछ भी ।

तेरी महिमा तू ही जाने, पार करावन हारा ॥

(१९१)

अगम्यता - राग- भूपाली ताल- धुमाली

आदि अन्त ना पाया प्रभुजी, सर्व नियन्ता व्यापे ।

आपे रच्या, आपे पच्या, सार किसे न जापे ॥

ऐसी अबुझ पहेली बनया, जान सके न कोई ।

हर घट रमया, हर दर वसदा, घर घर फिरदा आपे ॥

अन्दर नाद अनेकों आपे, दिखे प्रकाश भी आपे ।

आपे रोवे, आपे हसदा, आपे करे सयापे ॥

आपे अमृत, विष भी आपे, जगत विषय का कर्ता ।

आप बनावे, आप समेटे, आपो आप ही आपे ॥

तुमरे संग मिले जो लोहा, कंचन वह भी होवे

मुझको दान संग का दीजो, सागर पार मैं आपे ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, तेरा संग निराला ।

आप दुखिया करे जगत को, सुखिया करे भी आपे ॥

(१९२)

विविध - राग- दरबारी ताल- केहरवा

पगले समझ लेय मन माहीं ।

माया झूठी बीच पड़ा तू, डूबत जाय रह्या भव माहीं ॥

यह संसार छोड़ है जाना, यहां नहीं नित बैठे रहना ।

उलझ रहा विषयन में काहे, सूझ पड़त कुछ न मन माहीं ॥

गुरु सेवा कर, राम भजन कर, छूटे बंधन भव माया का ।

नहीं तो घूमत ही रह जाए, पार परेगा या जग नाहीं ॥

तीर्थ शिवोम् समझ मन पगले, जाग उमरिया रही विहाई ।

कब चेतेगा, जागेगा कब, बीता समय है आवत नाहीं ॥

(१९३)

आनन्द - शग - बागेश्वी ताल-केहरवा

चलो सखी जमना पार चलें ।

श्याम बजाए रह्यो है बंशी, जाए वहां सुनें ॥

धून वंशी की शीतल मनवा, जाए तपश है मन की ।

छोड़ जगत की माया छाया, काहे यहां जले ॥

यह जग तो दावानल भान्ति, जलत वासना माहीं ।

जलत जलत क्यों जीवन काटे, काहे जलत गलें ॥

श्याम बजाए रास रचाए, सुन्दर मधुर मनोहर ।

सखियां सब मिली नाचें गाएं, हम भी वहीं चलें ॥

जीवन वंशी सुनन को दीना, जग विषयन में लागा ।

अब तो मनवा भया है चेतन, भोगन रहत खलें ॥

तीर्थ शिवोम् सुनो सखी मोरी, श्याम बुलाए रह्यो है ।

परले पार है, सुख घनेरा, सब दुख जात तले ॥

(१९४)

आनन्द - शग- मिश्र खमाज ताल केहरवा

प्रियतम मेरा प्रेम स्वरूपा ।

रूप रूप में रूप धरे वह, फिर भी रहत अरूपा ॥

सबमें है वह सबसे न्यारा, सब रूपों के माहीं ।

सबके अन्तर में परकाशित, न वह रूप करूपा ॥

सर्व नियन्ता सर्व व्यापक, हर घट माहीं बसता ।

हर घट के अनुरूप रूप है, रूप धरे बहु रूपा ॥

प्रियतम प्रभुजी शरण तिहारी, रूप तेरा न जानूं ।

रूप दिखाओ मोहे अपना, देखूं प्रेम स्वरूपा ॥

हूं दीवानी प्रेम तेरे की, रहूं प्रेम में भीगी ।

मैं तो जानूं प्रेम ही तेरा, नाहीं रूप अरूपा ॥

तीर्थ शिवोम् भई मतवारी, प्रियतम मनवा लागे ।

रूप अरूप तुम्ही ही जानो, मो को प्रेम स्वरूपा ॥

(१९५)

प्रभु महिमा - राग- भीमपलास ताल-क्षेत्रवा

जगत बनाया प्रभु ने सारा, फिर भी है, वह त्यागी ।

सब कुछ करे कराये वह ही, फिर भी है वैरागी ॥

जीव जगत में कुछ भी करता, मन अभिमान करे है ।

राग द्रेष हि रहत है डूबा, प्रीत प्रभु न जागी ॥

मनवा मोरा पी संग लागा, पीयहि नाम जपे वह ।

पीय ही जगत समाया दीखे, पीय की तृष्णा जागी ॥

विसरत पल भर पीय है नाहीं, सांस सांस रट लागी ।

मन आनन्द समाता नाहीं, प्रीत अनोखी जागी ॥

तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, रंग अमोलक दीना ।

जग तो दीखत, एक खिलौना, सकल वासना त्यागी ॥

(१९६)

प्रभु कृपा - राग- मारु विहान ताल - दीपचन्दी

आज देयो बधाई, कि पी घर वापिस आया ।

छोड़ शिकवे शिकायत, कि पी ने गले लगाया ॥

मैं थी भोली भाली मूरख, रही जगत में भटकी ।

पी ने किरपा करी है ऐसी, अन्दर दर्स दिखाया ॥

पीर मनाए, माथे रगड़े, सुआंग अनेक बनाए ।

तीरथ जा जा गोते लाए, कुछ भी काम न आया ॥

ऐसा भाग है जागा मेरा, पी ने किरपा कीनी ।

कहीं गई न आई मैं तो, घर बैठे पी पाया ॥

तीर्थ शिवोम् हुई आनन्दित, पीय ने दर्शन दीना ।

पी की सेज घना सुख उपजे, फल किरपा पी पाया ॥

(१९७)

मन - गण - कलावती ताल-केहरवा

चंचलता में दुख घनेरा, चंचल ध्यान न लागे ।

दुख ही दुख पावे है जग में, दुख में ही मन जागे ॥

चंचल बना भटकता फिरता, चंचल थिरता नाहीं ।

चंचल मन है चंचल तनवा, चंचल भागे भागे ॥

चंचल कर्म कमावे कुत्सित, अहित सभी का सोचे ।

चंचल वृत्ति जग में डोलत, बना फिरत वह कागे ॥

हाथ में न कछु आवत उसके, भाव लोभ अपना के ।

बिन कपड़े के कपड़ा सीता, बिना सुई और तागे ॥

तीर्थ शिवोम् हे चंचल मनवा, क्यों भटके जग माहीं ।

नाम भजन चंचलता जाए, सुख है अन्तर जागे ॥

(१९८)

मन - गण - आसावरी ताल-केहरवा

मनवा ! चलते चलते पहुंचेगा ।

निराश तू, तू थक जावे, फिर तू कैसे पहुंचेगा ॥

यह मारग तो कठिन है लम्बा, पथरीला कंटीला है ।

जो घबराए चढ़न चढ़ाई, फिर तू कैसे पहुंचेगा ॥

धीरे धीरे हौले हौले, मन में धीरज रखकर तू ।

नहीं चढ़े तू कठिन चढ़ाई, फिर तू कैसे पहुंचेगा ॥

प्रभु सहारा लेत नहीं तू, अपने बल ही है करता ।

फिर तू कैसे चढ़ पाएगा, फिर तू कैसे पहुंचेगा ॥

तीर्थ शिवोम् हे मेरे मनवा, धीरज राखो हिरदय में ।

धीरज शक्ति नहीं जो मन में, फिर तू कैसे पहुंचेगा ॥

(१९९)
मन - राग - मालकाँस ताल-केहरवा

प्रभु मोहे मन अटकाए रह्यो है ।

आना चाहूं द्वारे तुमरे, पर भरमाए रह्यो है ॥

मद पैदा है मुझमें कीना, समझत नहीं किसी को ।

भूले फिरता, फूले फिरता, मुझे चिढ़ाए रह्यो है ॥

मैं समझावत मन बहुतेरा, न समझे न माने ।

मन उछलावा मोहे सतावत, अपनी गाए रह्यो है ॥

देखत देखत थाके नयनां, अजहूं तुम नहीं आए ।

मैं दुखियारी मन की मारी, मोहे नचाए रह्यो है ॥

तीर्थ शिवोम् सुनो हे प्रियतम, मन से बहुत दुखी हूं ।

अब तो धीरज टूटा जाए, जीवन जाए रह्यो है ॥

(२००)
मन- राग- काणी ताल-केहरवा

मनवा छोड़ दे अपनी चाल ।

बीतत समय रहा है जाय, सिर पर तेरे काल ॥

रहा अर्धर्म ही सूझत तोहे, धर्म की नाहीं चाल ।

जैसे भी मिल जाए तुझको, पीछे लगा तू माल ॥

जो आया सो जाय जग से, आज नहीं तो काल ।

समझेगा तू तब ही मूरख, उतरत तेरी छाल ।

तीर्थ शिवोम् हरि ही तेरा, वही सुधारत चाल ।

मनवा छोड़ दे अपनी चाल ।

(२०१)

मन - यग - अग्ना ताल-फैहरवा

चंचल दृष्टि, चंचल वृत्ति, चंचल है मन मेरा ।

चंचल मेरी सर्व क्रियाएँ, चंचल है तन मेरा ॥

चंचलता ही रूप मेरा है, चंचलता पहचान मेरी ।

चंचलता शरमाए मुझसे, चंचल है मन मेरा ॥

है चंचल मन से दुखिया जीवन, चैन नहीं इक दिन भी ।

चंचलता है नाहीं त्यागत, चंचल है मन मेरा ॥

प्रभु मेरे तू सदा एक रस, मैं क्यों चंचल बनया ।

मैं क्यों भटकत रहा जगत में, चंचल है मन मेरा ॥

चंचलता यह क्योंकर जाए, कैसे समरस होऊँ ।

कैसे मनवा थिरता पाए, चंचल है मन मेरा ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, मारगा सूज्जत नाहीं ।

किरपा तुमरी एक सहारा, चंचल है मन मेरा ॥

(२०२)

मन- यग -तिलंग ताल - ऋपक

जब जीव जाता है यहां से, छोड़ जाता सब यहीं ।

साथ लेता कुछ नहीं है, देह भी रहता यहीं ॥

जब तलक रहता है जिन्दा, भागता फिरता है वह ।

यह है करना, वह है रखना, आंख मूदे सब यहीं ॥

कितना कमाओ जगत में, मिलती तो रोटी चार है ।

फिर राम को भूले हैं क्यों, है तन कहीं और मन कहीं ॥

अच्छा बुरा सोचे न कुछ, विषयों के पीछे भागता ।

हैं विषय न साथ जाते, छूट जाता सब यहीं ॥

राम की सेवा में लग, और नाम जप भगवान का ।

सुख का यह ही रास्ता, बाकी तो सब रहता यहीं ॥

शिवओम् विनय है प्रभु, चरणों में मन को मोड़ दे ।

तेरी ही सेवा में रहूँ, हरदम लगे मन भी वहीं ॥

(२०३)

माया- यग- देस ताल - दादरा

यह मैदान फैला, जहाँ तक नज़र है, है छाई यह हरियाली चारों तरफ है।

विजलियाँ हैं चमकें कि हर ओर ऐसे, कि बिखरें हो मोती ही चारों तरफ हैं ॥

नज़र दूर आती है ऊंची अटरियाँ, खड़ी ताने सीना वह आकाश में है।

अम्बर ढका बादलों से है ऐसा, यह फैलाई चादर कि जो हर तरफ है ॥

यह सुंदर नज़ारा जो मन मोहता है, कि खिंच खिंच के जाता इसी की तरफ है।

प्रभु की ही कुदरत कि जो यह है फैली, बखेरा है सौंदर्य चारों तरफ है ॥

कहें इसको कुदरत, कि माया प्रभु की, जो दिखती तो सुंदर मगर है नहीं हैं।

जहाँ कुछ नहीं हो, वहाँ कुछ दिखा दे, यही खेल माया का चारों तरफ है ॥

उलझ जीव जाता इसी खेल में है, पड़ा धब्बे खाता इसी ठेल में है।

नहीं निकल पाता इसी जेल से है, कि फैली यह माया ही चारों तरफ है ॥

है शिवओम् करता विनय यह प्रभु से, समेटो यह माया जो अपनी रचाई।

पड़े जीव बन्धन में, चक्र में इसके, दुखी जीव इससे ही चारों तरफ है ॥

(२०४)

माया – यग- पहाड़ी ताल - दादरा

पहाड़ों की रंगत निराली सुहानी है, है शोभा नहीं जाए जाकी बखानी।

तरंगित यह नदियाँ बनी बीच में हैं, कि आखों में बहता हो जैसे यह पानी ॥

है छाई यह हरियाली चारों तरफ है, बिछा दी हो चादर प्रभु हर तरफ है।

यह कैसी मनोहर यह कैसी छठा है, नहीं देखी अब तक नहीं हमने जानी ॥

है आता प्रभु याद, देखे नजारा, उसी ने बनाया उसी ने संवारा।

कहें क्या उसे जो नहीं याद करता, न देखे न समझे, है बनता अजानी ॥

प्रकट रूप ईश्वर का जग है यह सारा, यदि जीव ने है इसे न बिगाड़ा।

मगर जीव कहता इसे उन्नति है, जो उसको पता न, नहीं उसने जानी ॥

है आतम ही सुन्दर, है आतम ही प्यारा, जगत रूप परगट उसका है सारा।

जगत देख आतम नहीं याद आता, नहीं उसने देखी, नहीं उसने जानी ॥

है शिवओम् जग इक अदा है प्रभु की, अदा है कि इच्छा है जाने प्रभु की।

मैं तो कर ही सकता हूं गुणगान उसका, जगत जानता हूं प्रभु की निशानी ॥

(२०५)

माया - शम-पीतू ताल-केहवा

प्रभु देखत जगत तमाशा ।

माया रच कर अपनी अनुपम, सबको करत हताशा ॥

नाम दयामय जग में उसका, ता में कृपा न कोई ।

जैसा कर्म करेगा प्राणी, वैसी करत है आशा ॥

अच्छा कर्म यदि वह करता, उत्तम गति है पाता ।

मेवा दान मिठाई देवे, पावे वही बताशा ॥

माया का यह खेल रचाया, देखें प्रभु निरन्तर ।

ताका मन हो नहीं प्रभावित, आशा नहीं निराशा ॥

क्यों माया है प्रभु रचाई, करें दुखी जीवों को ।

अपनी-अपनी करनी का फल, मन में सुख की आशा ॥

तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, बन्धन माया टूटे ।

हो उपराम जगत भोगों से, छूटे जग की आशा ॥

(२०६)

माया - शग-शगेश्वी ताल-केहवा

जब तक जिये सदा सुख भोगा, मर के चैन न पाया।

कैसा खेल रचाया प्रभुजी, जीव रहा भरमाया ॥

कैसी अजब बनाई कुदरत, समझ किसे न आवे ।

समझ न जावे इसको जो भी, वह उलटे भरमाया ॥

पुस्तक पढ़े, कमावे जोगा, तीरथ जाये नहावे ।

अन्तर का मल दूर किए बिन, जान नहीं कुछ पाया ॥

तेरी कृपा न होवे जब तक, अन्तर मैल न जावे ।

जिस पर कृपा करे तू प्रियतम, अन्त तेरा उस पाया ॥

जीव बेचारा है अंजाना, फिरता ध्रम में डोले ।

पुरुषारथ की डोर पकड़कर, घर न तेरे आया ॥

तीर्थ शिवोम् कृपा प्रभु मोरे, मैं पापी अंजाना ।

अपनी मेहर करो किरपालु, द्वारे तुमरे आया ॥

(२०७)

माया- राग- भैरव ताल ध्याती

सूरज उगता धूप निकलती, शाम को सब छुप जाता ।

ऐसे जग का सपन सुहाना, दिखता और छुप जाता ॥

रात अन्धेरी होत भयानक, ता में सभी समाए ।

हुआ उजाला, भग तम जाए, ता में सब दिख जाता ॥

काल चक्र का खेल है सारा, उपजे कुछ मुरझाए ।

जग परिवर्तित होता रहता, जीव उलझ है जाता ॥

जैसे मन में भाव प्रकट हो, वैसे जग है दिखता ।

अच्छा बुरा भाव सब अपना, जग वैसा बन जाता ॥

अपना मन जो निर्मल होवे, दीखे चेतन सगला ।

नाम रूप जड़ गौण होत है, दूर है बंधन जाता ॥

तीर्थ शिवोम् यह माया नगरी, कौतुक करे कराए ।

निर्मल मनवा, माया टूटे, बंधन मुक्त कहाता ॥

(२०८)

माया -राग - कोमल रिषभ आसावरी ताल -केहरवा

सब जग सोय रह्या माया में ।

आतम ज्ञान न चीहने कोई, भटक रह्या काया में ॥

यह जग सपने लटक रह्या है, देखे और भरभावे ।

सपना तो है केवल सपना, उलझा वह छाया में ॥

काया छाया मन भरमाया, जागन किसे न देवे ।

या सोये या सपने देखे बना मस्त माया में ॥

सदगुरु देव कृपा जो होवे, तो ही सोना टूटे ।

छिन में आतम ज्ञान प्रकाशित, नहीं झूबत माया में ॥

तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुदेवा, सोना मेरा छूटे ।

सोय सोय कर उमर गुजारी, झूब रहा माया में ॥

(२०९)

कीर्तन - राग - भूपाली ताल-केहवा

सदगुरु देवा राम हरे, जय सदगुरु देवा कृष्ण हरे ।

नैया हमरी पार करो प्रभु, सदगुरु देवा राम हरे ॥

हम अज्ञानी बालक तेरे, जग के कष्ट उठाते हैं ।

शरण तुम्हारी आए प्रभुजी, सदगुरु देवा राम हरे ॥

कुछ भी सूझ न पाता हमको, पूछें किसे कहां जाएं ।

आए द्वारे तुमरे प्रभुजी, सदगुरु देवा राम हरे ॥

जप तप संयम सब ही कीना, मन की थिरता न पाई ।

मन चंचल दुख देत है भारी, सदगुरु देवा राम हरे ॥

तुम बिन कोई ठौर नहीं है, जहां पुकारें जाएं हम ।

एक तुम्हारा दर ही, दर है, सदगुरु देवा राम हरे ॥

तीर्थ शिवोम् शरण में आया, नत मस्तक कर जोर प्रभु ।

चरण शरण किरिपा बरसा दो, सदगुरु देवा राम हरे ॥

(२१०)

कीर्तन - राग - देस ताल -केहवा

नाम जपो रे नाम जपो रे, नाम जपो रे भाई ।

नाम जपन ही जीवन तेरा, नाम जपन दुख जाई ॥

नाम जपे मन निर्मल तेरा, माया ममता भागे ।

नाम जपन से जग निस्तारा. नाम जपन मन लाई ॥

उलटें हो सब सीधे जग में, संकट सब ही जावें ।

नाम जपन प्रतिकूल न कोई, प्रकट राम रघुराई ॥

जो सुख चाहे रहे निरन्तर, राम जपन ही मारग ।

दुविधा जाए, शंका नासे, मन थिरता हुइ जाई ॥

राम जपो रे, राम जपो रे, काहे राम जपे न ।

राम जपन सगले दुख काटे, राम जपन वडियाई ॥

तीर्थ शिवोम् राम जप मनवा, राम ही एक सहारा ।

राम जपन तम नाशे जग का, राम ही होत सहाई ॥

(२११)

कीर्तन - यग- भीमपलास ताल-धुमारी

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारी, हे नाथ नारायण वासुदेवा ।

शरण में आए हैं हम तुम्हारी, हे नाथ नारायण वासुदेवा ॥

है डूबी जाती भंवर में नैया, नहीं भी कोई बचाने वाला ।

विपद में हम हैं अति ही भारी, हे नाथ नारायण वासुदेवा ॥

तुम्हारे बिन न कोई रखैया, वस तुम ही हो एक खैया ।

संभालो पतवार है आ हमारी, हे नाथ नारायण वासुदेवा ॥

है डूबी जाती इसे बचाओ, कि विरद अपना तुम ही निभाओ ।

तुम्हारे दर पर हैं हम दुखारी, हे नाथ नारायण वासुदेवा ॥

करो वेग हमको उबारने का, करो उपाय उतारने का ।

नहीं तो डूबे हैं हम मंझारी, हे नाथ नारायण वासुदेवा ॥

पड़ा शिवोम् अब तुम्हारी चरणीं, उबारो मुझको है ले के शरणीं ।

तुम्हारे आगे विनय हमारी, हे नाथ नारायण वासुदेवा ॥

(२१२)

कीर्तन - यग- दरबारी ताल - भजनी ठेका

हम आए तेरे द्वारे, प्रभु राखो लाज हमारी।

हम पड़े हैं शरण तुम्हारी, बनवारी कृष्ण मुरारी ॥

दीन हीन हम बालक तेरे, तुमको रहे पुकार दुखी हो ।

पड़ी विपद अति भारी, बनवारी कृष्ण मुरारी ॥

जगत बड़ा ही दुखदायी है, कष्ट अनेकों है वह देता ।

वह बना है अत्याचारी, बनवारी कृष्ण मुरारी ॥

कैसे छूटें इस माया से, मारग कोई सूझ न पाता ।

प्रभु सुन लो टेर हमारी, बनवारी कृष्ण मुरारी ॥

कोई न तेरे बिन है अपना कष्ट हरे जो कुछ भी हमरा ।

दीनों की कर रखवारी, बनवारी कृष्ण मुरारी ॥

तीर्थ शिवोम् हमारे प्रभुजी, दुखी जीव हैं तुम्हें पुकारत ।

कर नैया पार हमारी, बनवारी कृष्ण मुरारी ॥

(२१३)

कीर्तन - राग-पीलू ताल - केहरवा

तेरे मिलन की आशा लेकर आया हूं मैं तेरे धाम ।

श्री राम जय राम जय जय राम, श्री राम जय राम जय जय राम ॥

मन तेरे चरणों में लगा कर, नित सिमरू मैं तेरा नाम ।

श्री राम राम जय जय राम, श्री राम जय राम जय जय राम ॥

भाव यही रख मन में करता, सेवा सब तेरा ही काम ।

श्री राम जय राम जय जय राम, श्री राम जय राम जय जय राम ॥

विमुख कभी न तुमसे होऊं, चाहे जाये चला यह चाम ।

श्री राम जय राम जय जय राम, श्री राम जय राम जय जय राम ॥

भोग वासना छोड़ जगत की, धारण करूं तोरा गुण गान ।

श्री राम जय राम जय जय राम, श्री राम जय राम जय जय राम ॥

तीर्थ शिवोम् दर्श मोहे दीजो, नहीं चाहिए कोई दाम ।

श्री राम जय राम जय जय राम, श्री राम जय राम जय जय राम ॥

(२१४)

कीर्तन - राग - चालुकेशी ताल - केहरवा

मन का मन्दिर रौशन कर ले, नाम ले सीता राम का ।

मन तेरा निर्मल तब होगा, नाम ले सीता राम का ॥

मानुष देह राम ने दीनी, उसको ही अर्पण कर दे ।

तृष्णा मुक्त बने मन तेरा, नाम ले सीता राम का ॥

राम तेरा ही देवन हारा, वह ही पालन हारा भी ।

राम नाम तू सिमर ले मनवा, नाम ले सीता राम का ॥

मैं समझाऊं तू समझे न, जनम अमोलक है तेरा ।

भोगों में न व्यथ गंवा तू, नाम ले सीता राम का ॥

तीर्थ शिवोम् भजन तू कर ले, सीता राम सहाय करें ।

सीता राम ही पार उतारे, नाम ले सीता राम का ॥

(२१५)

कीर्तन-राग- बाणेश्वी ताल - दादग

हे गोविन्द हे गोपाल, आया शरण राखो लाज ।

आया हूं मैं तेरे द्वार, काट डालो मेरा जाल ॥

करत हूं मैं तेरा गान, छोड़ जग के सारे काम ।

है जगत में नाहिं कोई, बहुत बुरो मेरो हाल ॥

कर्म चक्र माहिं पड़ा, विषयों ने मोहे धेरा ।

मारग न सूझे कोई, काट देयो आय काल ॥

मन में हीन मैं हूं हुआ, भोगों माहिं लीन हुआ ।

तन से भी मलीन हुआ, बिगड़ गई मोरी चाल ॥

अब तो मैं हूं दुखी भया, जगत प्रपञ्च अति ही भारी ।

तूने मन मोह लीनो, चाहिए न मोहे माल ॥

तीर्थ शिवोम् करत विनय, मैं हूं तेरी शरण पड़ा ।

अब की बार राख लेऊ, टेर सुनो नन्द लाल ॥

(२१६)

कीर्तन - राग - सोरठ ताल- केहरवा

आओ दुखिया की टेर सुनो, बांके नन्दलाला बनवारी ।

मैं खड़ी पुकारत तुम्हें रही, हे श्याम मुरारी गिरधारी ॥

आओ आओ अब आ जाओ, पहले ही देर भई भारी ।

मुझ दुखिया पर अब तरस करो, हे श्याम मुरारी गिरधारी ॥

मैं तुम्हें निहारत रही प्रभु, जग माहिं मैं तो उलझ गई ।

आओ आओ रक्षा कीजो, हे श्याम मुरारी गिरधारी ॥

दिन रात निकलता जाए है, पर मैं देखूं न कहीं तुम्हें ।

आओ और दर्श दिखा जाओ, हे श्याम मुरारी गिरधारी ॥

अवगुण मेरे न देखो तुम, मैं तो अवगुण से भरी हुई ।

अपनी विरद संभाल प्रभु, हे श्याम मुरारी गिरधारी ॥

शिवओम् पुकारत मैं हारी, कब की हूं रस्ता देख रही ।

बस तेरा एक सहारा है, हे श्याम मुरारी गिरधारी ॥

(२१७)

कीर्तन - राग- पटदीप ताल- केहरवा

राम सिमर ले राम सिमर ले, राम सिमर ले दुखी मना ।

सब दुख तेरे कट जाएंगे, पावेगा आनन्द घना ॥

तेरे दुख का कारण यह है, राम भजन है करत नहीं ।

राम ही दुख का मेटन हारा, राम सिमर ले दुखी मना ॥

राम अनन्त सुखों का सागर, राम ही बेड़ा पार करे ।

राम भजन से सुखी तू हो जा, राम सिमर ले दुखी मना ॥

राम जीव के अन्दर बैठा, राम सकल कृपा करता ।

घट घट वासी है दुख-नासी, राम सिमर ले दुखी मना ॥

जो तू पूछे सुख का मारग, राम की सेवा करले तू ।

राम तेरा उद्धार करेगा, राम सिमर ले दुखी मना ॥

तीर्थ शिवोम् राम भज प्राणी, राम तेरा संगी साथी ।

राम नाम में मन को लगाए, राम सिमर ले दुखी मना ॥

(२१८)

कीर्तन - राग बिलावत ताल - केहरवा

भज ले भज ले सीता राम, हो जावे तू पूरण काम ।

बन जाएगा तू निष्काम, मंगल मूरति सुंदर श्याम ॥

मन में प्रेम हो परगट तेरे, राग द्वेष न रहे तुझे ।

पल पल राम सिमर ले प्यारे, मंगल मूरति सुंदर श्याम ॥

मन में तेरे कर्म हैं संचित, सुखी दुखी तुझको करते ।

कट जावेंगे पाप सभी ही, मंगल मूरति सुंदर श्याम ॥

न कोई तेरा मित्र रहेगा, और रहे न शत्रु ही ।

सबको एक समान तू समझे, मंगल मूरति सुंदर श्याम ॥

जगत नहीं भरमावे तुझको, पाप नहीं तुझको व्यापे ।

पाप पुण्य से न्यारा हो जा, मंगल मूरति सुंदर श्याम ॥

तीर्थ शिवोम् राम भज सीता, मन तेरा निर्मल होवे ।

हरदम सुखी रहे तू जग में, मंगल मूरति सुंदर श्याम ॥

